<u>मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध</u>

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

दिपमा देवानंद कोरगांवकर

अनुक्रमांक: 22P0140014

PR Number: 201809266

मार्गदर्शक

दीपक वरक

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: दीपक प्रभाकर वरक Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, **"मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध"**is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Mr. Deepak Prabhakar Varak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Dipama Devanand Korgaonkar

22P0140014

Date: 16 April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the internship report **"मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध"** is a bonafide work carried out by Ms. Dipama Devanand Korgaonkar under my mentorship in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Masters in the Discipline Master of Arts in Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Deepak Prabhakar Varak

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

Date:

Place: Goa University

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Internship report entitled, “मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध” is based on the results of investigations carried out by me in the Master of Arts in Hindi at the ShenoiGoembab Languages and literature, Goa University, under the mentorship of Mr. Deepak PrabhakarVarak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the internship report/work.

I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Dipama Devanand Korgaonkar

22P0140014

Date: 16 April 2024

Place: Goa University

INTERNSHIP CERTIFICATE

This is to sertify that Ms. Dipama Devanand Korgaonkar, Student of the Shenai Goembab Languages and Iterature, Goa University, undergoing Mader of Arts in Hindi has successfully completed Internship at Goa University Library.

She actively participated in the activities during the period of internship and learned the skills needed for various activities.

Dr. Sandesh Dessai

Librarian

Goa University Library

Date: 16 April 2024

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	i - v
	अनुक्रम	vi - vii
	कृतज्ञता, भूमिका	viii - x
1	समकालीन कविता और मंगलेश डबराल 1.1 समकालीन कविता : अर्थ एवं परिभाषा 1.2 समकालीन परिवेश 1.2.1 राजनीतिक परिवेश 1.2.2 सामाजिक परिवेश 1.2.3 सांस्कृतिक परिवेश 1.2.4 आर्थिक परिवेश 1.2.5 साहित्यिक परिवेश 1.3 मंगलेश डबराल और समकालीन कविता	Page No. 11 to 51
2	युगबोध 2.1 युगबोध का अर्थ 2.2 युगबोध की परिभाषा 2.3 युगबोध के विविध आयाम 2.3.1 सामाजिक युगबोध 2.3.2 राजनीतिक युगबोध 2.3.3 आर्थिक युगबोध 2.3.4 सांस्कृतिकयुगबोध 2.3.5 धार्मिक युगबोध	Page No. 52 to 61
3	मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध 3.1सामाजिक बोध 3.2 राजनीतिक बोध 3.3 आर्थिक बोध	Page No. 62 to 98

	3.4 पर्यावरणीय बोध	
4	भाषा- शैली 4.1 भाषा 4.2 शब्दचयन 4.3बिम्ब योजना 4.4छंदमुक्त 4.5 लोकगीतों का प्रभाव 4.6मुहावरों का प्रयोग 4.7सूक्तियां 4.8 नयापन 4.9प्रतीकात्मक शैली 4.10गघात्मक शैली उपसंहार	Page No. 99 to 113
	संदर्भ	Page No. 114 to 115

ं

भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। समाज में जो कुछ घटित होता है उसे एक लेखक या कवि अपने लेखन कौशल्य के द्वारा पाठकों के सामने लाने की कोशिश करते है। कविता साहित्य की सर्वाधिक संवेदनशील विधा है। समकालीन कविता अपने समय, समाज और देश से जुड़ा है। अन्याय, शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि का सही चित्रण कर समय की सच्चाई पाठकों को दिखाती है।

हर एक कवि अपने समय का समकालीन होता है। सामाजिक, राजनीतिक भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ समकालीन कविता में आवाज़ उठाई है। उन्होंने अपने कविताओं के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक आदि विषमताओं को सामान्य जनता के सामने प्रस्तुत किया है।

समकालीन कवियों में मंगलेश डबराल प्रचलित कवि है। उन्होंने समकालीन हिंदी कविता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मंगलेश डबराल के साहित्य में वर्तमान समय का भयानक यथार्थ तथा महानगरीय जीवन की तमाम समस्याएं और संगतिया उनकी कविता में स्थान पाती है। समकालीन जीवन में बढ़ती अमानवीयता, बेरुखी, तानाशाही, अन्याय को अपनी कविता का विषय बनाया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध को दर्शाने का प्रयास है। इस अध्ययन को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय: 'समकालीन कविता और मंगलेश डबराल'

यह अध्याय 'समकालीन कविता और मंगलेश डबराल' के संदर्भ में है। इस में समकालीन कविता अर्थ एवं परिभाषा पर विवेचन किया गया है। समकालीन परिवेश जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक परिवेश पर विचार किया गया है। और इसके साथ मंगलेश डबराल और उनके काव्य में समकालीनता पर अध्ययन किया गया है।

व्दितीय अध्याय: 'युगबोध'

इस अध्याय में युगबोध का अर्थ एवं परिभाषा विवेचन किया गया है। साथ ही युगबोध के विविध आयाम जैसे- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक युगबोध का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय: 'मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध'

यह अध्याय 'मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध' के बारे में है। इसमें मंगलेश डबराल के काव्य साहित्य में से राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय बोध पर अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय: 'मंगलेश डबराल के काव्य की भाषा शैली'

मंगलेश डबराल के काव्य की भाषा शैली पर बात की गयी है। इसके अंतर्गत बिम्ब योजना, छंदमुक्त, लोकगीतों का प्रभाव, मुहावरों का प्रयोग, सूक्तियां, प्रतीकों का प्रयोग, गद्यात्मक शैली, नयापन पर अध्ययन किया गया है।

उपसंहार के अंतर्गत 'मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध' को दृष्टि में रखकर निष्कर्ष की प्रस्तुति की गई है।

अंत में संदर्भ-ग्रंथ सूची दी गई है, जिसमें आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ आदि का उल्लेख किया गया है।

कृतज्ञता

योग्य नेतृत्व एवं अगणित सहायता मिलने से किसी भी कार्य को सफल बनाया जा सकता है। वैसे ही मेरे इस छोटे से प्रायास को सफल बनाने में जिन्होंने भी मेरी मदद की है, अपना बहुमूल्य योगदान दिया है उन सभी शुभचिंतकों का मैं दिल से आदरपूर्वक आभार मानती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध निर्देशक दीपक वरक जी के मार्गदर्शन में हुआ है। विषय चयन से लेकर लघु शोध प्रबंध पूरी तरह सफल होने तक समय-समय पर मार्गदर्शन करने के लिए और अपना बहुमूल्य वक्त देने के लिए मैं दीपक वरक जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। साथ ही मैं गोवा विश्वविद्यालय हिंदी अध्ययन शाखा के अन्य सभी अध्यापकों को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ। जिन्होंने मुझे प्रोत्साहन दिया जिससे यह लघु शोध प्रबंध और अच्छी तरह से सफल हो पाया है।

गोवा विश्वविद्यालय ग्रंथालय तथा कृष्णदास शामा ग्रंथालय का भी समय – समय पर सहयोग मिला है। वहां के कर्मचारियों ने आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध करने में मेरी सहायता की है। इस लिए मैं ग्रंथालयों का और वहां के कर्मचारियों का धन्यवाद करती हूँ। इसी के साथ राधाकृष्ण प्रकाशन और वहां के कर्मचारि ध्यानेंद्र के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। जिन्होंने पोस्ट के माध्यम से पुस्तकें पाने में मेरी सहायता की है।

इसके अतिरिक्त मैं अपने माता- पिता, विद्यार्थी मित्रों, दोस्तों और मेरे सभी शुभचिंतकों का तहे दिल से आभार मानती हूँ। जिन्होंने यह लघु शोध प्रबंध को सफल बनाने में मेरी सहायता की है और समय-समय पर हौसला बढ़ाया है। इसके लिए मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

प्रथम अध्याय

समकालीन कविता और मंगलेश डबराल

1. समकालीन कविता और मंगलेश डबराल

1.1 समकालीन कविता : अर्थ एवं परिभाषा

नई कविता की विविध आन्दोलनों में एक महत्वपूर्ण काव्य आंदोलन 'समकालीन कविता' है। इस समय को अनेक नाम से जाना जाता है। जैसे कि, साठोत्तरी कविता, समसामयिक कविता, तत्कालीन कविता लेकिन साठोत्तरी कविता इसका प्रसिद्ध नाम है। 'समकालीन' अपने समय से सम्बन्ध बातों को सूचित करता है।

1.1.1 अर्थ

समकालीन का अर्थ है 'एक समय में रहने या होने वाला'। समकालीन शब्द के लिए समानार्थी अंग्रेजी शब्द कानटेम्परेरी और समकालीनता के लिए कानटेम्परेरीनेस है। हर एक कवि अपने समय का समकालीन होता है। कवि अपने समय के परिस्थितियों को अपने कविता के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत करता है।

समकालीन कविता संघर्षमयी कविता है जो आज की परिस्थितियों का सीधे साक्षात्कार करती है इसलिए समय-समय की कविताओं को समकालीन कविता कहा जा सकता है। समकालीनता अतीत के अनुभव के साथ, वर्तमान स्थिती से मेल कराती है। जहां तक कविता में समकालीनता का सवाल है, कविता का जन्म ही समकालीनता के तीव्र आशय से हुआ है।वस्तुतः समकालीनता का मतलब यह है कि अपने समय के वास्तविक जीवन से निकट एवं महत्वपूर्ण समस्याओं और देश-काल स्थितियों को चित्रित करना।

1.1.2 परिभाषा

समकालीन कविता के बारे में विद्वानों के अनेक मत रहे है वह निम्नलिखित हैं-

डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय के अनुसार- "समकालीन कविता में जो हो रहा है 'बिकमिंग' का सीधा खुलासा है। इसे पढ़कर, वर्तमानकाल का बोध हो सकता है, क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, तड़पते, गरजते तथा ठोकर खाते, सोचते वास्तविक आदमी का परिदृश्य है। आज की कविता में काल अपने गत्यात्मक रूप में नहीं, ठहरे हुए 'क्षण' या 'क्षणांश' के रूप में नहीं। यह 'कालक्षण' की कविता नहीं, काल प्रवाह, आघात तथा विस्फोट की कविता है।"[1]

उनका ऐसा मानना है कि, समकालीन कविता सीधे परिस्थितियों का खुलासा करती है। समकालीन कविताएं पढ़ने के बाद सभी चीजें वर्तमान स्थितियों की ही नज़र आती है। क्योंकि समय बदल सकता है लेकिन परिस्थितियों नहीं।

ब्रजमोहन शर्मा के अनुसार- "कविता न कोरा दर्शन है और न केवल मात्र आवेगजन्य विद्रोह, बल्कि यह समकालीन स्थितियों का कलात्मक आलेखन है। उनकी जीवंतता, वैचारिक बोध, प्रतिबद्धता- अतिप्रतिबद्धता, वर्ग विषमता, विसंगतियों- विद्रूपताओं के कलात्मक प्रतिफलन में है। जिस कविता में समकालीन जीवन की गंध हो, शोषित, प्रताड़ितों की व्यथा अन्तर्निहित हो और शाश्वत मूल्यों की सांकेतिक अभिव्यक्ति हो, वहीं शाश्वत एवं चिरन्तन कृति होती है।"[2]

उनका मानना है कि, समकालीन स्थितियां सभी परिस्थितियों से परिचित रहना सिखाती है। जिन कविताओं में समकालीनता होती है वह कृतियां निरंतर ज़िंदा रहती है।

धूमिल के अनुसार- "छायावाद के कवि शब्दों को तोलकर रखते थे, नयी कविता के कवि शब्दों को गोलकर रखते थे, सन् साठ के बाद के कवि शब्दों को खोलकर रखते हैं।"[3]

उनके अनुसार, साठोत्तरी समय के कवि शब्दों के साथ खेलकर सभी परिस्थितियों को खोलकर सामने रखते हैं।

लीलाधर जगूड़ी के अनुसार- "समकालीन कविता का मिजाज वर्णन का ज्यादा और बोलचाल का कम। जहां है वहां बोलचाल काफी प्रभावशाली और अपनी एक नयी लय रचना हुआ, सुनायी व दिखाई पड़ती है। अब कविता केवल सुनाए जाने पर निर्भर नहीं है, वह पड़ी और देखी भी जाती है। समकालीन कविता इस समय विश्व की श्रेष्ठ कविताओं के मुकाबले रखी जा सकती है।"[4]

वे कहते हैं की, कविताओं का समय बदल रहा है। अब कविताएं सुनी जा सकती है, पड़ी जा सकती है और देखी भी जा सकती है। कविता वर्णनात्मक रूप ले रही है। समकालीन कविता विश्व की श्रेष्ठ कविताओं से कम नहीं है।

अशोक बाजपेई के अनुसार- "समकालीन कविता में कवि अधूरे सच में अपना सच मिलता है। समकालीन कविता सारी सच्चाई को अपनी भूगोल में समेटने का प्रयत्न करती है। समकालीन कविता की भाषा बोलचाल की है अर्थात गद्य की भाषा है। यहां बोझिलता काम है। समकालीन कविता में समय होता है। समकालीन कविता का काम संघर्ष को प्रकट करता है। आनन्द को नहीं। कविता राग का क्षेत्र है साथ ही साथ स्मृति का क्षेत्र है।"[5]

वह कहते हैं कि, समकालीन कविता में समय होता है। उन में समय-समय की बात की जाती है। आनंद को ही नहीं बल्कि जीवन के संघर्ष को प्रकट करने का कार्य समकालीन कविता करती है।

सुवास कुमार के अनुसार- "समय के व्यापक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की बहुआयामी समझ का होना, वर्तमान की समस्याओं का सामाजिक रूप से साक्षात्कार करना, व्यापक जनसमुदाय की आशा- आकांक्षा के प्रति दायित्व और प्रतिबद्धता महसूस करना समकालीन बना हैं।"[6]

वह कहते हैं कि, समय की परिस्थितियों को जानना, उनको समझाना और उनके प्रति अपना योगदान देना समकालीन बनना हैं।

विष्णुकांत शास्त्रीजी के अनुसार- "काव्य में अर्थ, नाथ, सौन्दर्य होता है, इसके साथ-साथ समकालीन कविता में अनुभवों के साथ तटस्थता की जरूरी है अपनी अनुभव की बातें यथासंभव कवि दूसरों तक पहुंचाने का काम समकालीन कविता में करता है। यह उसका धर्म है। इस तरह कवि समकालीन कविता के साथ समाज में जीवंत संबंध रख लेता है।"[7]

उनका कहना है कि, जब एक कवि सच्ची घटनाओं को प्रस्तुत करता है, तब वह अच्छी तरह से समाज को समाज की स्थितियां दिखा सकता है। और यही उनका धर्म होना चाहिए।

डॉ. रामकली सर्राफ के अनुसार- "समकालीन कविता का अर्थ जीवन की बाह्य परिस्थितियों के बोध तक सीमित न होकर उस यथार्थ की पहचान करना है, जिसके सारे अन्तर्विरोधों और व्दन्द्वों के बीच से गुजरता हुआ मनुष्य अपने विकास के पथ पर अग्रसर होता है।"[8]

वह कहते हैं कि, समकालीन कविताएं मनुष्य को विचार करने पर विवश कर देती है। जिससे वह अपनी जिंदगी में सुधार ला सकते हैं।

डॉ. अरविंदाक्षन के अनुसार- "समकालीन कविता यथार्थ में गोता लगती है। जब हमारे जीवन का यथार्थ पूरी तरह से प्रकट न हो और वह अप्रकट यथार्थों में अंदर ही अंदर रमता प्रतीत हो, तो काल की गतिहीनता का आभास मिलता है। जिसको समकालीन कविता अपना मुख्य केन्द्र बना देती है।"[9]

उनका कहना है कि, समकालीन कविता यथार्थ को प्रकट करती है और यथार्थ को ही मुख्य केंद्र बनाती है।

रामकमल रायजी के अनुसार- "समकालीन कविता में गहराई है, मनन के साथ-साथ अनुभव भी है। समकालीन कविता में निरंतर ताजगी और नयापन उभरकर आया है।"[10]

यह कहते हैं कि, समकालीन कविता में गहराई होती है। अनुभव की बातें होती है। और इस तरह समकालीन कविता में हमेशा ताजगी की और नयापन रहता है।

कुमार कृष्ण के अनुसार- "साठोत्तरी कविता में समाज की मृत मान्यताओं, टूटटी हुई परंपराओं और सामाजिक, राजनैतिक, भ्रष्टाचार से क्षुब्ध युवा मानस की अभिव्यक्ति है। उसे आज की बिखरी हुई दोहरी जिंदगी और बदलते मानवीय संबंधों की अभिव्यक्ति कहा जाता है।"[11]

वे कहते हैं कि, साठोत्तरी कविताओं में जिंदगी में जो बदलाव होते हैं, उनको व्यक्त किया जाता है।

रोहिताश्व के अनुसार- "समकालीन कविता वैविध्यमय जीवन और भाव समुच्चय की कविता है।"[12]

वह कहते हैं कि,समकालीन कविता में जीवन के हर पहलू को बताया जाता है और उनमें भाव की प्रधानता होती है।

निष्कर्षत: नई कविता की विविध आंदोलनों में महत्वपूर्ण काव्य आंदोलन समकालीन कविता है। प्रत्येक युग का साहित्य समकालीन कहा गया जाता है। लेकिन 60 के बाद जोकाव्य विकसित हुआ उसके लिए यह नाम दिया गया है।कई विद्वानों ने समकालीन कविता को परिभाषित करने का प्रयास किया है। समकालीन कविता अपने समय की धड़कनों को पहचानती है।समकालीन परिस्थितियों से अच्छी तरह से परिचित है। वह अपने समय के प्रति, समाज के प्रति प्रतिबद्ध रही है। इस प्रकार समकालीन कविता का क्षेत्र समृद्ध तथा व्यापक रहा है।

1.2 समकालीन परिवेश: सामाजिक परिवेश

समकालीन कविता तत्कालीन परिवेश के ख़िलाफ़ कवि की प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति है। कवियों ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिकविसंगतियों और विद्रुपताओं के प्रति कविता को जन-मानस का औजार बनाया है। आक्रोश से अवरोध तक हिन्दी कविता की विकास यात्रा समकालीनता के पड़ाव का सशक्त माध्यम है। समकालीन कविता सही मायनों में परिवेश से उपजी प्रतिपक्ष की आवाज़ होती है।

1.2.1सामाजिक परिवेश

1.2.1.1सामाजिक अन्तर्विरोधों की अनुभूति

समकालीन हिन्दी कविता में सामाजिक अन्तर्विरोधों की अनुभूति का प्रस्तुतीकरण बड़ा ही मार्मिक है।सामाजिक अन्तर्विरोधों कीधार्मिक आस्थाओं एवं अन्धविश्वासों का खण्डन, धर्म एवं सम्प्रदाय की घृणित अभिव्यक्ति, मानवताहीन समाज की कटु निन्दा, अभिजात्य वर्ग के प्रति तीव्र आक्रोश, समाजवादी मानवता की खोज, नारी जाति के प्रति संवेदनात्मक दृष्टिकोण एवं नवयुग में सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा आदि की प्रस्तुति भी विलक्षण है। समकालीन हिन्दी कविता में पूँजीवाद का तीव्र विरोध किया गया है क्योंकि गरीब और गरीब होता गया और धनी और धनवान होता गया है। समाज में निरन्तर वर्गवाद की खाई गहरी और चौड़ी होती गयी हैं। हिन्दी कवियों के सामाजिक विषमताओं, विसंगतियों को अपने काव्य का विषय बनाया तथा उसकी तीव्र एवं कटु शब्दों में प्रस्तुति की है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों को दृष्टिगत रखते हुए कवियों ने अपनी काव्यकी रचना की है जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक अन्तर्विरोधों का उजागर होना सहज ही सम्भव हो सका है।

समाकालीन हिन्दी कवियों ने समाज में शहरीकरण की प्रवृत्ति को भी रेखांकित किया है। रोजी-रोटी की तलाश में बहुत बड़े पैमाने पर लोग गाँवों से पलायन करने लगे तथा नगरों में आकर बसने लगे। प्रदूषित वातावरण, बेरोजगारी, जल की समस्या आदि ने जीवन स्तर को बुरी तरह प्रभावित किया तथा संयुक्त परिवारों को भी बिखरने के लिए बाध्य कर दिया। स्पष्ट है कि समकालीन हिन्दी कवियों ने सामाजिक अन्तर्विरोधों की अनुभूति के अन्तर्गत जीवन में धर्म, जाति, को रेखांकित किया है।

धूमिल, लीलाधर जगूड़ी, रामकरन चौधरी, रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अशोक वाजपेयी, रामदरश मिश्र, राजीव सक्सेना, कैलाश वाजपेयी, विष्णु सक्सेना, आदि ने समकालीन काव्य में सामाजिक अन्तर्विरोधों को पूरे जोश के साथ धारदार शब्दावली में प्रस्तुत किया है।

1.2.1.2धार्मिक आस्थाओं एवं अन्धविश्वासों का विरोध

समकालीन हिन्दी कविता में सामाजिक परिवेश के अन्तर्गत धार्मिक आस्थाओं, मान्यताओं एवं अन्धविश्वासों का विरोध पाया गया है।धार्मिक आस्थाओं और अंधविश्वासों का विरोध दुष्यन्तकुमार की ग़ज़लों में भी देखा गया है। कुँवर नारायण साही, देवराज, प्रभाकर माचवे, नरेश मेहता, राजेन्द्रकिशोर, भारतभूषण अग्रवाल, रामदरश मिश्र आदि की कविताओं में भी इसी प्रकार की भावानुभूति की अभिव्यंजना है। ब्रह्म को भूल जाने की बात देवराज करते हैं वहीं प्रभाकर माचवे पत्थर पूजना नास्तिकता की धुन समझते हैं। नरेश मेहता ईश्वरीय शक्ति में आस्था और विश्वास नहीं रखतेहैं।

समकालीन हिन्दी कविता में धार्मिक आस्थाओं और अन्धविश्वासों का विरोध करके कवियों ने समसामयिक परिप्रेक्ष्य में युगधर्म का निर्वहन किया है।धार्मिक आस्थाओं और अन्धविश्वासों का विरोध इस युग की काव्य प्रवृत्ति भी बन गयी है। इन कविताओं में रूढ़िवाद और परम्परावाद की अस्वीकृति है।

ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था, विश्वास नहीं रहाहैं। धार्मिकता की भावना का लोप हो रहा है। मानवीय संवेदना अब विलुप्त हो रही है। धर्म, ईश्वर, अध्यात्म के प्रति आस्था टूट रही है। विज्ञान के बढ़ते हुए चरण के साथ ईश्वर की भक्ति में कम विश्वास रह गया है। यही कारण है कि समकालीन कविता में ईश्वर के प्रति आस्था और अविश्वास का भाव देखने को मिलता है।

समकालीन कविता में धार्मिकता की भावना आहत हुई है, अन्धविश्वासों के प्रति लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण देखा गया है। इस युग के काव्य में मानवीय संकटों में घुटन, टूटन, निराशा, वेदना, अविश्वास, विवशता, मजबूरी, लाचारी आदि की भी अभिव्यक्ति हुई है। पूँजीवाद के व्यापक प्रचार- प्रसार के फलस्वरूप आम जनता में असुरक्षा, आतंक, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अन्याय, अत्याचारआदि प्रवृत्तियाँ के रूप में उभरी हैं जिसकी अभिव्यंजना समकालीन काव्य में हुई है।

1.2.1.3सर्वहारा वर्ग के प्रति संवेदनशीलता

समकालीन हिन्दी काव्यधारा में सर्वहारा वर्ग के प्रति ममता, करुणा एवं सहानुभूति की भी भावधारा प्रवाहित होते हुए देखी गयी है। जनजीवन को दमन करनेवाली पूँजीवादी व्यवस्था के अत्याचार और अन्याय को खत्म करने हेतु कवियों ने अपना योगदान दिया है। अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न आदि पर नियन्त्रण करने का कार्य भी किया गया।

सर्वहारा वर्ग के प्रति अधिकांशतः कवियों ने सहानुभूति और संवेदना का स्वर ध्वनित किया है।समकालीन कवियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे शोषित-पीडित. दलित, कृषक, मजदूर एवं निम्न वर्ग के पक्षधर हैं जिनका जीवनयापन कुण्ठाओं और अभाव में हो रहा है। मुक्तिबोध की 'बिहार' शीर्षक कविता, भारतभूषण की 'सीमाएँ : आत्मस्वीकृति' कविता तथा 'जागते रहो' कविता सर्वहारा वर्ग के प्रति ममता, संवेदना और सहानुभूति की भावना जागरित करती हैं। सर्वहारा वर्ग के प्रति सर्वाधिक ममता, करुणा, संवेदना एवं सहानुभूति का भाव प्रभाकर माचवे की कविता 'निम्न मध्य वर्ग' में भी मिलता है।

सर्वहारा वर्ग के प्रति पुरानी पीढ़ी के कवियों में धर्मवीर भारती, रामविलास शर्मा, नेमिचन्द्र जैन, शकुन्तला माथुर, गिरिजाकुमार माथुर, अज्ञेय, मुक्तिबोध, बलबीर सिंह 'रंग', शमशेर बहादुर सिंह, प्रभाकर माचवे, भारतभूषण आदि के नामों का उल्लेख किया जा सकता है। समकालीन कविता में शोषित-पीड़ित की पीड़ा को समझनेवाले नयी पीढ़ी के भी कवि हैं जिन्होंने विविध काव्यांगों के माध्यम से अपनी काव्यानुभूति की अभिव्यंजना की है।

सर्वहारा वर्ग के प्रति ममता एवं सहानुभूति की भावना समकालीन कवियों की रही है जिसमें असंगति, अन्याय, उत्पीड़न के प्रति तीव्र आक्रोश का भाव है। आत्मीयता, सौहार्द और सहानुभूति का भाव प्रदर्शन करते हुए संवेदनशीलता के संवेगात्मक धरातल पर कवियों ने युगीन चित्रण किया है जो मानवीय मूल्यों के निर्मिति में सहायक है।

सहानुभूति की भावना शोषित-पीड़ितों के लिए घाव पर मरहम लगाने का काम करती है जिसको कवियों ने कर दिखाया है। इस दशक के कवियों में देवेन्द्र आर्य, डॉ. प्रेमप्रकाश गौतम, डॉ. सुन्दरलाल, सुरेश उपाध्याय, जगदीश कुमार, डॉ. विनोद, डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र, रवीन्द्रनाथ दरगल,

रामदेव आचार्य, राजकुमार, अजामिल, डॉ. जीवनप्रकाश जोशी आदि अपनी सक्रिय भूमिका अदा कर रहे हैं। इस दशक के कवियों में आस्था, विश्वास, सहानुभूति, बौद्धिक क्षमता, चिन्तन एवं सशक्त जीवनदर्शन है।

1.2.2सांस्कृतिक परिवेश

1.2.2.1सामाजिक मानवतावादी दृष्टि

समकालीन हिन्दी कविता में सांस्कृतिक परिवेश के अन्तर्गत मानवता की खोज का प्रयास अधिकतर कवियों ने किया है। सभी दर्शन, धार्मिक, पौराणिक ग्रन्थ इस बात के साक्ष्य हैं कि मानवतावाद की स्थापना ही उनका परम ध्येय है। मानव के सुख-दुःख,लाभ-हानि, जय-पराजय, यश-अपयश आदि का विवेचन-विश्लेषण ही सत्साहित्य-सर्जना है। वस्तुतः समकालीन कविता में धर्म, ईश्वर, अध्यात्म के प्रति पारम्परिक आस्था सर्वेक्षण किया है वहीं उन्होंने लघुमानव के प्रति आस्था व्यक्त कर मानवतावाद को भी प्रतिष्ठित करना चाहा है।

समकालीन कविता में विसंगति, विडम्बना, तनाव, घुटन, टूटन, छटपटाहट, आक्रोश, क्षोभ, उत्तेजना आदि के होते हुए भी समाजवादी यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में मानवता की खोज का प्रयत्न रहा है। समकालीन हिन्दी कविता में कवियों ने खण्डित समाज में मूल्यों के हास पर चिन्ता व्यक्त की है। इस युग में अच्छ-बुरे, सुन्दर-असुन्दर, यथार्थ-कल्पना, न्याय-अन्याय आदि में भेद की प्रतीति शून्य हो गयी है।

सामाजिक यथार्थ चित्रण साम्प्रातिक कविता में सर्वत्र विद्यमान है।सामाजिक सम्बन्धों के जाल में पड़ा व्यक्ति मानव घुटता है, टूटता है, रोता है, सिसकता है तथा संघर्षशीलता के धरातल पर छटपटाता है। यह छटपटाहट और व्याकुलता अधिकांशतः कवियों में देखी गयी है।

समकालीन कविता में अन्तःसंघर्ष, अस्तित्वबोध, सम्भावनाओं की तलाश, आत्मस्थापन की आकांक्षा, सामाजिक बदलाव की कामना, आदि के बीच मानव विषम परिस्थितियों से जूझ रहा

है। यह सामाजिक यथार्थ है जिसमें वह मानवता का खोजी बनकर भटक रहा है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक कारणों से सम्प्रति समाज में अव्यवस्था और अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी है जिसको कवियों ने अपने काव्य का विषय बनाया है। पति-पत्नी, भाई-बहिन,पिता-पुत्र, सास-ससुर, माँ-पुत्र, माँ-पुत्री, पिता-पुत्री आदि में भी मूल्यों, आदर्शों एवं मानवीय सम्बन्धों का बिखराव दृष्टिगोचर होता है।

1.2.2.2नारी के विविध रूपों का चित्रण

समकालीन हिन्दी कविता में नारी को विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है।छायावादीयुग में नारी को देवी, सहचरी, माँ, प्राण, पूजनीया-वन्दनीया का दर्जा प्राप्तथा, वह धीरे-धीरे वैज्ञानिक प्रगति तथा पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव केकारण विलुप्त होता गया। नारी के प्रति आदर्शवादी विचारधारा में परिवर्तन हुआ तथा यथार्थवादी, उपयोगितावादी और उपभोक्तावादी अवधारणा को बल मिला। परम्परागतविचारों में परिवर्तन आवश्यक था। श्रद्धा तथा आस्था की प्रतीकनारी त्यागमयी से कर्ममयी कर्तव्यपरायण बन गयी तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मेंपुरुष के समकक्ष ही नहीं बल्कि एक कदम आगे भी है। यही नहीं दूसरा पहलू भीहै जिसमें नारी भोग्या के रूप में, कामासक्त प्रेमिका के रूप में, प्रिया के रूप में,बलात्कार बेवशी के रूप में आदि रूपों में चित्रित की गयी है। साथ ही सामाजिकसंगठनकर्त्ता, प्रशासनिक सेवाओं, जन प्रतिनिधियों, संसद सदस्यों, राजनेताओं,राष्ट्राध्यक्षों, सरकारी विभागों, शिक्षा क्षेत्रों, चिकित्सा सेवाओं आदि क्षेत्रों में भी नारीस्थापित हो चुकी है। भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल नारीजागरण एवं सशक्तिकरण की प्रतीक है।

गरीबी, भुखमरी आदि के कारण भी नारी को अनचाहे पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने को मजबूर होना पड़ता है। पुरुष की भोगलिप्सा की परिणति दिल्ली, मुम्बई आदि महानगरों में होता हुआ देह व्यापार साक्ष्य है। सम्प्रति नारी अपमानित और प्रताड़ित है, शोषित है और पीड़ित है। पत्नी जीवनसंगिनी नहीं भोग्यवस्तु बनकर रह गयी है। विज्ञापन की वस्तु' बन गयी है।

समकालीन कविता में कवियों ने नारी जाति के प्रति संवेदना का नया दृष्टिकोण अवश्य अपनाया है फिर भी नारी की मानसिकता सम्प्रति भी नैराश्य प्रधान बनी हुई है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे निराशा, हताशा, पुरुष द्वारा उसका शोषण आज भी हो रहा है। इस प्रकार नारी मनोदशा, नारी व्यथा-कथा, नारी-शोषण के साथ-साथ नारी-जागरण, नारी-मुक्ति, नारी-शक्ति आदि का भी चित्रण समकालीन कवियों ने किया है जिससे नारी के प्रति संवेदनात्मक नव्य दृष्टिकोण का पता चलता है। परिवेश बदला है, परिस्थिति बदली है, नारी स्थिति बदली है और नारी की दशा बदली है।

वास्तव में नारी की दशा और दुर्दशा के लिए मात्र पुरुष वर्ग ही नहीं नारी समाज भी समान रूप से जिम्मेदार है। नारी अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है, अपने सम्मान के लिए प्रयत्नशील है और समानता के लिए कर्तव्यनिष्ठ होकर कार्यक्षेत्र में क्रियाशील है। पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दायित्वों को निर्वहन करती हुई नारी सम्प्रति विषम परिस्थितियों में भी सुखद, सम्मानपूर्ण जीवन जी रही है। अपवाद हर क्षेत्र में है और हो सकते हैं फिर भी नारी के प्रति सामाजिक सोच में भी परिवर्तन आया है। नारी जाति को प्रतिष्ठित एवं अधिष्ठित करने, समाज में सम्मान दिलाने, खोई हुई प्रतिष्ठा दिलाने तथा मर्यादित और संयमित जीवन जीने के लिए कवियों ने नारी जागरण और नारी मुक्ति का भी आवाहन किया है।

एक ओर अर्द्धांगिनी के रूप में नारी स्थापित हो चुकी है वहीं दूसरी ओर वह पुरुष-प्रधान समाज में शोषित-पीड़ित भी हुई है फिर भी नारी जागरण की स्थिति में है, नारी मुक्ति की स्थिति में है, नारी दुर्गा है। इस प्रकार समाज की विसंगतियों में भी नारी जाति ने सदैव से संघर्ष किया है और सम्प्रति भी कर रही है लेकिन उसका उज्ज्वल भविष्य है, सकारात्मक सोच है और सार्थक प्रयत्न है।

1.2.2.3 सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा

नवयुग में नवमानव की स्थापना का प्रयत्न अधिकांश कवियों ने किया है। मानव जीवन का यथार्थवादी चित्रण ही सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा है जिसमें वैज्ञानिक दृष्टि का भावबोध

है। साक्षात्कार, प्रयोग एवं परीक्षण-निरीक्षण पर बल देनेवाली, नवयुग का सन्देश मुखरित करनेवाली तथा सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षी मानवीय संवेदना ही नवयुग में सामाजिक परिवर्तन की अभिलाषा है।

सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिवर्तन भी साहित्यिक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। परिवर्तन की आवश्यकता समाज को होती है और साहित्य समाज को भी प्रभावित करता है। परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत धीरे-धीरे चलती है तथा वर्ग संघर्ष को यही जन्म देती है और इसी प्रकार सामाजिक क्रान्ति आती है। मानव समाज व्यवस्था आदिम साम्यवादी युग, पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, जनवाद, समाजवाद आदि में विकसित हो गयी है। समाज में शासक और शासित वर्ग के बीच गहरी खाईहो गयी थी तथा प्रजातान्त्रिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा था।

वस्तुतः साहित्य समाज को बदलने में अहम भूमिका निर्वहन करता है। समाजवादी वैचारिक अवधारणा के अनुरूप ही कवियों ने आवाज उठायी है। व्यवस्थित और कलात्मक रूप की यह अभिव्यंजना अधिकांश कवियों के काव्य में देखने को मिली है। समकालीन कवियों ने जीवन में, समाज में गतिहीनता, अकेलेपन अजनबीपन तथा घुटन-टूटन से क्षुब्ध होकर सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा से रचनाएँ कीं जिसके परिणामस्वरूप वैचारिक क्रान्ति आयीहैं।

1.2.3आर्थिक परिवेश

1.2.3.1बेरोजगारी की समस्या

समकालीन हिन्दी कविता में आर्थिक परिवेश के अन्तर्गत बेरोजगारी की बढ़तीहुई विकराल समस्या को भीविषय बनाते हुए विवेचन-विश्लेषण किया गयाहै। बेरोजगारी की समस्या बहुत

बड़ी समस्या राष्ट्रीय स्तर परबनी हुई है। शिक्षित बेरोजगारों की तो स्थिति और अधिक शोचनीय और दयनीयहै क्योंकि शिक्षित व्यक्ति सभी क्षेत्रों में सेवारत नहीं हो सकता।

आज की कविता में आर्थिक विषमता एक महत्त्वपूर्ण घटक है जिसका सीधासम्बन्ध आम जनता के जनजीवन से जुड़ा हुआ है। समकालीन कविता सामान्यजन के माध्यमसे सम्पूर्ण परिवेश का चित्रांकन करती है। इसमें आर्थिक संवेदनात्मक धरातल परसामाजिक-सांस्कृतिक विसंगतियों और विद्रूपताओं की अभिव्यक्ति है। सत्य को अपने स्वार्थ के फलक पर देखाजाता है तथा बेरोजगारी के नाम पर रोजगार देने का आश्वासन दिया जाता है औरउनका शोषण किया जाता है।

शिक्षित बेरोजगारों के समक्ष कोई भी संकल्प विकल्प के रूपमें नहीं है। आज दर-दर भटक रहे हैं निराशा, हताशा, भग्नाशा आदिके शिकार हो रहे हैं। मानवीय मूल्यों में तेजी से ह्रास हो रहा है। शिक्षित बेरोजगार आज डिग्री को लेकर शर्मिन्दा हैं चारों तरफ भटक रहे हैं। दलदल में अटक रहे हैं। माँ बाप की नजरों में खटक रहे हैं। योग्यतम व्यक्ति भी सर्वोच्च डिग्रीधारकबेरोजगारी का शिकार हो गया है। दृष्टव्य है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि समकालीन हिन्दी कविता में आर्थिक विषमताके अन्तर्गत बेरोजगारी की ज्वलन्त समस्या को राष्ट्रीय समस्या समझकर कवियोंने नानाविधि अभिव्यंजना की है। ये कविताएँ समस्यात्मक कविता का प्रतिनिधित्वकरती हैं।

1.2.3.2 मँहगाई में सतत बढ़ोत्तरी

समकालीन हिन्दी कविता में कवियों की वाणी कमर तोड़ मँहगाई से जनता की दुर्दशा को भी मार्मिकता से व्यंजित करने में सफल रही है। स्वार्थी सत्ताधीशों ने तो अपना घर भरने की ही कोशिश की है। केन्द्रीय सरकार आपातकाल के बाद अस्थिर रही है। कोई भी ठोस कदम मँहगाई रोकने के लिए नहीं उठायागया। एक अरब से भी ज्यादे की जनसंख्यारखनेवाला भारत अपने

प्राकृतिक संसाधनों के होते हुए भी मँहगाई रोकने में असमर्थरहा है। विदेशी पूँजी निवेश करने के बावजूद भारत बढ़ती हुई मँहगाई से जूझ रहाहै।

संसदीय लोकतन्त्र का भव्य दृश्य प्रस्तुतकरता हुआ भारत व्यवहार में जनतन्त्र नहीं बन पाया है। शासन में जनता कीहिस्सेदारी नहीं यहाँ तक कि सरकारी नीतियाँ भी जनता के वास्तविक हितों कोदृष्टि में रखकर नहीं बनायी जातीं जिसके परिणामस्वरूप मँहगाई बढ़ती चली गई। बढ़ती हुई जनसंख्या राष्ट्रीय विकास में बाधक रही है।

समकालीन हिन्दी कविता में देश की अनेक ज्वलन्त समस्याएँ कवियों द्वाराउठायी गयी हैं और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। असम की समस्या, नागालैण्ड की समस्या, कश्मीर की समस्या, पंजाब की समस्या, काबेरी जल विवादकी समस्या, आवासीय समस्या, प्रदूषण की समस्या,जनसंख्या की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, आतंकवाद की समस्या, मन्दिर-मस्जिद समस्या, घोटालोकी समस्या, भाषा समस्या, परमाणु परीक्षण दहेज मँहगाई आदि ऐसी समस्याएँ हैंजो उत्तरोत्तर विकराल रूप धारण करती गयी हैं।

1.2.3.3 आर्थिक परिवर्तन की आकांक्षा

समकालीन हिन्दी कविता में आर्थिक संवेदना के अन्तर्गत नवीन परिवेश मेंआर्थिक परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गयी है। 80 के दशक में खाड़ी देशों द्वारा पेट्रोलियम पदार्थों की मूल्य वृद्धि नेभारतीय अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित किया। विदेशी पूँजीनिवेश आदि के परिणामस्वरूपदेश की आर्थिक स्थिति में सुधार आया और धीरे-धीरे राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति हुई। भारत में विदेशी पूँजी निवेश हुआ औरआर्थिक समृद्धि का द्वार खुल गया। भारत का आर्थिक परिवेशसन्तुलित अवस्था और अर्थव्यवस्था में सुधार होता गया है। साहित्य-सर्जना की दृष्टि से आर्थिक परिवेश की स्थिति पूर्व की अपेक्षाकाफी सन्तोषजनक है तथा देश आत्मनिर्भर हो रहा है। समकालीन सामाजिक परिवेश शहरीकरण की प्रवृत्ति को स्मरण कराता हैजिसमें लोग आवासीय सुविधा और रोजगार हेतु शहरों की ओर पलायन करने लगे। सुरक्षा की दृष्टि से भी शहर गाँव की अपेक्षा अधिक सुरक्षित माना गया है तथाचिकित्सा सुविधा रोजगार आदि भी

शहर की ओर आकृष्ट करते रहे हैं। महानगरोंकी आबादी तीव्र गति से बढ़ने लगी और शिक्षा, भोजन, चिकित्सा, प्रशासन, तथा अन्य जन सुविधाओं के अभाव के कारण नगर कीस्थिति दयनीय बन गयी। प्रदूषण की समस्यातथा वर्गभेद कीसमस्या ने शहरीकरण की प्रवृत्ति में परिवर्तन ला दिया। धीरे-धीरे शहरी महानगरीय आकर्षक समाप्त हो गया। मानव मूल्यों राष्ट्रीय आदर्शों एवं जीवनादर्शों का हासदेखा गया जिसको समकालीन हिन्दी कविता में कवियों ने रेखांकित किया है।

समकालीन हिन्दी कविता में कवियों ने नवीन परिवेश में आर्थिक परिवर्तन की आवश्यकता कोविषय बनाया है जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिवेश को आर्थिक संवेदनात्मक धरातल पर अभिव्यक्तकिया गया है।

ब्रजेन्द्र अवस्थी, अजित कुमार, अनन्तराम मिश्र, अनिल चौधरी, दिनेश रस्तोगी, नरेन्द्र श्रीवास्तव, नीरज, सरिता शर्मा, महाश्वेता चतुर्वेदी महेश दिवाकर महेश मधुकर मिथिलेश दीक्षित रामानुजत्रिपाठी, राधेश्याम शुक्ल, ब्रजकिशोर वर्मा आदि कवियों ने समकालीन कविता में आर्थिक संवेदनात्मक धरातल पर काव्य-सर्जना की है।

1.2.4साहित्यिक परिवेश

साहित्यिक परिवेश वास्तव में साहित्य-सर्जना और विशेष रूप से काव्य-सर्जनाके लिए उत्तरदायी होता है। परिवर्तनशीलता युगीन आकांक्षा बन गयी है तथा नव्यताऔर भव्यता का पर्याय घोषित हुई है। इसी कारण युगीन परिस्थितिमें काव्य-सर्जनाको प्रेरित और प्रोत्साहित करती रहीं। यही कारण है कि कवियों ने वैयक्तिक प्रसंगों,अवधारणाओं, मोहग्रस्त अभिव्यक्तियों तथा नैतिक आदर्शों के प्रति विद्रोहीस्वर ध्वनित किया। काव्य-सर्जना के नाम पर नई कविता के अनेक नाम दिये गयेतथा कविता के नाम पर बहुत कुछ अनपेक्षित, अनावश्यक एवं अप्रासंगिक लिखागया। भाव सम्पदा की भी कमी रही और शिल्प के स्तर पर शब्दों को तोड़मरोड़ करप्रस्तुति दी गयी, व्यंजित किया गया। भावपक्ष और कलापक्ष में सामंजस्य स्थापनका नितान्त अभाव था जिसके

परिणाममुक्तिबोध, निराला, त्रिलोचन, धूमिल, रघुवीर सहाय, लीलाधर जगूड़ी आदि नेसमकालीन परिवेश में काव्य -सर्जना की तथा 'नई कविता', 'समकालीन कविता' एवं' आज की कविता' आदि के भँवरजाल में न फँसकर स्वतन्त्रचेत्ता के रूप मेंसाहित्यिक परिवेश में पदार्पण किया।

साहित्यिक परिवेश ने समय की विसंगतियों, सामाजिक विद्रूपताओं, राजनीतिक विडम्बनाओं ने काव्य -सर्जना में अहम भूमिका निर्वहन की है। मानवीय जिन्दगी जीने और समुचित सामाजिक व्यवस्था कीतलाश अधिकांश कवियों को रही है। हिन्दी कविता आम जनता की दुःखदर्द की कविता है। जनसामान्य के शोषण उत्पीड़न की कविता है। विसंगति असंगति, अन्याय उत्पीड़न दमन आदि के विरुद्ध तीव्र स्वर ध्वनित करने वाली यहकविता आक्रोश और विद्रोह का प्रतिनिधित्व करती है।

1.2.5राजनीतिक परिवेश

1.2.5.1सत्ता की ललक

सम्पूर्ण भारत में राजनीतिक परिवेश हर जगह दिखाई देता है। राष्ट्र के बदलते राजनीतिक परिवेश ने सामाजिक आर्थिक उन्नति के द्वार अवश्य खोल दिये हैं फिर भी आशातीत सफलता नहीं मिली है क्योंकि राजनीतिक सामंजस्य का अभाव है। विग्रह वैचारिक स्तर पर है। इसलिए पूर्णरूपण सफलता नहीं मिल सकी है।

सत्ता के भूखे शासकों की स्वार्थी नीति-रीति के कारण वर्गहीन, जातिविहीन, धर्मनिरपेक्ष, सम्प्रदाय-पंथ निरपेक्ष समाज का संकल्प पूरा नहीं हो सका है। भारत की तटस्थतावादी नीति, पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों में माधुर्य एवं सुधार आदि के फलस्वरूप राजनीतिक संवेदनात्मक स्थिति का नव्य क्षितिज निर्मित हुआ है। भीषण मँहगाई बढ़ाने में भी सत्ताधारियों की नीति-रीति उत्तरदायी है तथा व्यापारियों ने अनुचित लाभ पहुँचाकर सत्ता के भूखे शासकों को खरीद लिया

है जिससे आम जनता पीड़ित है। आर्थिक विषमता बढ़ रही है, सामाजिक न्याय आमजनता को नहीं मिल पा रहा है। कृषि क्षेत्र में किसानों को उनकी उपज का पर्याप्त लाभ नहीं मिल रहा है। पेट्रोलियम पदार्थों की निरन्तर मूल्य वृद्धि से भारतीय अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हुई है जिसके लिए राजनीतिक परिवेश जिम्मेदार है। मानव प्रतिभा को जीवन्त ठोस और तात्कालिक बनाने की कोशिश है। सत्ता के भूखे शासकों ने समाजवाद का नारा देकर जनता का शोषण और अपना पोषण किया है।

1.2.5.2व्यवस्था परिवर्तन के प्रति संघर्षशीलता

समकालीन कविता में कवियों को सच्चे अर्थों में लोकतंत्र की तलाश रही है क्योंकि लोकतंत्र में आम जनता को समानता का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। प्रजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना सरकारीतंत्र और आम जनता की सम्मिलित जिम्मेदारी होती है। वास्तव में आम जनता के साथ-साथ साहित्यकारों और सरकारीतंत्र को भी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है जिससे सामाजिक परिवर्तन लाया जा सके और व्यवस्था में परिवर्तन किया जा सके। पूँजीवादी व्यवस्था की कार्य पद्धति से समकालीन कवि सन्तुष्ट नहीं हैं क्योंकि इसमें सामन्तवादी वैचारिक धरातल का योगदान रहा है। व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई इन कवियों ने लड़ी है। मानवीय धरातल पर कवियों ने सभी स्थितियों और परिस्थितियों में शोषित-पीड़ित मानव की व्यथा पर मरहम लगने का प्रयास किया है।

वर्तमान के अंधकार, पराजय, मूल्यहीनता, शोषण और भ्रष्टाचार को छिपाने के लिए बार-बार अतीत की ओर देखना कवि कर्म एवं कवि धर्म बन गया है। भारतीय सामाजिक परिवेश और वैयक्तिक जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं विडम्बनाओं को भी कवियों ने बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार आशंकाओं, निराशाओं, कुण्ठाओं एवं विषमताओं से घिरे हुए समाज और मानव की संघर्षशीलता की गाथा को समकालीन कवियों ने अपना प्रमुख बिन्दु बनाया है, इसके लिए संघर्ष किया है। सच्चे अर्थों में व्यवस्था परिवर्तन के लिए संघर्ष करनेवाले समकालीन कवियों में ब्रजेन्द्र अवस्थी, उर्मिलेश, नीरज, गिरिराजशरण अग्रवाल,

देवेन्द्र शर्मा, विश्वप्रकाश दीक्षित, भगवत दुबे, किशोर काबरा, अनन्तराम मिश्र, अनिल चौधरी, कृष्णस्वरूपशर्मा, गंगाप्रसाद शर्मा, गिरिजानन्द, दिनेश रस्तोगी, दिनेश शुक्ल, महेश मधुकर,राधेश्याम शुक्ल, संध्या, सुधेश, हरीलाल 'मिलन' आदि हैं जिन्होंने काव्य-सर्जना के माध्यम से जनमानस को आन्दोलित किया है, प्रेरित किया है और प्रोत्साहित किया है। व्यवस्था परिवर्तन के प्रति संघर्ष करनेवाले कवियों ने सत्तासीन सत्ताधारियों की कटु आलोचना करते हुए राष्ट्रीय चेतना को दृष्टिगत करते हुए काव्य-सर्जना की है।

वस्तुतः समकालीन हिन्दी कविता दल-बदल की राजनीति का साक्ष्य प्रस्तुत करती है क्योंकि परिवर्तित परिवेश में बदलती हुई राजनीतिक घटनाएँ वास्तव में एतिहासिक क्षितिज का विस्तार करती हैं। राजनीति, रणनीति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। आम जनता सदैव से शोषित-पीड़ित रही है और आज के युग में भी वहीस्थिति बनी हुई है।

निष्कर्षत: परिवेशगत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए कवियों ने समसामयिक सन्दर्भों को दृष्टिगत करते हुए अपनी अनुभूति को अभिव्यंजित किया है। अटूट आस्था, अगाध विश्वास, संवेदनात्मक सहानुभूति, प्रखर बौद्धिक क्षमता, गहन चिन्तन-मनन, आशावादी जीवन दर्शन तथा सुधारात्मक रचनात्मक दृष्टिकोण से इन कवियों ने परिवेशगत सन्द्धों को मद्देनजर रखते हुए यथार्थवादी काव्य-सर्जना की है। समकालीन कवियों ने जीवन में सामंजस्य, सन्तुलन, व्यवस्था, समरूपता देखने हेतु लेखनी को शस्त्र के रूप में प्रयोग किया है। समकालीन कवियों ने युगीन परिस्थितियों, को काव्य का विषय बनाया है।

कवियों ने मानवता को वर्गवाद, जातिवाद, भाई-भतीजावाद आदि की संकीर्ण मानसिकता की बेड़ियों से मुक्त करने का प्रयास किया है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं नैतिक मूल्यों पर चिन्ता जतायी गयी है। आम जनता के जीवन में अभाव, तनाव, असन्तोष, आतुरता-व्याकुलता आदि को इंगित किया गया है। संघर्षशीलता को जीवन-ज्योति के रूप में स्वीकारने वाले समकालीन कवियों ने बड़े ही आत्मविश्वास, आस्था और अदम्य साहस से काव्यानुभूति को अभिव्यंजित करके काव्य र्सजना की है। समकालीन कविता जनमानस की

कविता है, आक्रोश की कविता है, विद्रोह की कविता है। समकालीन कविता में सामाजिक सन्दभों की नई व्याख्या की गयी है जिस में वेदना की तीव्र अनुभूति है। अनास्था और अविश्वास के कारण जनमानस व्यग्र हो उठा है जिसमें आस्था और विश्वास की ज्योति जगानेवाले कवियों ने जीवन की सच्चाई बखान की है। असफलता, अफसोस एवं घोर नैराश्य की स्थिति में कवियों ने कुण्ठा एवं अवसाद की अनुभूति की है जिसमें अत्याचार, अनाचार, अन्याय, दुराचार, भ्रष्टाचार आदि के प्रति आक्रोशीस्वर ध्वनित हुआ है। अव्यवस्थित जनतांत्रिक प्रणाली का नग्न चित्रण कर कवियों ने राजनीतिक परिवेश की भी पोल खोल दी है। समकालीन कविता में आर्थिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश एवं ऐतिहासिक परिवेश को दृष्टिगत करते हुए कवियों ने अभिव्यक्ति दी है। आर्थिक परिवेश के अन्तर्गत सत्ताधारकों की पूँजीवादी मानसिकता को दर्शाया गया है जिसमें शोषित-पीड़ित आमजनता के प्रति संवेदनात्मक सहानुभूति की भावना की अभिव्यंजना है। आर्थिक विषमता और विसंगतियों के कारण ही कवियों का स्वर तीखा हो गया है।

वस्तुतः बदलते परिवेश में जीवन के परिवर्तितमूल्यों को व्यंजित करने में ही कवियों की वाणी अधिक मुखरित हुई है।

1.3 मंगलेश डबराल और समकालीन कविता

मंगलेश का जन्म 16 मार्च 1948 टिहरी गढ़वाल जिले के काफलपानी नामक गांव में हुआ। कवि मंगलेश के घर में पहले से ही सांस्कृतिक माहौल था। मंगलेश के पिताजी मित्रानंदजी एक कुशल वैघ, ज्योतिषी, कवि, गायक, अभिनेता और नाटककार थे। उनकी माता का नाम सत्येश्वरी देवी था। उनको पांच बहने थी। पहली भुवनेश्वरी, दूसरी जगदेश्वरी, तिसरी राजलक्ष्मी, चौथी मालती और पांचवी का नाम बसु था। पांच बहनों में मंगलेश अकेला भाई होने के कारण उनका अधिक लाड़ और प्यार से पालन पोषण हुआ।

मंगलेश की प्राथमिक शिक्षा काफलपानी के प्राथमिक विद्यालय में हुई। बचपन में उन्हें संस्कृत पढ़ने का बड़ा शौक था। उसी के साथ उन्हें हिंदी और अंग्रेजी में भी रुचि थी। लगातार अध्ययन, पठन, पाठन, संगीत से प्रेम और घर का सांस्कृतिक माहोल होने के कारण उन्होंने लिखना शुरू किया। मंगलेश की हाईस्कूल की पढ़ाई चंबा और टिहरी नामक कस्बे में हुई। वे हाईस्कूल में थे तभी उन्होंने पत्रिका के लिए एक कहानी लिखी थी। उच्च शिक्षा के लिए वे देहरादून चले गए। उन्होंने अपने अध्ययन के साथ-साथ लेखन कार्य भी जारी रखा था। उसी वक्त उनकी कविताएं 'शताब्दी' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। कॉलेज के तृतीय वर्ष में पारिवारिक समस्या के कारण उन्हें दिल्ली जाना पड़ा। अपने पिताजी की बीमारी के कारण उन्होंने एक साल तक पढ़ाई छोड़ दी थी। घर को आर्थिक सहारा देने के कारण उन्होंने नौकरी करने का फैसला किया।

मंगलेश डबराल का पत्रकारिता में भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उनके कठिन परिस्थिति में आर्थिक सहारे के लिए पत्र-पत्रिकाओं का संपादन मुख्य साधन रहा है। वे भोपाल में 'पूर्वग्रह' के सहायक संपादन रहे, इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में साहित्य संपादक रहे, दैनिक 'जनसत्ता' में वरिष्ठ सहायक संपादक बने। इस तरह पत्रकारिता के साथ-साथ मंगलेश का लेखन कार्य नदी के प्रभाव की तरह जारी रहा है। पत्रकारिता को साहित्यिक आधार पर प्रतिष्ठान करने में मंगलेश का योगदान प्रभावशाली रहा है।

मंगलेश ने पारिवारिक जीवन की राह पर अपने कदम रखे। उनके पत्नी का नाम 'संयुक्त' था। जिन्होंने जीवन के हर एक कदम पर उनका साथ निभाया। मंगलेश और संयुक्त जी को दो संताने हैं। बेटे का नाम 'मोहित' है। वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़ा है। और बेटी का नाम 'अल्मा' जिसे शास्त्रीय संगीत से बड़ा प्रेम है।

मंगलेश जी के घर में संगीत का माहौल था। और इसी वजह से उन्हें संगीत से बचपन से ही लगाव रहा है। यही कारण है कि, उनकी रचनाओं में भी रागों का प्रयोग दिखाई देता है। संगीत का काव्य में तथा काव्य को संगीत में लाने का सबसे अधिक प्रयास मंगलेश डबराल ने किया है।

मंगलेश डबराल कुशल अनुवादक हैं। उनको सभी भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी, रूसी, पोल्सकी, जर्मनी, बलोरी आदि विदेशी भाषाओं का ज्ञान रहा है। हेरमन हिस्से का उपन्यास 'सिद्धार्थ' और बंगला कवि नवारूण भट्टाचार्य का काव्य संग्रह 'वह मृत्यु उपात्य का नहीं है मेरा देश' शामिल है। उसी के साथ अंतरराष्ट्रीय ख्याति के कई महत्वपूर्ण- ब्रेष्ट, रित्सोस, यानिस, पांल्बो नेरूदा, एर्नेस्तो कार्देनल आदि की कविताओं का उन्होंने अनुवाद किया है।

मंगलेश डबराल कवि के रूप में सन् 1961 में परिचित हुए। उनका पहला काव्य संग्रह पहाड़ पर लालटेन बहुचर्चित हुआ। मंगलेश डबराल ने भले ही प्रारंभ में कविता, कथा, कहानी से लेखन शुरू किया हो लेकिन साहित्य सरिता का उत्स मंगलेश ने अधिक ख्याति काव्य के क्षेत्र में ही पायी है। उन्होंने वर्तमान समाज एवं उसमें व्याप्त विसंगतियों का उजागर करने के लिए कविताओं का माध्यम चुना। उनका संपूर्ण मौलिक साहित्य 'पहाड़ पर लालटेन' (1981), 'घर का रास्ता' (1988), 'हम जो देखते हैं' (1995), 'एक बार आयोबा', (एक यात्रा डायरी) (1996), 'लेखक की रोटी', गद्य रचना (1997), 'आवाज भी एक जगह है' कविता संग्रह (2000), 'नये युग में शत्रु' (2013) यह है।

साहित्य के क्षेत्र में मंगलेश डबराल की अनुपम सेवा के लिए उन्हें कई संस्थाओं ने सम्मानित किया गया है। 1982 में ओमप्रकाश स्मृति सम्मान से सम्मानित हुए। 1989 में श्रीकांत वर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 1995 में शमशेर सम्मान से विभूषित हुए। 1999 में पहल से विभूषित हुए। 2000 में साहित्य अकादमी पुरस्कार 'हम जो देखते हैं' कृति के लिए पुरस्कृत और सम्मानित हुए। और 2003 में साहित्य क्षेत्र के द्विजदेव सम्मान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ था।

निष्कर्षत: इस प्रकार कवि मंगलेश डबराल की जीवनयात्रा सन्1948 से शुरू होती है। माता-पिता की अच्छे संस्कार, पत्नी का सहकार उन्हें प्राप्त हुआ हैं।आशा- निराशा, हार -जीत, शांति-क्रांति का अनुभव उनको जीवन और जगत से प्राप्त हुआ है। इस प्रकार कवि मंगलेश बहुमुखी

प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है।उनकाकवि व्यक्तित्व ही सर्वाधिक सराहनीय है और एक कवि के रूप मेंही वे समकालीन साहित्य अर्थात कवि के क्षेत्र में गौरव के भागी बने हैं।

1.3.1 मंगलेश डबराल के काव्य में समकालीनता

मंगलेश डबराल एक समकालीन कवि है। इसलिए उनके साहित्य में वास्तविकता देखने मिलती है। मंगलेश डबराल की काव्ययात्रा विशेष रूप में सामाजिक यथार्थता से ही शुरू होती है। किसी भी साहित्यकार का साहित्य सामाजिक यथार्थ से अप्रभावित नहीं रह सकता। बेकारी, भ्रष्टाचार, आदि का चित्रण आज की कविता में खूब देखने को मिलता है। समकालीन हिन्दी कवियों ने ग्राम्य जीवन के यथार्थ चित्रण के साथ ही साथ नागरिक जीवन के विभिन्न अंगों, रूपों और विसंगतियों का भी चित्रण किया है। शोषित वर्ग के बाद समाज का सबसे बडा वर्ग मध्यवर्ग है। यह मध्यवर्ग वर्तमान पूँजीवादी समाज व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है जो शोषकों और शोषितों के बीच स्थित है, यह यथार्थ चित्रण डबराल की कविता में देख सकते हैं। डबराल की कविता में साधारण जनता की दुख-दर्द, बेचैनी, पूँजीवादी विसंगतियाँ, निम्न तथा मध्यवर्गीय जीवन की तमाम सच्चाइयाँ आदि आते हैं। उन्होंने उन विसंगतियों पर प्रहार तथा समाज सुधार का सार्थक प्रयास भी किया है। उनकी अधिकांश रचनायें समाज की सच्चाइयों और यथार्थ से भरा हुआ है। उनकी रचनायें अपने अनुभव पर आधारित होने के कारण उनमें जीवंतता झलकती है। उन्होंने जीवन के अनुभव को ही अर्थात कटुसत्य को निर्दयता के साथ निर्भय होकर सामाजिक व्यवस्था का चित्रण किया है। मंगलेश समाज का अत्याचार, अन्याय, शोषण, बाज़ारवाद आदि का चित्रण समाज के सम्मुख रखते हैं।

मंगेश डबराल जी की कविताओं में हमें अनुभव और जीवन परिस्थितियों का एक साथ समावेश मिलता है। वह समाज पर अत्याचार, शोषण समाज के समक्ष रखते हैं। उनकी अधिकांश रचनाएं समाज के सच्चाई और यथार्थ से भरा हुआ है। इस तरह उन्होंने अपनी कविताओं में से समाज को समाज की असलियत दिखाने का प्रयास किया है।

1.3.1.1नारीवादी स्वर

मंगलेश डबराल में स्त्री जाति के प्रति गहरी आस्था है। वे उनके भीतर छिपी हुई दुःखों को बहुत करुणा की आवाज़ में पुकारते हैं। 'स्त्रियाँ' 'तारे के प्रकाश की तरह' 'तुम्हारे भीतर' 'लड़की और अंधा आदमी', ऐसी कविताएँ हैं जिनमें भारतीय स्त्री की संघर्ष भरी कहानी तथा उसकी जीवनशक्ति को पकड़ने का सार्थक प्रयत्न किया गया है। 'स्त्रियाँ' कविता तो बेजोड़ कविता है जिसमें स्त्री का दुःख, उसका संघर्ष उसका प्रेम, त्याग जो आत्मदान की हद तक व्यंजित होता है। भारतीय पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना में नारी को भोग्या बनाकर, शुचिता का आदर्शरखकर पतिव्रता धर्म का उपदेश देकर समाज ने उसे खूब छला है।

मंगलेश डबराल **'तारे के प्रकाश की तरह'**कविता में स्त्री देह को लेकरघर की परिकल्पना करते हैं।उदा.

"स्त्री की देह उसका घर है

वह बिखरी हुई चीजों को सहेजती है

तस्वीरों और दीवारों की धूल साफ करती है

कपड़े तहाकर रख देती है

वह अपने भीतर थामे हुए रहती है टूटते पहाड़ों

बिफरती नदियों और ढ़हते सौर मंडलों को

वह कुछ कहती है या सर झुकाये हँसती है

या उसके आँसू कुछ देर फ़र्श पर चमकते दिखते हैं

ये सब उदाहरण हैं कि वह किस तरह बचाने में जुटी है।"[13]

इस कविता में कवि कहना चाहते हैं कि, एकस्त्री घर में हर तरह का किरदार अदा करती है। वह सुबह से लेकर शाम तक सिर्फ अपने घर के बारे में सोचती है। उसका हर वक्त अपने घर के तरफ कर्तव्य निभाने में रहता है।वह पूरे दिन घर की बिखरी चीजों को समेटनेमें रहती है। हर जगह साफ

-सफाई करती रहती है। वह घर के बारीक -बारीक कामों को कभी रुकने नहीं देती जैसे कि, कपड़ों को सही तरह से रखना वगैरा। नदीजिस तरह बहती रहती है,उसी तरह स्त्रीकादेहकाम करता रहता है। उसके आंखों में आंसू आते हैं लेकिन वह दिखाई नहींदेतेहै। इस तरह नारी का जीवन बीतता रहता है। यही इस कविता में नारी के विषय में कहा हैं।

मंगलेश ने औरत के आंतरिक दर्द को पहचाना है। उसका बिखरा हुआ घर, बहता हुआ नल, और खाये बिना खाना का खत्म होना, **'प्रेम करती स्त्री'** कविता में इस तरह उभारा है-

"प्रेम करती स्त्री

ठगी जाती है रोज़

उसे पता नहीं चलता बाहर क्या हो रहा है

कौन ठग रहा है कौन है खलनायक

पता नहीं चलता कहाँ से शुरू हुई कहानी।"[14]

इस कविता में स्त्री कीघुटनसेभरी जिंदगी के बारे में बताया गया है। एक स्त्री हमेशा घर के चार दीवारों में ही कैद है। उसे बाहर के दुनिया के बारे में कुछ आता पता नहीं है। वह घर में होने के कारण उसे रोज कोई ना कोई ठगता रहता है। उसका फायदा लेता है। उसे पता नहीं है उसे कौन ठग रहा है या कौन उसका फायदा ले रहा है। उसे पता नहीं रहता की यह सब शुरुआत कहां से हो रही है।इसलिए वह चुपचाप सब कुछ सहती रहती है।

नारी उत्पीड़न, तथा यातनामयी जीवन का ज्वलंत चित्रण **'अगले दिन'** कविता में हुआ है। इसमें बलात्कार की शिकार हुई औरत का चित्रण किया गया है। प्यार करनेवाली नारी कवि को संवेदनशील बना देती है। लहरों के स्थान पर दर्दनाक चीख ही सुनाई देती है। जहाँ शालीनता सिहरती हुई आतंकित चेहरेवाली महिला है, जहाँ झड़े हुए पत्ते हैं, लूटी हुई देह है। उदा.

"अगले दिन उसके भीतर

कितने झड़े हुए कितने पत्ते

अगले दिन मिलेगी खुरों की छाप

अगले दिन अपनी देह लगेगी बेकार

आत्मा हो जायेगी असमर्थ

कितने कीचड़ कितने खून से भरी

रात होगी उसके भीतर अगले दिन।"[15]

इस कविता में मंगलेश डबराल ने नारी उत्पीड़न तथा उसकी यातनामय नरक सदृश जीवन के प्रति गहरी चिंता प्रकट की है। इसके साथ-साथ उन्होंने एक और कविता 'स्त्रियाँ' में क्रूर तथा निर्मम व्यवस्था से जूझते हुए एक ऐसी स्त्री की तस्वीर खिंची है, जो कठोर से कठोर परिस्थितियों में भी वह उस प्रेमी का साथ छोड़ना नहीं चाहती जिसने उसे धोखा दिया है।

मंगलेशनारी के लिए भारतीय संस्कृति से पृथ्वी का मिथ लेता है, जिसमें उसे 'क्षमया धरित्री' या 'सर्वसदा' कहा गया है। वह नैतिकता, मर्यादा और सामाजिकता के बोझ से दबी हुई पुरुषों के अत्याचार को चुप्पी के साथ रहने को अभिशप्त है। वे नारी को संस्कृति तक ले जाकर अपनी ओर से कुछ नहीं कहते, लेकिन नारी की दयनीय स्थिति से सवाल स्वतः उभरते हैं।**'संरचना'** कविता का उदाहरण देखिए :-

"मैं कहना चाहता था तुम पृथ्वी हो

तुम में शुरु होता है जीवन, तुम में खत्म

उसने कहा मुझे मालूम है भविष्य

मैं रोज़ देखती हूँ अपने हाथ-पैर

जहाँ से चढ़कर आता है अंधकार।"[16]

समाज में सर्वाधिक शोषण का शिकार नारी होती है। इसलिए मंगलेश ने स्त्रियों की समस्याओं को मूर्तरूप देने की कोशिश की है। शोषकों द्वारा पीड़ित, शोषित वर्ग, उसकी बेबसी, असहायता, लाचारी, मजबूरी, अभावग्रस्त जीवन आदि का ज्वलंत चित्र मंगलेश हमारे सामने रखते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में नारी की असहायकता का चित्रण करने के साथ-साथ उसमें नयी चेतना जगाने की भी चेष्टा की है।

मंगलेश ने अपनी कविता में अपने समय के जंगल में काम करनेवाली स्त्रियों की बुरी अवस्था पर शोक प्रकट किया । उन्होंने अपने मार्मिक विचारों को प्रस्तुत कर 'स्त्री विमर्श' दर्शायाहैं। उन्होंने नारी को शोषित, उपेक्षित, सामाजिक रूप से अनेक स्थलों पर घृणित और लांछित दशा देखकर उसके सामाजिक पक्षों के विकास की अनिवार्यता जताने का प्रयत्न किया है। मंगलेश ने नारी को शक्ति का रूप माना। और साहित्य के माध्यम से उनमें नवीन चेतना, स्फूर्ति और शक्ति का संचार करने का प्रयत्न कियाहैं। उनकी कविताएँ शोषण बन्द करने के लिए आवाज उठाती है।

1.3.1.2 करुणा, दुख, निराशा का चित्रण

मंगलेश में करुणा, दुख-दर्दका बडा जोर है। मंगलेश की कविता हमारे मन में गहरे अवसाद को जन्म देती है। यह अवसाद आदमी को अकेला कर देता है। मंगलेश की अधिकांश कविताएँ एक ऐसे बेहद अकेले और उदास आदमी की कविताएँ हैं जो बुरी तरह टूट गया है, थक गया है। **'थकान'** कविता की दृष्टि से-

"शाम को सारी दुनिया झाड़कर

बिस्तर पर

औंधा होकर अंत में

क्या बचता है कंधे पर बैठे दुख के अलावा

आत्मा पर फफूंद के अलाव क्या बचता है

अंत में।”[17]

“रात जब निश्शब्द

हमारी छाती पर झुकी होती है

काले रंग की थकान बिस्तर पर चढ़ती है

मांसपेशियों के मोड़ लांघती है।”[18]

इस कविता में कवि कहना चाहते हैं कि, आजकल की भाग-दौड़की जिंदगी में एक आदमी थकान की वजह से सोना चाहता हैं।वह सिर्फ कुछ देर के लिए शांति चाहता है। जब एक आदमी काम करके घर लौटता है तो, वह चैन की सांस लेना चाहता है। वह बिस्तर पर लेट कर आराम करना चाहता है। वह अपनी थकान मिटाना चाहता है। जब वह बिस्तर पर लेटा जाता हैबाह्य शरीर कीथकान मिट जाती है लेकिन मन के अंदर की थकान उसे सोने नहीं देती हैं।इस तरह वह अपने आगे की पंक्तियों में कहते हैं कि, रात शांति की तरफ बढ़ती है लेकिन उसके मन की शांति उछल-उछलकर कूद रही होती है।इस तरह उस आदमी को दिन हो या रात उदासी, निराशा, अशांतिपीछा नहीं छोड़ती है।इस प्रकार मंगलेश की कविताओं पर दुख की छाया निरंतर मंडराती है।

समकालीन जीवन की पीडा, दुख, अवसाद, मंगलेश की कविताओं में उतर आया है। मंगलेश के यहाँ निराशा रचनात्मक, प्रेरक और उम्मीदें पैदा करनेवाली हैं। इसलिए मंगलेश **‘मैं चाहता हूँ’** कविता में कहते हैं-

“एक सरल वाक्य बचाना मेरा उद्देश्य है

मसलन यह कि हम इंसान हैं।

मैं चाहता हूँ इस वाक्य की सच्चाई बची रहे

सड़क पर जो नारा सुनाई दे रहा है

वह बचा रहे अपने अर्थ के साथ

मैं चाहता हूँ निराशा बची रहे..."[19]

कवि निराशा को फैशन के रूप में अपनाते हैं या नकली तौर पर ऊपर से ओढ़ते हैं, वहाँ मंगलेश उसे एक रचनात्मक और प्रेरक भूमिका प्रदान करते हैं।

इसमें साहस, जीतने का नहीं, दुख के साथ बने रहने में है। इसमें भूखमरी की जोखिम है, हताशा निर्वासन तथा अलगाव के लिए उत्सुक आस्था है। मंगलेश में आत्मावलोकन की प्रवृत्ति सबसे अधिक प्रखर और मुखर है। **'अपना अंधकार'**सिर्फ चार पंक्तियों की कविता में कितना अर्थ छिपा है, उदा. :-

"जब रोशनी हुई

परछाई दिखी

अपने से बड़ा दिखा

अपना अंधकार।"[20]

मंगलेश जीवन और काव्य में घनिष्ठ संबंध स्थापित करना चाहते हैं। साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब होने के कारण समाज की सम्पन्नता विपन्नता, आशा-निराशा, हार-जीत, सुख-दुख सभी परिस्थितियाँ साहित्य में प्रतिबिम्बित होते हैं। एक गहरी निराशा मंगलेश की कविताओं में सर्वत्र दिखलाई देती है।

उनकी कविता मनुष्य बने रहने की चिंता और चेतावनी की कविता है। उनकी कविता में नाराज आदमी का चेहरा उभरता है, जो समाज के प्रति पाठक के मन में व्यापक करुणा अपने आप पैदा होती है। 'दूसरा हाथ', 'एक पुरानी कहानी' 'सफेद दीवार' दिनचर्या' ऐसी कविताएँ हैं जिनमें

आम आदमी का दुख उसकी करुणा, उसकी निराशा उसका आक्रोश, उसके भीतर भंडार की तरह छिपी है।

मंगलेश की कविताओं से गुजरते हुए उस दुखी आत्मा की अनगिनत आवाजों को सुना जा सकता है।दुख बोध ही उनकी कविता का स्थायी भाव है। जिसके पीछे कवि की विद्रोह भावना छिपी हुई है, यह विद्रोह हीकवि को दुख की ओर ढकेलता है। मंगलेश की कविता में अधिकांशतः एक दुखी आत्मा की पुकार मिलती है। अपने परिवेश के प्रति मंगलेश का स्वर गहरे शोक और निराशा में डूबा हुआ है।इसका उदाहरण **'शोकगीत'**कविता में देखसकते हैं।

"चारों तरफ से आते इस शोकगीत को सुनो

जिसमें कोई स्वर नहीं कोई लय नहीं।"[21]

मंगलेश विचारों से प्रतिबद्ध कवि है। कवि ने जो देखा वह लिखा मंगलेश जो भी लिखते हैं उसमें पूर्णरूपेण स्वाभाविकता है साथ ही साथ देश-समाज की ज्वलंत समस्याओं का मार्मिक चित्रण है। इनकी कविताओं में दुखियारों का दुख है। इनकी कविता में शक्ति इतनी तेज है कि वह सीधे मन पर वार करती है। महानगर की भीड़ भरे जीवन गरीबों के दुख दर्द का मार्मिक चित्रण सहजता के साथ हृदय को छू लेती है।

1.3.1.3आशावादी स्वर

मंगलेश आशावादी कवि है। मंगलेश के यहाँ निराशा रचनात्मक, प्रेरक तथा उम्मीदें पैदा करनेवाली है । कवि निराशा को फैशन के रूप में अपनाते हैं या नकली तौर पर ऊपर से ओढ़ते हैं, वहाँ मंगलेश उसे एक रचनात्मक और प्रेरक भूमिका प्रदान करते हैं। उसे उम्मीद के स्त्रोत के रूप में बदल देते हैं। मंगलेश की कविता में दुख, कहीं करुणा, कहीं विद्रोह, और कहीं जीवन के लिए कोमलता का चुनती है।

मंगलेश मानते हैं कि मनुष्यों में आज भी संघर्ष करने की ताकत कम नहीं हुई है। वह और भी बढ़ती जा रही है। मंगलेश इसी निराशा और दुख से बेचैन होकर मनुष्य में आशा का संचार कराते

हैं। आशावादी स्वर मंगलेश की कविता जीवन से विरक्ति नहीं, आसक्ति की कविता है कष्ट, संकट, त्रास की दुनिया और दल-दल में धँसते पैर हमें संगठित होने के लिए पुकारते हैं।

कवि मंगलेश अपनी कविता में कहते हैं कि निराशा को अपनाते हाथ बांधकर जीना उचित नहीं है। उसके लिए, हमें माथापच्ची करना ही चाहिए। **'दिनचर्या'** कविता में मंगलेश लिखते हैं-

"उठो और चल दो

अपनीदैनिक निराशा अर्जित करने के लिए

हम जानते हैं

धुआँ खून और चीख बहुत पहले से मौजूद है

इन सबकी छाप है हमारे विचारों पर

अपने विचारों से ज्यादा दूर नहीं गये हैं हम।"[22]

"बचा ले आये हैं हम रोटी में नमक बराबर जीवन

सलामत हैं, हमारे सर चक्कर खाते हुए

आत्मा के दरवाज़े से गुजरते हुए हम सोचते हैं,

करुणा राहत उदारता के बारे में।"[23]

इस इस कविता के माध्यम से कवि इंसान के अंदर की निराशा को दूर करना चाहते हैं। वे लोगों को कहते हैं कि, उठो चलो निराशा को हमें दूर करना है। वह हमारे मन के अंदर है लेकिन वह कहीं दूर नहीं गयी है। हमारे पास मौका है उस निराशा को दूर करने का अगर हम कोशिश करें तो इस निराशा को दूर कर सकते हैं और करुणा की उदारता के बारे में सोच सकते हैं।

कवि मंगलेश की आस्था, भयावहता और युगीन विकृतियों के बीच भी आशावादी स्वर नहीं छोड़तेहै।मंगलेश डबराल ने कई कविताओं में आदमी के भीतर बाहरी निराशाओं, समझौताओं,

और संघर्षों के बावजूद जो इच्छाओं, सपनों और उम्मीदों से भरा जीवन है उसके बारे में यूँ लिखते हैं (**पुनर्रचनाएं**)

"बाहर एक बांसुरी सुनाई देती है

एक और बांसुरी है

जो तुम्हारे भीतर बजती है

और सुनाई नहीं देती।"[24]

कविकहना चाहतेहैं कि, आशा कभी भी मरती नहीं वह कभी-कभी सो जाती है, उसे जगाना आवश्यक है। जीवन में सुख की प्राप्ति आशा से ही संभव होती है। मंगलेश आशावादी विचार को व्यक्त करते हैं।आशा को हमें जीवित रखना ही होगा। निराशा में आशा की किरण व्यक्ति में पुनः खुशहाली ले आती है। कभी-कभी आशा के कारण अप्राप्य चीज़ भी प्राप्त होती है, बस उसके लिए प्रयत्न करने की जरूरत होती है। हम प्रयत्न तब करेंगे जब हममें आशा जीवित रहती है। आशा ही एक ऐसी चीज़ है जो हमें ऊँचाई तक ले जा सकती है ।

कवि मंगलेश निराशा में आशावादी स्वर ढूँढ़ते हैं। जो कि उनकी कविताओं में आदमी निराश होकर अंधेरे का सहारा लेकर बैठा है और औरत डर के मारे अपने आप को बचाने की कोशिश कर रही है, लेकिन कवि उम्मीद की लड़ाई करना चाहते हैं क्योंकि कवि जानते हैं कि उम्मीद की डोर लेकर ही इन्सान शिखर की चोटी तक पहुँच सकता है। जीवन के लिए, आस्थामय संघर्ष, जिजीविषा और विपरीत स्थितियों में रोशनी की तलाश कवि का मूल स्वर है।

मंगलेश आशावादी के साथ-साथ जीवनोत्सवधर्मी कवि है। वे जीवन को उत्सव के रूप में अपनाते हैं इसलिए वे**'बच्चोंके लिए चिट्ठी'**कविता में कहते हैं-

"प्यारे बच्चों जीवन एक उत्सव है, जिसमें तुम हँसी की तरह फैले हो।

जीवन एक हरा पेड़ है जिस पर तुम चिडियों की तरह फड़फड़ाते हो।

जैसा कि कुछ कवियों ने कहा है जीवन एक उछलती गेंद है और

तुम उसके चारों ओर एकत्र चंचल पैरों की तरह हो।"[25]

यहाँ मंगलेश जीवन को एक उत्सव, पर्व के रूप में देखते हैं। वे जीवनको बच्चों की हँसी की तरह फैली हुई मानते हैं। जिसमें मृदुता कोमलता निश्छलतानिरीहता एक मुग्धता होती है। कवि मंगलेश की आस्था, भयावहता और युगीन विकृतियों के बीच भी आशावादी स्वर नहीं छोड़तीहै।

एक कविता है **'बार-बार कहता था'** उसमें कविकहते हैं –

"जोरों से नहीं बल्कि

बार-बार कहता था मैं अपनी बात

उसकी पूरी दुर्बलता के साथ

किसी उम्मीद बतलाता था निराशाएँ।"[26]

इस कविता के जरिए कविकहते हैं कि, उन्होंने बार-बार कहा था की निराशा को छोड़ना है और उम्मीद जगनी है। उन्होंने पूरे मन से, ताकत से बताने की कोशिश की है की, निराशा में बदलाव आ सकता है अगर मन में उम्मीद है तो और यह उन्होंने बार-बार कहाथा।

मंगलेश की इन तमाम कविताओं के बाहर की दुनिया के बीचोंबीच फैली हुई यह भीतर की दुनिया है। कवि यहाँ बैठकर बीते हुए दिन को देखता है, उसके असर की आँच को मद्धम हो जाने देता है, फिर दोबारा इस दुनिया में लौटने का मन बनाता है । मंगलेश ने कहा भी है बाहरी दुनिया मुझे बड़ी विस्फोटक लगती है। मैं बाहरी दुनिया को उतना ही समझ पाता हूँ जितना वह मेरे अंदर आ चुकी होती है।

1.3.1.4 मानवीय तथा पारिवारिक रिश्तों को आत्मीयता से जोड़ना :-

मंगलेश की कविता में परिवार की उल्लेखनीय उपस्थिति है। मंगलेश की कविता में यह परिवार बार-बार आता है। **'बारिश'** कविता में एक समग्र दृश्य हमें देखने को मिलता है

“एक रात मैं घर लौटा जब बारिश थीपिता

इंतज़ार करते थे, माँ व्याकुल थीबहनें दूर से एक साथ

दौड़ी चली आयी थींबारिश में हम सिमटकर

पास-पास बैठ गयेहमनेपुरानीतस्वीरेंदेखीं।”[27]

इस कविता में माता-पिता, बहनें आदि परिवार जनों को लेकर इस कविता की रचना की गयी है। वे कहते हैं कि, एक बेटा रात को बारिश में भीगकर लौटता है और उसे देर हो जाती है तब, एक पिता इंतजार करते रहते हैं। मां व्याकुल हो जाती है। बहने राह देखती रहती है और जब उनका भाई दिखाई देता है तब वह दौड़ती चली जाती है।इस तरह परिवार के आपस के संबंध को दिखाने की कोशिश की है।

मंगलेश की कविताओं में संबंधों की दुनिया का मानवीय चेहरा उपस्थित है। जहाँ तमाम अनुभवों के साथ बूढ़े पिता है, उदास माँ है, संघर्ष में साथ देनेवाली पत्नी भी है, स्कूल जाते बच्चे भी है और इन आत्मीय लोगों के बीच हत्यारे भी है। कवि मंगलेश कविता के मानवीय पहलु से जुड़े हैं। ‘हम जो देखते हैं’ मंगलेश की कवितायें युगीन परिवेश से कटे बिना पारिवारिक संदर्भों से, जुड़ गयी हैं। ‘दादा की तस्वीर’ ‘पिता की तस्वीर’ ‘अपनी तस्वीर’ ‘पिता की स्मृति में’ आदि कविताओं को उदाहरण के रूप में ले सकते हैं।

कवि पुरानी पीढ़ी के गुणों और मूल्यों को काव्य-स्तर पर लाना चाहते हैं, जिनके आधार पर पुरानी और नयी पीढ़ी के बीच आये हुए फर्क को रेखांकित किया जा सके। मंगलेश अपने अनुभव को कविता में व्यक्त करते हैं। इसके साथ-साथ **‘पिता’** कविता में मंगलेश पिता की याद करते हैं-

“बूढ़े हो गये हैं पिता

बहुत बूढ़े हो गये पिता

अगर वे दाढ़ी उगाते

तो वह होती चमकीली सफेद

लंबी लहराती

दिव्य पुरुष जैसी

कुछ बच्चे भी होते दाढ़ी पकड़

झूला झूलते।"[28]

इस कविता में मंगलेश गहराई से अपने पिता को याद करते हुए उनके बारे में बताने काप्रयास करते हैं। वे कहते हैं कि, जब दाढ़ी बढ़ती है और वह सफेद हो जाती है तब,उनकी जिंदगी का समय कम होता जाता है। वह सफ़ेद दाढ़ी सिर्फ दाढ़ी नहीं होती वह, उनके बच्चों के लिए एक मजेदार साधन भी होता है जिससे, बच्चे उनके दाढ़ी को पकड़ कर झूलते हैं और इन सब बातों को कवि याद करते हैं।

मंगलेश **'शुरुआत'** कविता में पिता बेटों की भलाई के लिए अपना खून बहा रहा है। पिता का चट्टानों को भी तोडकर अपनों के लिए रास्ता बनाना मर्मस्पर्शी बना है। पिता बच्चों के सुनहरे भविष्य के सपने देखते थे-

"औरउन्होंने देखा था बेटे-बेटियों का बढ़ना

चट्टानें तोड़कर निकाले थेरास्ते

शाम के आसमान में चहकते पक्षियों की तरह

उसके भीतर सपने उड़ते थे।"[29]

पिता का अपने घर के प्रति तथा घरवालों के प्रति कर्तव्य भाव अपने आप में असाधारण-सा होता है। अपने बाद घर का क्या होगा? यह विचार पिता को काँपने पर मजबूर करता है। जब घर के सारे सदस्य रात को गहरी नींद में होते हैं तब पिता रात भर जागते रहते हैं।

मंगलेश अपनी कविता **'अत्याचारियों की थकान'** कविता में बच्चों के बारेमें लिखते हैं –

"बच्चों के पास आकर

थकान मिट जाती है उनकी

जो पैदा हुई थी करके अत्याचार।"[30]

मंगलेश कहते हैं कि बच्चों को देखकर मन में एक नई उमंग भरकर आती है। बच्चे को देखते ही इन्सान अपना सुख-दुख भूल जाता है। और उसका दोस्त बन जाता है। बूढ़ा भी उसके सामने छोटा बन जाता है। बच्चे के साथ छोटा बनना अपमान की बात नहीं है। बल्कि खुशी की बात है। ऐसे में थकान मिटाने के लिए बच्चों का दर्शन ही काफी है, इस प्रकार माँ पिता, दादा, बच्चे, नींद, बचपन, सपने मंगलेश की कविता के स्थायी उपकरण है।

'पिताकीतस्वीर'कवितामेंमंगलेशपिताकेबारेमेंलिखतेहैं-

"उनकी आँखों में कोई पारदर्शी चीज़

साफ़ चमकती है

वह अच्छाई, है या साहस

तस्वीर में पिता खासते नहीं

व्याकुल नहीं होते

उनके हाथ-पैर में दर्द नहीं होता

वे झुकते नहीं समझौता नहीं करते।"[31]

मंगलेश दादा की तस्वीर, पिता की तस्वीर और अपनी तस्वीर नामक कविता में पीढ़ी दर पीढ़ी श्रेष्ठ मानवीय गुणों की उपस्थिति के बारे में बता रहे हैं, जो 'दादा' के बाद अपनी पीढ़ी के लोगों में लगातार कम होती जा रही है। इन कविताओं में युगीन संदर्भ है। मंगलेश इसमें मानवीय पहलुओं के गिरते हुए दिखाते हैं, साथ ही साथ युगीन परिवेश से कटे बगैर पारिवारिक संबंधों से जुड़ भी जाते हैं। उनकी कविताओं में आत्मीय अनुभवों का यथार्थ है। पिता के बुढ़ापा उनकी शारीरिक शैथिल्यता है ही, किंतु उसमें प्रेम का सहज बखान है। कहीं कहीं पिता के न रहने पर पिता की स्मृतियों का जीवंत पुनस्थापन प्रतीत होता है ।

मंगलेश की कविताएँ जलरंगों से बनी पारदर्शी तस्वीर के समान लगती हैं। जिसमें दृश्य फैलता है लेकिन गहरा होता नहीं। बल्कि प्रतिदृश्य फैलता जाता है। **'पैदल बच्चे स्कूल'** कविता का उदा.

"पैदल जानेवाले बच्चों का कोई भरोसा नहीं

वे घर से जल्दी चल पड़ते हैं

और स्कूल पहुँचते हैं अकसर देर से

रास्ते में गंदी हो जाती हैं उनकी पोशाकें जिन्हें

सँभालते हुए वे भागते हैं

आँखें नीची किये खड़े होते हैं क़तार में।"[32]

इस कविता में बच्चे घर से जल्दी-जल्दी पैदल ही चल पड़ते हैं। लेकिन स्कूल ज्यादा तर से देरी से पहुँचते हैं। उनके कपड़े को तो धूल लग गये हैं। वे दौड़ते-दौड़ते स्कूल जा रहे हैं। उनके पास घडी नहीं है जो समय को देखकर चले । उनके नाखून तो वैसे के वैसे ही है जो बच्चों को काटना चाहिए था। संपूर्ण कविता पैदल बच्चों की बात कहती है। लेकिन दोस्ती ही शैली में ।

‘घर का रास्ता’ संग्रह की ज्यादा से ज्यादा कविताओं में ‘पिता’ बार-बार आते हैं। कहीं अंधेरे में माचिस की तीली बराबर रोशनी माँगते हैं तो कहीं ‘कभी- कभी जब वे खुज़ा नहीं पाते अपनी पीठ तो कहता है’ अरे कोई खुजाता मेरी पीठ कहता है। जाहिर है कि कवि की पिता के प्रति ऐसी हमदर्दी केवल भावुकता या रिश्ते को निभाने की मजबूरी नहीं है बल्कि पिता से उसका रिश्ता कही बहुत गहरे अर्थ में वंशवृक्षी तो कहता है या खून से जुड़ा रिश्ता है जिसे कवि अनुभूति के धरातल पर गहरी मानवीय ऊष्मा से भर देता है।

मंगलेश की **‘शुरुआत’** कविता एक विशिष्ट कविता है। इस कविता में पारिवारिक धरातल पर ये रिश्ते सिर्फ याद करने के लिए ही नहीं बने हैं। इस कविता में कि बूढ़े पिता की कठिन जिन्दगी का मार्मिक चित्रण है जो जिन्दगी के कठिन मुकाम पर अपनी जिन्दगी से माचिस की तीली भर रोशनी की मदद माँगते हैं ताकि वे जीवन संघर्ष में जूझ सके।

“सामनेनंगेपहाडपर

जैसेहीचाँदचमकताहै

अंधेरेमेंपितामाँगतेहैंथोड़ी-सीमदद

माचिसकीतीलीबराबररोशनी।”[33]

शहर या गाँव मंगलेश की कविता में जगहें नहीं है अतीत या गाँव की उपस्थिति यहाँ गृह-विरह भी नहीं है, दरअसल व्यापारिक और बनावटी दुनिया के बीच गुम हो गयी या होती जा रही है। सहजता और सरलता को ही इनके जरिये पुकारा गया है । अतीत के प्रति दिखाई देनेवाला लगाव उसे लौटाने के लिए नहीं, बल्कि वर्तमान से उसके स्वाभाविक और विवेकसंगत संबंधों से कट जाने की जरूरी चिंता है या यों कहे कि उनके पारस्परिक संबंधों को कई तरह से कई स्तर पर पहचानने की कोशिश है जिन्हें हम ‘कुछ अंधकार पत्थरों की कहानी ‘पिता’ शुरुआत और ट्रेन में कविताओं को एक साथ पढ़कर जान सकते हैं। मंगलेश ने यहाँ पीढ़ियों के फासले को पीढ़ियों के रिश्तों में पहचानने की कोशिश की है। यह इसलिए सही है कि इन्कार का तेवर, हमेशा ही

न्याय का तेवर नहीं होता स्वार्थ, संवेदनहीनता और अन्याय का बहाना भी होता है। इसी तरह श्रृद्धा और लगाव हमेशा सकारात्मक नहीं होते। वे अतीत की अवांछित कैदी भी होते हैं। इन तमाम मुद्दों को मंगलेश ने सार्थक विवेक के धरातल पर और उससे ज्यादा इन्सानी धरातल पर तौलना चाहा है।

समकालीन कविता संबंधों के टूटन की चर्चा करती है, परंतु एक स्थितिऐसी आती है जब मनुष्य पुनः उन आदर्शों की ओर लौटना चाहता है, उन रिश्तों कोनिभाना चाहता है, जहाँ से उसने जीना सीखा। माता-पिता के प्रति रिश्तों के प्रतियह जुडाव हमारी परम्परा की पहचान है।

संदर्भ सूची

1. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 9-10
2. समकालीन हिंदी कविता का समाजशास्त्र, डॉ. साईनाथ उमाटे,पृ. 15
3. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 10
4. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 13
5. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 12
6. समकालीन हिंदी कविता का समाजशास्त्र, डॉ. साईनाथ उमाटे,पृ. 15
7. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 13
8. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 11
9. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 11
10. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 11
11. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 13
12. मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. श्रीमती विघावती जी. सरस्वती, पृ. 12
13. मंगलेश डबराल,'आवाज भी एक जगह हैं', 'तारे के प्रकाश की तरह' पृ. 69
14. मंगलेश डबराल, 'घर का रास्ता', 'प्रेम करती स्त्री'पृ. 15
15. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', 'अगले दिन' पृ. 18
16. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'संरचना' पृ. 25
17. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', 'थकान' पृ. 35
18. मंगलेश डबराल,'पहाड़ पर लालटेन', 'थकान' पृ. 35
19. मंगलेश डबराल,'हम जो देखते हैं', 'मैं चाहता हूँ' पृ. 84
20. मंगलेश डबराल, 'हमजोदेखते हैं', 'अपनाअंधकार', पृ. 63

21. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'शोकगीत', पृ. 38
22. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'दिनचर्या', पृ. 61
23. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'दिनचर्या', पृ. 62
24. मंगलेश डबराल,'हम जो देखते हैं', 'पुनर्रचनाएं', पृ. 93
25. मंगलेश डबराल,'हम जो देखते हैं', 'बच्चों के लिए चिट्ठी', पृ. 30-31
26. मंगलेश डबराल,'हम जो देखते हैं','शबार-बार कहता था', पृ. 18
27. मंगलेश डबराल,'हम जो देखते हैं', 'बारिश', पृ. 22
28. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'पिता', पृ. 40
29. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'शुरुआत', पृ. 37
30. मंगलेश डबराल,'पहाड़ पर लालटेन', 'अत्याचारियों की थकान', पृ. 66
31. मंगलेश डबराल,'हम जो देखते हैं', 'पिता कीतस्वीर', पृ. 25
32. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'पैदल बच्चे स्कूल', पृ. 30
33. मंगलेश डबराल,'घर का रास्ता', 'शुरुआत', पृ. 36

द्वितीय अध्याय

युगबोध

2. युगबोध

2.1. युगबोध का अर्थ

'युग' को समय एवं काल के रूप में भी जाना जाता है। मानक अंग्रेजी हिंदी कोष के अनुसार 'युग' का अर्थ है समय, जमाना, समयावधि आदी है। ज्ञान, जानकारी आदि 'बोध' का शाब्दिक अर्थ है। इतिहास का कोई ऐसा बड़ा कालखंड जिसमें बराबर एक ही प्रकार के कार्य, घटनाएं हो, युग चेतना अथवा युगबोध कहलाता है। युगीन प्रवृत्तियाँ समय के साथ-साथ निरंतर बदलती रहती है। जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद इत्यादि। अतः कहा जा सकता है कि किसी भी निश्चित समयावधि में किसी विशेष प्रवृत्तियों को युग की संज्ञा दी जाती है।

संवेदना के अनुरूप रचनाकार अपनी रचना में युगीन प्रवृत्तियों का चित्रण करता है। किसी भी युग में तत्कालीन परिस्थिति का जो रूप है उसके अनुरूप रचनाकार का साहित्य में वैसे ही बोध हो उसे युगबोध कहा जाता है।युगबोध के माध्यम से युग की सभी परिस्थितियों को ठीक-ठीक जाना जा सकता है। समाज में प्रचलित सभी प्रकार की परिस्थितियाँ आम जनता को प्रभावित करती हैं, लेखक भी इन परिस्थितियों से प्रभावित होकर, अपनी कलात्मक चेतना के माध्यम से अपने कार्यों को निरंतर करता रहता है। युगबोध को अपनाकर ही लेखक अपने समय की सच्चाई को व्यक्त कर सकता है। इसलिए किसी भी युग का निर्माण उसकी मुख्य प्रवृत्तियों के आधार पर होता है।

साहित्य जीवन के हर एक पक्ष को अभिव्यक्त करता है। साहित्य का युगबोध से प्रत्यक्ष संबंध रहता है। साहित्य समाज के युगीन विशेषताओं के अनुरूप मानव जीवन एवं समाज को दिशा निर्देशन करता है। इस प्रकार साहित्य अपने विषय में युग को ही प्रस्तुत करता है। युगबोध साहित्य की पृष्ठभूमि, चेतना और परिणति सभी स्तरों को प्रभावित करता है। इस प्रकार साहित्य और युगबोध का संबंध अटूट है। साहित्य में अभिव्यक्त अपने समय के यथार्थ वर्णनों से युगबोध को समझ सकते हैं। युगबोध को समझने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

2.2. युगबोध की परिभाषा

युगबोध समय की मान्यताओं एवं स्थितियों के सन्दर्भ में एक जानकारी होती है। साहित्यकार व लेखक अपनी गहन दृष्टिकोण और व्यापक चिंतन के कारण समाज में घटित सभी घटनाओं अथवा परिस्थितियों को अपनी रचना में वर्णित करता है। साहित्य समाज का ही एक अंग है। इसके कारण साहित्यकार रचना के लिए समाज से ही प्रेरणा लेता है। अपने देश एवं समाज के सभी परिस्थितियों से कोई भी रचनाकार प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। भारतीय विभिन्न विद्वानों ने युगबोध को अपने अपने तरीके से परिभाषित किया है। उनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार है-

डॉ. हरिश्चद्र वर्मा के अनुसार "रचनाकार के मन पर अपने युग की समस्याओं का दबाव अवश्य ही रहता है। कोई भी रचनाकार अपने युग से ऊपर उठकर उन भाव सत्यों की खोज या मूल्यों की खोज करता है जिसका उसके समकालीन परिवेश में अभाव है और जिनकी उपलब्धि से युगीन विकृतियों का सांस्कृतिक समाधान खोजा जा सकता है। इस प्रकार युगबोध के तीखेपन में ही कवि की मनीषा उदात्त जीवन मूल्यों का अनुसंधान करती है।"[1]

वे कहते हैं कि, कोई भी रचनाकार साहित्य लिखते समय अपने समकालीन परिवेश के बारे में सोचता है। उस वक्त के समस्याओं को अपने साहित्य में उताराता है। और पाठकों को उस समय के विषयों से मेल कराता है।

डॉ. रणधीर सिंहा के अनुसार "यह एक विशेष काल में घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी होता है।"[2]

वे कहते हैं कि, हर एक काल में कुछ न कुछ घटनाएं घटित होती है, जो उस काल की जानकारी देती है। उसी तरह किसी एक विशेष काल में घटित घटनाओं की जानकारी देता हो, तो उसे युगबोध कहा जाता है।

दिनकर के अनुसार- "युगबोध में साहित्यकार अपनी गहन व्यापक एवं सूक्ष्म दृष्टि से समाज की सभी परिस्थितियों तथा घटनाओं का चित्रण अपने साहित्य में करता है।"[3]

वे कहते हैं कि, साहित्यकार जब भी साहित्य रचता है तब वे अपने गहन अध्ययन एवं साहित्यिक दृष्टि से अपने उस काल के परिस्थितियों तथा घटनाओं को का चित्रण अपढ़ने साहित्य में करते है।

निष्कर्षत: आधुनिक रचना के क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चित शब्द युगबोध है। युगबोध समय की मान्यताओं एवं स्थितियों के सन्दर्भ में एक जानकारी होता है। साहित्यकार व लेखक अपनी गहन दृष्टिकोण और व्यापक चिंतन के कारण समाज में घटित सभी घटनाओं अथवा परिस्थितियों को अपनी रचना में वर्णित करता है। साहित्य समाज का ही एक अंग है। इसके कारण साहित्यकार रचना के लिए समाज से ही प्रेरणा ग्रहण करता है। अपने देश एवं समाज के सभी परिस्थितियों से कोई भी रचनाकार प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। भारतीय विभिन्न विद्वानों ने युगबोध को अपने अपने तरीके से परिभाषित किया है।

इन परिभाषाओं आधार पर हम यह कह सकते हैं कि युगबोध से समय की स्थिति तथा परिवेश का ज्ञान प्राप्त होता है। युग विशेष के विविध जीवन अनुभव का इसमें उल्लेख रहता है। युगबोध में परिस्थिति के साथ-साथ युग का सर्वांगीण ज्ञान एवं उपलब्धियां भी समाहित होती है। युगबोध एक चिंतनधारा है जो चेतना के स्तर पर प्रभावित करती रहती है।

2.3. युगबोध के विविध आयाम

2.3.1 सामाजिक युगबोध:

मनुष्य और समाज एक दूसरे के बिना अधूरे है। समाज में मानव जीवन के विभिन्न पहलू दिखाई देते है। समाज के बिना व्यक्ति की गति नहीं होती। परिवर्तन के साथ युगबोध की मान्यताएं भी बदलती रहती है। बौद्धिक काल का युगबोध धर्म संचालित था। प्राचीन काल में समाज राजाओं

और सैनिकों के कार्यों से संचालित होता था। भक्ति काल में भक्ति की उपस्थिति प्रचल थी। आधुनिक काल की शुरुआत के बाद से, सामाजिक धारणा में काफी बदलाव आया है। आज़ादी से पहले और बाद में भारतीय समाज में व्यापक बदलाव आया है।

युगबोध एक दृष्टि है जिसके द्वारा लेखक अपने समय के समस्त विशेषताओं को देखने की कोशिश करता है। साहित्य समाज को दिशा निर्देश करता है और कई बार स्वप्रभावित भी हो जाता है। युगबोध के द्वारा ही साहित्यकार अपने तत्कालीन परिवेश एवं स्थिति को अपनी रचना में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। आज के समय में हमारी सामाजिक परंपरा संयुक्त परिवार आदि के अस्तित्व विलीन हो रहे हैं। आज वर्ग भेद देखा जा सकता है। कह सकते हैं कि, युगबोध के कारण समाज एवं साहित्य में बदलाव दिखाई देता है।

2.3.2 राजनीतिक युगबोध :

'राज' एवं 'नीति' दो शब्दों के योग से राजनीति शब्द बना है। 'राज' शब्द का अभिप्राय राज्य से है और 'नीति' का अर्थ नियम से है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राज्य या शासन को संचालित करने वाले नियम ही राजनीति है।

मानव के सामाजिक जीवन को व्यवस्थित रूप से शुरू करने के लिए राजनीतिक चेतना का उदय हुआ। इसका प्रारंभ परिवार के मुखिया से होकर राजा, सम्राट और प्रधानमंत्री के रूप में व्यक्त है। राजनीतिक परिस्थिति ने मानव समाज को शुरूआत से ही किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किया है, साथ ही उस काल के युगबोध के निर्माण में भी राजनीति की चेतना ने अहम भूमिका निभाई है। राजतंत्र में प्रजा को राजा के हुक्म का पालन करना पड़ता था। उस समय प्रजा के पास शासन के प्रति आवाज उठाने का कोई अधिकार नहीं था। लोकतंत्र प्रणाली में जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देता है। जो परिवर्तित राजनीतिक युगबोध का परिचायक है।

समाज निर्माण और व्यक्ति के परिवर्तन में राजनीति का स्पष्ट योगदान दृष्टिगत होता है। अपने युग के प्रति संवेदनशील और समाज के परिवेश के प्रत्यक्षदर्शी साहित्यकार राजनीति के स्वरूप परिवर्तन के प्रभाव से दूर नहीं रह सकता। साहित्यकार अपने समय की राजनीतिक व्यवस्था से प्रभावित होकर साहित्य की रचना करता है। जिसमें व्यवस्था के विरोध का स्वभाव साफ नजर आता है। लेखक अपने समाज से प्रभाव ग्रहण करते हुए देश की राजनीतिक व्यवस्था से प्रभावित होता है। किसी भी युग की परिस्थितियों को बनाने में राजनीति का योगदान अतुलनीय है। लेखक अपने युग की राजनीति को भली-भांति समझता हैं और उसे अपनी कृतियों में व्यक्त करता है। लेखक जिस युग में रहता है उसकी छाया और जिस युग में वह अपनी रचनाएँ रचता है उसकी राजनीति उसकी रचना में झलकती है। आजादी के बाद भारतीय राजनीतिक व्यवस्था बहुत तेजी से बदली है। आज लोकमंगल की भावना को भुलाकर राजनीति आत्मकेंद्रित और संकीर्ण दायरे में सिमट कर रह गई है। वर्तमान में राजनीति पद, प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभ के उद्देश्य पर आधारित हो गई है न कि सिद्धांतों और मूल्यों पर। ऐसी राजनीतिक स्थिति के कारण आज भारत जैसे देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था नष्ट होती जा रही है। समकालीन रचनाकारों की रचनाओं में आजाद भारतीय राजनीति के कुछ अत्यंत भयावह वास्तविकताओं और त्रासद परिस्थितियों को प्रस्तुत किया है।

2.3.3 आर्थिक युगबोध :

एक व्यवस्थित समाज और उसकी व्यवस्था के लिए सबल आर्थिक व्यवस्था आवश्यक रहती है। साधारण शब्दों में अर्थ को धन, पैसा, संपत्ति आदि शब्दों से परिभाषित कर सकते हैं। मनुष्य जिस समाज में रहता है वहाँ दैनिक जीवन को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। अतः मानव जीवन से इसका प्रत्यक्ष संबंध रहता है। एक व्यक्ति को अपने जीवन को व्यपस्थित ढंग से चलाने के लिए एक मजबूत आर्थिक स्थिति का होना अनिवार्य है, ठीक उसी रूप में एक देश को अपना विकास एवं सुरक्षा के लिए आर्थिक रूप से धनी होना

आवश्यक है। किसी भी देश की आर्थिक स्थिति मजबूत हो तो वह देश की सभी परिस्थितयाँ मजबूत हो जाती है।

युगबोध को प्रभावित एवं परिवर्तित करने में आर्थिक स्थिति का अहम योगदान रहता है। आर्थिक स्थिति पर एक समाज का संपूर्ण ढांचा निर्भर रहता है। इस भौतिकवादी युग में अर्थ का महत्व और अधिक बढ़ गया है। इस समय हमारे समाज से मानवता जैसे शब्द लुप्त हो रहे हैं। एक व्यक्ति को उसकी आर्थिक स्थिति के अनुरूप सम्मान और प्रतिष्ठा दि जाती है। हमारे समाज मे आर्थिक व्यवस्था के चलते ही आज उच्च-निम्न, शोषक-शोषित आदि वर्गों का विभाजन हुआ है। त्याग, सेवा, धर्म आदि को वर्तमान युग के अर्थ प्रदान संस्कृति ने नष्ट कर दिया है। आज एक पूंजीपति और अधिक अपना साम्राज्य खड़ा कर रहा है तो एक गरीब व्यक्ति को रोजी रोटी के लिए भूख से जूझ रहा है। इस प्रकार से हमारे देश में आर्थिक युगबोध का परिवर्तन दृष्टिगत होता है।

वर्तमान समय के रचनाकार इस प्रकार की स्थितियों को अपनी रचनाओं में साफ-साफ दर्शाते हैं। आर्थिक समस्या के कारण ही हमारे समाज में शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, घूस जैसी परिस्थितियां उपस्थित होती है। इस तरह की आर्थिक व्यवस्था को रचना में स्पष्टतः देखा जा सकता है। अतः कह सकते हैं कि किसी भी रचनाकार के लेखन में युगबोध उपस्थित रहता ही है।

2.3.4 सांस्कृतिक युगबोध :

संस्कृति साहित्य की भांति समाज से अभिप्राय रखती है। समाज के लोगों के रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेश-भूषा, पर्व-त्यौहार इत्यादि को संस्कृति कहा जाता है। मानव सभ्यता में इसका प्रभाव साफ-साफ नजर आता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति के अनुरूप पलता-बढ़ता है और उसी के अनुसार अपने कार्य को संचालित करता है। संस्कृति से मानव जीवन को संस्कार मिलता है। लेखक भी जिस संस्कृति में पलता-बढ़ता है उसी के अनुरूप उसका मानसिक विकास होता।

इसलिए सभी रचनाकार अपने आस-पास की संस्कृतियों को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करता है।

समय परिवर्तनशील है। समाज में जो बदलाव घटित होता है उसी के समानान्तर युगबोध भी बदलता है। इसी के फलस्वरूप संस्कृति प्राचीनता एवं नवीनता को धारण करते हुए अपना विकास करती है। मनुष्य अपनी बुद्धि के जरिये संस्कृति का संरक्षण करता है एवं समाज में हो रहे बुराइयों, कुरीतियों तथा अन्यायों का विरोध करता है।

साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी देश, समुदाय या जाति आदि की संस्कृति को समझा या जाना जा सकता है। साहित्य और संस्कृति का समाज से गहरा संबंध है। रचना में रचनाकार संस्कृति के प्रभाव को बहुत ही कुशलता से अलंकृत करता है। इसलिए साहित्य और संस्कृति एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करते हैं। युग की सांस्कृतिक जागृता के लिए रचना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2.3.5 धार्मिक युगबोध :

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इसी परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक प्रवृत्तियां भी बदलती रहती है। धर्म का अर्थ व्यापक एवं विस्तृत है। इसका संबंध मनुष्य से है। अतः सामाजिक बदलाव के साथ-साथ धार्मिक प्रवृत्तियां भी बदलती रहती है। मानव समाज में मानवता ही मूल धर्म है। चेतना के माध्यम से ही समाज के धार्मिक स्वरूप में परिवर्तन आता है। इस परिवर्तन को युगबोध के माध्यम से समझ सकते हैं।

वर्तमान समय में समाज वैज्ञानिक एवं भौतिक रूप से प्रभावित है। आज मानवीयता समाज से लुप्त हो रही है। धर्म का जो स्वरूप वर्तमान युग में दृष्टिगत होता है वह रूढ़िगत परंपरा से पूर्ण धार्मिक भय, अंधविश्वास मात्र है। इसी के परिणाम स्वरूप आज पूरे देश में धार्मिक प्रदर्शन एवं आतंक फैला हुआ है।

साहित्यकार समाज को आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा पुनः जीवित करना चाहता है। मानव जीवन एवं समाज में धर्म का अहम भूमिका है। मानव जाति को संयमित, नियमित बनने के कारण धर्म एक महत्त्वपूर्ण संस्कृति पक्ष है। धार्मिक युगबोध भी मानव को कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का बोध कराकर कर्त्तव्य की ओर करता है।

निष्कर्षतः इस प्रकार युगबोध की अवधारण एवं विविध आयामों को देख सकते हैं। जैसे-जैसे समय में परिवर्तन होता जाता है ठीक उसी तरह युग भी परिवर्तित होता है। सामाजिक मूल्य परिवर्तन में नए एवं प्राचीन अवधारणाओं में संघर्ष भी दिखाई पड़ता है। अतःहर एक युग में नए मूल्यों का निर्माण होने में एवं अलग युगबोध की अवधारणा उत्पन्न होने में विविध आयामों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है। इन आयामों को रचनाकार अपनी रचनाओं में जगह देता है एवं इसके माध्यम से अपने अपने युग के सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं को दिखाने का प्रयास करता है।

<u>संदर्भ सूची</u>

1. वर्मा हरिश्चंद्र, तुलसी साहित्य में शारीर विज्ञान और मनोविज्ञान, पृ. 27
2. सिंह, डॉ. रणधीर, कवि बिहारी लाल और उनका युग, पृ. 38
3. दिनकर, रामधारी सिंह, साहित्य मुखी, पृ. 11

तृतीय अध्याय

समकालीन कविता और मंगलेश डबराल

3. मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध

3.1राजनीतिकबोध

राजनीति एक मायने में समाज नीति होती है। मानव, शिक्षा, समाज, स्वास्थ्य, तथा विज्ञान आदि संबंधी उपक्रम प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में देश की राजनीति से संबंधित होते हैं।जहाँ तक आदमी का संबंध है वह राजनीति का सक्रिय भोक्ता होता है। सच्चे कवि के लिए मानव द्रोही राजनीति का विरोध करना आवश्यक होता है।

राजनीति कवि के अस्तित्व और व्यक्तित्व से जुड़ी है। समकालीन कविता का मनुष्य सामाजिक-राजनीतिक चिंता के समूचे बोध के साथ सामने आता है। समकालीन दौर में राजनीति के क्षेत्र में दृष्टिगोचर होनेवाले कई प्रकार के संकटों पर पर्याप्त मात्रा में कविताएँ लिखी गई हैं।

मंगलेश की विशेष रूप से उल्लेखनीय कविताएँ जो समकालीन कविता में सबसे ज्यादा अधिक राजनीतिक समझी गयी है। 'पहाड़ पर लालटेन' की कविता में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण है। 'पहाड़ पर लालटेन' की कविताएँ उस दौर की है, जब समाज में बहुत हलचल और उथल-पुथल थी। 'साम्राज्ञी' कविता जो स्थूल रूप से इन्दिरा गांधी को लेकर लिखी गयी थी। इस संग्रह की कविताएँ निराशा और दहशत और आपत्काल से जुड़ी है।

मंगलेश डबराल की कविताएँ राजनीति का सीधा साक्षात्कार प्रस्तुत करती हैं। जनता की यातनाएँ और वेदनाएँ अपनी ही समझकर उनको दूर करने के लिए उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रयत्न किया है। मंगलेश की कविताओं में राजनीतिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

3.3.1 लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रहार

कवि मंगलेश डबराल की कविताएं लोकतांत्रिक व्यवस्था पर तीखा प्रहार करती है। लोकतंत्र का सच्चा चित्र कविताएं प्रस्तुत करती है।राजनीति का अपराधियों के साथ ताल-मेल है। राजनीति, जो सुदृढ़ समाज बनाने की शक्ति है वह आज अपंग ही नहीं मनुष्य के विरोध में हो गयी है।

लोकतंत्र अपराधियों, अत्याचारियों के साथ हाथ जोड़कर कानून व्यवस्था के ख़िलाफ़ हो गया है।

"उसके नाखुन या दाँत लंबे नहीं है

आँखें लाल नहीं रहतीं

बल्कि वह मुस्कुराता रहता है

अक्सर अपने घर आमंत्रित करता है

और हमारी ओर अपना कोमल हाथ बढ़ाता है

उसे घोर आश्चर्य है कि लोग उससे डरते हैं।"[1]

"अत्याचारी इन दिनों ख़ूब लोकप्रिय है

कई मरे हुए लोग भी उसके घर आते-जाते हैं।"[2]

इस परिचछेदों में अत्याचारी के प्रमाण के बाद की गयी है। एक अत्याचारी कैसा होता है, उसका स्वभाव कैसा होता है, उसकी बात की है। कवि बताना चाहते हैं कि, अत्याचारी आज-कल आम बात हो गई है। हर घर में किसी न किसी रूप में अत्याचारी देखने मिलती है और आश्चर्य की बातयह है कि, लोग सामना करने के बजाय अत्याचारी से डरते है।आगे बढ़कर कवि यह भी कहते हैं कि वह अत्याचारी साधारण किस्म का आदमी नहीं है, बल्कि वह असाधारण आदमी है।

मंगलेश डबराल की **'प्रक्रिया'** कविता की एक-एक पंक्ति वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था पर और उसके ठेकेदारों पर प्रहार करती है–

"कब के मर चुके लोग

फूल मालाएँ पहने दिखते हैं

विजय के इस जुलूस में

मृतकों की एक भीड़

जयकार करती लपकती है.."[3]

यहाँ कवि मंगलेश डबराल यह बताना चाहते हैं कि आज के नेता की आत्मा तो कब की मर चुकी है, फिर भी विजय के फूल-मालाएँ पहने घूम रहे हैं।

3.3.2 सांप्रदायिक दंगे फसाद का विरोध

उनकी कविता आज और इस क्षण की विचारों को व्यक्त करती है। **'दिसम्बर 6'** कविता में प्रासंगिकता और सामाजिकता को दिखाने का प्रयत्न मंगलेश का रहा है। इस कविता में उस वक्त की विषम परिस्थिति का जो व्यक्ति संघर्षरत है, अपने स्वार्थ के लिए मजहब के नाम पर हिंसा प्रवृत्ति पर उतर आयी है, इसका जिक्र कवि करता है।

आज के भ्रष्ट राजनेता गद्दी के लिए सत्ता के लिए खून की होली खेलने के लिए तैयार हो गये हैं कवि मंगलेश कविता के माध्यम से हिंसा प्रवृत्ति को समाप्त करना चाहता है।

मंगलेश की कविता परिपक्व राजनीतिक चेतना की कविता है। इसमें वे एक विद्रोही कवि के रूप में आते हैं। मंगलेश कविता में नेताओं की खबर लेते हैं तो खुद को क्रांति का नियामक मानकर क्रांतिवीरों के साथ मनमाना व्यवहार करते हैं। कविता में मार-फोड़ जातीयता के दंगे-फसाद के खिलाफ मंगलेश ने प्रभावशाली प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त की है।

"रसोईघर में एक गिलास आवाज़- करता हुआ गिरता है

किसी बड़ी खामोशी में डूबने के लिए

दीवार पर पुराना तस्वीरों वाला कैलेंडर

जिसे फाड़कर फेंक दिया गया..।"[4]

यहाँ रसोई घर में 'गिलास का गिरना' उस समय का आवेग है। गिरने से पहले आवाज़ होती है बाद में फिर एक प्रकार का सन्नाटा, लेकिन इस सन्नाटे के पीछे इतिहास है, उस इतिहास का भयानक शोर मन्दिरों, मस्जिदों, गिरिजा घरों के टूटने तथा किलों, महलों के ध्वस्त होने, बस्तियों के जलने का शोर फिर सन्नाटा।

मंगलेश डबराल की कविता की एक खास विशेषता यह है कि इसमें हिंसा, खून-खराबा, हत्या-चीखें कुछ भी नहीं है, फिर भी कवि क्या कहता है इसका अर्थ तो तुरंत होता है।

3.3.3 आपात्काल (इमरजेन्सी)

भारत में आपातकाल एक महत्वपूर्ण घटना रही है।हिन्दी साहित्य में आपात्काल (इमरजेन्सी) की कविता में स्थापित व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह को हम देख सकते हैं। हिंदी के तत्कालीन कवियों ने आपातकाल पर पर्याप्त चिंतन किया है।समकालीन कविता में आपात्काल के दौरान राजनीति और अर्थ तंत्र ने मानव जीवन के आदर्शों की पोल खोल दी। नेताओं की कथनी और करनी का अंतर जनता के सामने स्पष्ट हुआ है।

मंगलेश डबराल की कुछ कविताएँ इमरजेन्सी के दौरान से उपजी हुई है। वे तत्कलीन परिस्थितियों को प्रकट करते हैं। मंगलेश डबराल भी अपने आस-पास की खबरों को अपनी कविता में समेटने का प्रयत्न किया। मंगलेश की **'गिरना'** कविता में एक प्रकार की दहशत के साथ-साथ सन्नाटा भी फैला हुआ है, जो कि इमरजेन्सी के दौरान से उपजी हुई है।

"बर्फकेनीचेदबीहैघास

चिड़िया औरउनकेघोंसले

औरखंडहरऔरटूटेहुएचूल्हे

लोगबिनाखायेजबसोजातेहैं

वहचुपचापगिरतीरहतीहै

बर्फ़मेंजोभीपैरआगेबढ़ाताहै

उसपरगिरतीहैबर्फ़।"[5]

इस कविता में बर्फ 'जड़ता' का प्रतीक है। उस जड़ता तथा क्रूर व्यवस्था के भीतर संपूर्ण समाज, जीवन ही दब गया था। बर्फ गिरते ही घास-पत्ते चिडिया और यहाँ तक कि चिडियों के घोसलें भी नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार क्रूर व्यवस्था के कारण जीवन भी दब जाता है। इस व्यवस्था पर कोई भी प्रश्न चिह्न लगायेगा तो उसकी जबान ही बंद की जाती थी।

आपात्काल में दहशत और आतंक चारों तरफ इस तरह फैला था कि सारा शहर डर के मारे बंद है इसलिए कवि कहता है कि,

"यहाँ आते-जाते

मैंने दुनिया के बारे में सोचा

जो चारों ओर से बंद और डरी हुई थी

हमारे दिमागों की तरह

नंगी पड़ी चीज़ों के बाहर और भीतर

ख़ामोशी थी किताबों में।"[6]

इस कविता में कवि कहते हैं कि, वह आते-जाते हर वक्त दुनिया के बारे में सोचते हैं।वह दुनिया जो चारों तरफ से बंद है और डरी हुई है।वे हर तरफ बाहर भीतर खामोशी ही देख रहे हैं।ऐसी दुनिया के प्रति कवि अपनी भावना व्यक्त करते हैं।

मंगलेश डबराल की और एक कविता है **'साम्राज्ञी'** जो स्थूल रूप से इन्दिरा गांधी को लेकर लिखी गयी थी।

"साम्राज्ञी के बाहर आने में अब देर नहीं है

वह अभी आयेंगी

और अपना दुर्लभ हाथ हिलाकर

सबको धन्य कर देंगी।"[7]

मंगलेश लिखते हैं कि वह 'साम्राज्ञी' है जो इस भयावह और आतंकवादी व्यवस्था को जन्म देनेवाली वह अपने करतूतों को छिपाकर, दुर्लभ हाथ हिलाकर सब जनता को धन्य कर देंगी।

3.3.4 पूँजीवाद

कविता के भविष्य को लेकर विशेष चिंता पूँजीवाद के आगमन के साथ शुरू हुई। जिस समाज में उच्च विचार नहीं है वह समाज पूँजी का गुलाम है। समाज में व्याप्त पूँजी के कारण अच्छी भावनाओं के लिए जगह नहीं है।

भारत की शासन व्यवस्था में पूँजीवादी वर्ग सर्वस्वतंत्र हैं। वे किसान की मेहनत का फल छीनकर उनके पेट से खेलते हैं और उनसे निर्दय, अमानवीय व्यवहार करते हैं। कवि मंगलेश चाहते हैं कि इन पूँजिपतियों के जाल से समाज के असहाय बेबस परिश्रमी लोगों को मुक्ति मिले।

मंगलेश पूँजीवाद राष्ट्र अमेरिका में बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद से उपजे बिखराव, टूटतें मानवीय संबंध एवं यांत्रिक होकर विकृत हो जाने की घटना दिखाते हैं। यहाँ मंगलेश पूँजीवादी, अमेरिका में बाजारवाद से उत्पन्न बिखराव, बिखरते हुए मानवीय संबंधों को दर्शाते हैं।

"अमेरिका में रोना मना है

उदास होना मना है

एक बहुत बडी आँख सबको देख रही है

पीछे मुड़कर जीवन को देखना मना है

वह किस्सा किसे नहीं मालूम

कि आलीशान दुकान में सामान बेचती

एक दुबली-सी-लडकी

जो कुछ सोचती हुई-सी बैठी थी

एक दिन एक ग्राहक के सामने मुस्कुराना भूल गयी

शाम को उसे नौकरी से अलग कर दिया गया

यह बात जब उसका पति उससे अलग हुआ

उसके एक दिन की बाद की है।"[8]

अमेरिका में पूँजीवादी, बाजारवादी संस्कृति के भीतर संपन्नता है लेकिन किसी को किसी के प्रति सहानुभूति नहीं है। इसमें पूँजीवादी साम्राज्यवादी अमेरिका की हकीकत को दर्शाया गया है।

3.3.5 शासक वर्ग के प्रति आक्रोश

मंगलेश डबराल क्रूर शासकों के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं। वेस्थितियों में बदलाव लाना चाहते हैं। मंगलेश डबराल की कविता **'तानाशाह'**इसका सटिक उदाहरण है। कविता में एक तानाशाह है जो अत्याचार, अमानवीयता निर्दयता शाश्वत बनाये रखना चाहता है।

मंगलेश डबराल अपनी कविताओं में तानाशाही, खुंखार, अत्याचारी की सारी साजिशों की पोल खोलते हुए कहते हैं–

"फ़िलहाल सामने से एक कुत्ता निकल रहा है

अपने आलीशान घर की ओर जाता हुआ

जहाँ कुत्ते से अधिक खतरनाक एक आदमी

रोज तुम्हें चौंकाता है:

कुत्ते से सावधान!"[9]

“हमारे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते

तानाशाह कहता है

तुम उठ नहीं सकते सांस नहीं ले सकते

कहीं आजा नहीं सकते

हम न हों तो तुम भी नहीं हो सकते।”[10]

मंगलेश डबराल ने इनपरिच्छेदोमें साम्राज्यवादी और तानाशाहीवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया है।

3.3.6 मार्क्सवाद

मार्क्सवाद यह रूस की देन है। यह एक ऐसी विचारधारा है जो राजनीति और समाज दोनों किनारों के बीच बहती है। मार्क्सवाद ने दुनिया भर के कवियों का ध्यान आकृष्ट किया, उनमें से मंगलेश भी एक है।

मंगलेश डबराल की कविताओं में राजनीतिक काव्य और समाज संबंधी काव्य विचारों से मार्क्सवादी होने के कारण उनकी कविताओं में शोषण और अत्याचार का विरोध किया है। साथ ही साथ शोषितों के प्रति सहानुभूति प्रकट हुई है।मंगलेश डबराल की कई कविताओं में मार्क्सवाद विचारों के प्रमाण मिलते हैं। उदा.-

“यह एक तस्वीर है

जिनमें थोड़ा-सा साहस झलकता है

और गरीबी ढँकी हुई दिखाई देती है

उजाले में खिंची इस तस्वीर के पीछे

इसका अँधेरा छिपा हुआ है।”[11]

मंगलेश रचना के लिए विचारधारा को अनिवार्य मानते हैं, एक प्रतिबद्ध रचनाकार केरूप में वे विचारहीनता में कला की क्षति देखते हैं। विचार के बिना कविता अपनीसार्थकता सिद्ध प्राप्त नहीं कर पाती।

इस प्रकार मंगलेश डबराल अपनी कविता में मार्क्सवाद का चित्रण किया है। शोषक के प्रति जो आक्रोश प्रकट किया है और शोषितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है।

3.3.6 व्यंग्य

मंगलेश का व्यंग्य व्यक्तिनिष्ठ भी है और 'समाज निष्ठ' भी। राजनीतिक दृष्टि में व्यंग्य का विशेष महत्व है। कवि मंगलेश के अनुसार सत्ता व्यवस्था के सामने चमचा बनकर उनका वर्णन करना मानवीयता नहीं है। व्यंग्य की तीखी मार देने के लिए कवि मंगलेश तैयार थे। उदा.-

"गुज़र गयी कई पीढ़ियाँ

सफल कवियों की इस शहर में

फिलहाल देखिए सामने के फोटो में

एक सफल नेता को विनम्र हाथ जोड़ रहा है

एक सफल कवि।"[12]

इस कविता में कवि मंगलेश डबराल अधिकारशाही नेता को नमस्कार करनेवाले कवि पर व्यंग्य करते हैं।

"खाँसी मनुष्य को नृत्य से दूर करती है। खाँसी मनुष्य को मंत्री से दूर

करती है। खाँसी मनुष्य को दूर करती है संस्कृति से।"[13]

मंगलेश डबराल अपनी कविताओं में व्यंग्य तीखी प्रतिक्रियाओं का सहारा न लेकर स्थिति या व्यक्ति का जीवंत शब्दचित्र जागृत करते हैं। 'नृत्य में खासी' कविता संस्कृति और सत्ता के रिश्तों पर व्यंग्य से अधिक अर्थवान है।

जमीन से जुड़े हुए कवि, गाँव की समाज की और देश की रोजमर्रा समस्याओं से भली-भाँति परिचित है। मंगलेश की कविता यथार्थ है, मौलिक है, सहज है, और जनजीवन से जुड़ी हुई है। वे अपनी कविताओं में राजनीति में फैली हुई बुराइयों की बातें करतें हैं। इस प्रकार कवि का सोच का संसार बहुत व्यापक है।

3.2 सामाजिक बोध

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज को छोड़कर मानव जी नहीं सकता। कवि समाज का एक मुख्य अंग है। वह समाज में रहकर समाज का मूल्यांकन करता है। समाज को जागृतावस्था में लाना, एक आदर्श समाज का सुन्दर, सपना, साहित्यकार देखता रहता है।

मंगलेश की काव्य यात्रा मुख्य रूप में सामाजिक विसंगतियों से ही शुरू होती है। इसमें साधारण जनता की दुःख-दर्द, बेचैनी, पूँजीवादी विसंगतियाँ, निम्न तथा मध्यवर्गीय जीवन की तमाम सच्चाइयाँ आदि आत ी हैं। उन्होंने उन विसंगतियों पर घातक प्रहार तथा समाज सुधार का सार्थक प्रयास भी किया है। उनकी रचनाएँ अपने अनुभव पर आधारित होने के कारण उनमें जीवंतता झलकती है। उनके संग्रह की अनेक कविताएँ समाज पर ही आधारित हैं। मंगलेश आज की सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण बेधड़क तरिके से करते हैं। समाज में जो अत्याचार, अन्याय, शोषण, बाजारवाद, आदि है उसका का चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

मंगलेश डबराल की आँखें समाज के इर्दगिर्द घूमती हैं। जिस समाज को उन्होंने देखा उसी समाज के विभिन्न वर्गों को अपनी कविताओं में व्यक्त किया। उन्होंने उच्च वर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग,

तीनों को चित्रित किया है। समाज की चेतना को आवाज़ देनेवाले कवि है। इसलिए उनकी कविताओं में हम समाज का यथार्थ चित्रण देख सकते हैं।

3.2.1 यथार्थता

मंगलेश की कविताओं की एक मुख्य विशेषता यथार्थ का चित्रण है। पहाड़ से भिन्न परिवेश, जिनमें शहर, महानगर और जीवन के दूसरे कई पक्ष शामिल है उनकी कविताओं का महत्वपूर्ण संसार है,जिससे इसने कवि की संवेदना और दृष्टि दोनों को विस्तार मिला है।

संगीत के विभिन्न कलाकारों का यथार्थ चित्रण इनकी कविताओं की विशेषता है। 'अमीर खाँ' 'केशव अनुरागी' 'गुणानंद पथिक' 'वह गाता हुआ लड़का' 'संगतकार' जैसे कलाकारों की ट्रेजेड़ी की गाथा रची गयी है।

केशवर अनुरागी की परंपरा में दिल्ली की बसों में **'गाता हुआ वह लड़का'** है जिसके सुरीले गीत के दाम महज दो रोटियाँ हैं पर वह भी नसीब नहीं। कवि इस गायक बच्चे की ट्रेजेडी को इस देश में कलाकार की नियति मानता है और यथार्थता को सामने लाने का प्रयत्न करता है-

"वह गया हुआ ओझल

रस्ते भर रही मेरे साथ ही मीठी धुन

जिसमें उम्मीदें थीं और ख़ुशी थी

इस तरह महज़ एक रूपैये में मिली मुझे कविता

घर जाकर मैंने वह धुन गायी मन में और रो पड़ा

कितना रहा अकारथ मेरा होना

कैसा विचित्र रात में यह रोना।"[14]

इस तरह मंगलेश की कविताओं में यथार्थता की सच्चाई की आवाज़ है। मंगलेश ने अपने चौथे कविता संग्रह ‘आवाज भी एक जगह है’ में अपनी कविता की आवाज के लिए एक नयी जगह ढूँढ़ी है। **‘अपनी छायाएँ’** कविता में वे कहते हैं-

“उसकी कविताओं में उनकी आवाज़ें हैं

जिनकी कोई आवाज़ नहीं थीं

उसकी कविताएँ मचाती रही एक महासंघर्ष का कोहराम

सर पर आसमान उठाये हुए वे चलती ही रहीं

अब वह सुन नहीं पाता बाहरी दुनिया की आवाज़

उसकी कविता के लोग थके-हारे आधे रास्ते में गिरे हुए

उसके भीतर पानी की तरह हलचल करते रहते हैं।”[15]

इस कविता में कविकहते हैं कि, उनकी कविताओं में एक आवाज़ है उन व्यक्तियों की जिन की कोई आवाज नहीं है। यानी वह उन लोगों की आवाज बनते हैं जो वह खुद अपने लिए कोई फैसला नहीं ले सकते हैं। उनकी कविताएं सभी जगह शोर मचाती है।वह हमेशा अपने सरपर खतरा लिए घूमते हैं।वह अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों को विचार करने के लिए होते हैं।इसमें सामाजिक यथार्थ की जीवंत अभिव्यक्ति हुई है।इसमें सामाजिक क्रांति की चिंगारी बहुत तीक्ष्ण ढंग से उजागर होती है।

‘घर का रास्ता’ इस संग्रह की कविताएँ ज्यादा सार्थक, लगती हैं। सामाजिक यथार्थ को बारीक ढंग से चित्रित करने में मंगलेश माहिर है। मंगलेश अपनी कविताओं में यथार्थ की पहचान करते हुए वैचारिक सोच का भी भरपूर इस्तेमाल करते हैं।

“वह एक स्वप्न है उस जीवन का

जो हमेशा कुछ दिखता है खुद ओझल रहता है

जिसका एक हिस्सा प्रकाश है एक अंधकार।"[16]

कवि मंगलेश 'स्वप्न' कविता में लिखते हैं कि कल्पना यथार्थ है। यहाँ कवि यह कहना चाहते हैं कि समाज में यथार्थ और आदर्श होता है। अगर यथार्थ को देखना है तो जीवन में देखना है, न कि स्वप्न में।

3.2.2 शोषण का विरोध

कवि मंगलेश डबराल शोषित-पीड़ित व्यक्ति की व्यथा अपनी कविता में प्रकट करते हैं। 'पहाड़ पर लालटेन' इसमें 'लालटेन' संघर्ष का प्रतीक है। कवि ने शोषक के खिलाफ लड़ने की चेतावनी दी है। कवि मंगलेश चाहते हैं कि देश की उन्नति के लिए शोषण का खुलकर विरोध करना चाहिए। मंगलेश ने 'लालटेन' के माध्यम से लोगों के मन में मुक्ति के संघर्ष का बीज बोना चाहा। एक वक्त की रोटी के लिए स्त्रियाँ अपने कीमती गहने गिरवी रखती हैं। घर के अन्य सदस्य जो बुजुर्ग हैं वे खेत या जमीन गिरवी रखते हैं। भूख के कारण महामारी फैल गयी है। कवि शोषित-पीड़ित व्यक्ति की व्यथा कविता के द्वारा प्रकट करते हैं।

"दूर एक लालटेन जलती है पहाड़ पर

एक तेज़ आँख की तरह

टिमटिमाती धीरे-धीरे आग बनती हुई

देखो अपने गिरवी रखे हुए खेत

बिलखती स्त्रियों के उतरे गये गहने

देखो भूख से बाढ़ से, महामारी से मरे हुए

सारे लोग उभर आये हैं चट्टानों से...।"[17]

भाव आदि के साथ-साथ पहाड़ी प्रदेश में रहनेवाले लोगों पर जो शोषण चल रहा है उसका जीवंत चित्रण किया है। जंगल में रहनेवाली स्त्रियाँ लकड़ी का बोझ ढोकर मर रही है। बच्चे बिना भोजन

ही मर रहे है। पेड़ों की कटौती लगातार होती रहती है। व्यापार चलते रहता है। व्यापारी उन असहाय, बेबस, लाचार मजबूर लोगों को डराकर, धमकाकर पेड़ कटवाते हैं। ऐसा शोषण हर तरफ हो रहा है। शोषितों की आवाज दूर-दूर तक सुनाई देती है। उन लोगों के सामने निराशा और भूख के सिवाय कुछ भी नहीं है।

"धूप में तपती हुई चट्टानों के पीछे

वर्षों के आर्तनाद हैं

और थोड़ी-सी घास है बहुत प्राचीन

पानी में हिलती हुई

अगले मौसम के जबड़े तक पहुँचते पेड़

रातोंरात नंगे होते हैं।"[18]

"चूल्हों के पास पारिवारिक अंधकार में

बिखरे हैं तुम्हारे लाचार श्बद

अकाल में बटोरे गये दानों जैसे शब्द।"[19]

इन उदाहरणों से पता चलता है कि मंगलेश डबराल अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्ध कवि है। कवि ने जो लिखा है उसमें स्वाभाविकता है। साथ ही साथ देश-समाज की ज्वलंत समस्याओं का मार्मिक चित्रण है।

इनकी कविता में दुखियारों का दुख है। कविता की शक्ति इतनी तेज़ है कि वह सीधे मन पर प्रहार करती है। मंगलेश डबराल शासक वर्ग की क्रूरता के विरुद्ध में आवाज़ उठाते हैं।

"कुछ देर मैंने अन्याय का विरोध किया

फिर उसे सहने की ताकत जुटाता रहा

मैंने सोचा मैं इन शब्दों को नहीं लिखूँगा

जिनमें मेरी आत्मा नहीं है जो आततायियों के हैं

और जिनसे खून जैसा टपकता है

कुछ देर मैं एक छोटे-से गड्ढे में गिरा रहा

यही मेरा मानवीय पतन था

मैंने देखा मैं बचा हुआ हूं और सांस

ले रहा हूं और मैं क्रुरता नहीं करता

बल्कि जो निर्भय होकर कूरता किये जाते हैं

उनके विरुद्ध मेरी घृणा बची हुई है यह काफी है।"[20]

यहाँ कवि स्थितियों में बदलाव लाना चाहते हैं। मंगलेश शोषितों के प्रति सहनुभूति रखते हैं। शोषितवर्ग के प्रति मंगलेश की विशेष दृष्टि है। यह कवि, सामाजिक यथार्थ के कवि होने के कारण इस समाज में जिसे सताया जा रहा है, जिनका शोषण हो रहा है, वैसे शोषित वर्ग की मुक्ति के लिए सतत प्रयत्नशील है। 'पहाड़ पर लालटेन' कविता के प्रारंभ में पहाड़ी लोगों के अर्थ का अभावग्रस्त जीवन की विवशता का चित्रण किया है।

मंगलेश डबराल ने शोषण के विरुद्ध अपनी कविता में जैसी आवाज़ उठाई, उनके समकालीन किसी अन्य कवि ने नहीं। मंगलेश इतिहास की धारा को गतिशील दिखाने में सफल हुए है। पहाड़ी आँचलों में भोले-भाले मनुष्यों का समाज कई स्तरों पर शोषण का शिकार है। इसका चित्रण मंगलेश बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित करते हुए कहते हैं कि –

"पीठों पर घाव और कंधों पर हथियार लिये हुए

लोगों की आहटें और नज़दीक हो गयी हैं

उनके काँपते सर और सूराखदार सीने

धीरे-धीरे अपने पैतृक विलाप से बाहर आ रहे हैं।"[21]

"उनकी धमनियों में गूँजती भूख

खोजती है अपना गुस्सा और अपना प्रेम

उनके रोओं से उड़ती है बारूद।"[22]

'पहाड़ पर लालटेन' संग्रह में एक ऐसी कविता है जो पहाड़ी जीवन और समाज शास्त्र की गंभीर जानकारी देती है। यथार्थ का मर्मस्पर्शी रेखांकन कर साथ ही साथ बदलाव के लिए हो रहे संघर्ष की उत्साहवर्द्धक सूचना के साथ-साथ वह कविता समकालीन काव्य-धारा का समर्थन करती है, तथा साहित्य बोध की पहचान का एक कलात्मक आधार भी प्रस्तुत करती है।

"जंगल में औरते हैं

लकड़ियों के गट्ठर के नीचे बेहोश

जंगल में बच्चे हैं

असमय दफनाये जाते हुए

जंगल में नंगे पैर चलते बूढ़े हैं

डरते-खांसते अंत में गायब हो जाते हुए

जंगल में लगातार कुल्हाड़ियाँ चल रही हैं

जंगल में सोया है रक्त।"[23]

इस कविता में, जंगल में कुल्हाडियों के लगातार चलने का उल्लेख मिलता है। यह कुल्हाडियाँ पेडों पर नहीं चल रही हैं, बल्कि वहाँ के मनुष्यों के लगातार शोषण का निहित है। लकडियों के गट्ठर के नीचे बेहोश औरते हो या असमय दफनाए जाते हुए बच्चे या फिर नंगे पैर भयग्रस्त खांसते

चलते बूढ़े, मंगलेश इस कविता के प्रारंभ में ही संकेत देते हैं कि पहाड़ के लोगों का शोषण हो रहा है।इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था की तीक्ष्ण अभिव्यक्ति मिलती है।

3.2.3 मध्यम-वर्गीय जिन्दगी का चित्रण

मंगलेश डबराल मध्यवर्गीय और निम्नमध्यवर्ग के कुशल चिंतक है। मध्यवर्गीय तथा निम्न वर्गीय स्थिति की बारीक पकड़ मंगलेश डबराल की कविताओं की उल्लेखनीय विशेषता है। मंगलेश जानते हैं कि हमारे देश का बहुसंख्यक वर्ग मध्यमवर्ग का है। उन्होंने पहाड़ी प्रदेश के समाज को अपनी कविताओं को केन्द्र बनाया। यह पहाडी प्रदेश मंगलेश की रोम-रोम में बसा हुआ है। वहाँ के जीवन से इनका रचनात्मक जुडाव है। इन्होंने वहाँ के जीवन को देखा और भोगा है।

मंगलेश ने जिस समाज देखा है उसी समाज के विभिन्न वर्गों को अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। उच्च वर्ग मध्यवर्ग निम्न वर्ग तीनों वर्गों को चित्रित किया है। उच्च वर्ग में जमीन्दार व नेता आते हैं, जो शोषक हैं। वे अनेक प्रकार से लोगों का शोषण करते हैं। मजबूर, लाचार लोगों का फायदा उठाकर अपना काम कर लेते हैं। दूसरा मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग किसान और मजदूरों का हैं। इनका जीवन तो कष्ट से भरा है। वे जिन्दगी भर सिर्फ परिश्रम करते हैं। मंगलेश ने उच्च वर्ग एवं मध्यवर्ग द्वारा शोषित होनेवाले निम्नवर्ग समाज के साथ उनके अभावों तथा उनकी समस्याओं के आर्थिक पक्ष को उजागर किया है। मजदूरों के संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया है। जो शोषित तथा पीड़ित समाज का अंग है।

निम्न मध्यवर्ग की मानसिकता का चित्रण हम उनकी कविताओं में देख सकते हैं। शहरों की आबादी बढ़ने का मुख्य कारण युवा-जन की नौकरी की तलाश है। युवा वर्ग नौकरी की तलाश में अपने लोगों को अर्थात् सगे-सम्बन्धियों को छोडकर दूर-दूर तक इधर-उधर भटकते हैं। कविता का उदाहरण है-

“दिन-भर लकड़ी ढोकर माँ आग जलाती है

पिता डाकख़ाने में चिड्डी का इंतज़ार करके

लौटते हैं हाथ-पाँव में

दर्द की शिकायत के साथ

रात में जब घर काँपता है

पिता सोचते हैं जब मैं नहीं हूँगा

क्या होगा इस घर का।"[24]

इस कविता में पारिवारिक संबंध की बात की गईहैं।मां दिन भर लकड़ी इकट्ठा करती है और आगजलाती है ताकि वह अपने परिवार को खाना देकर पेटभरसके।पिता दिन-रात मेहनत करतेहै ताकि दो रुपए कमा सके।पिता सोचते है कि, अगर वे नहीं होंगे तो क्या होगा इस घर का।इसतरह पिता के इसी भाव को इस कविता में व्यक्त किया गया है।

"इसमें काठ का एक संदूक है

जिसके भीतर चीथड़ों औगर स्वप्नों का

एक मिला-जुला अंधकार है

इसके पिता ने दादा से प्राप्त किया था।"[25]

इसमें आंतरिक संवेदना है। मंगलेश की यह कविता हमें बार-बार सोचने पर मजबूर करती है। कवि मंगलेश पारिवारिक स्थिति का हृदयस्पर्शी चित्रण अपनी कविता में करते हैं। मजदूर लोग अपनी रोजी-रोटी के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं और झोपडियों में रहते हैं। इस झोपडी की लकडी की दीवारों पर दीमक लगी है। जो लकडी को खोखला करने के काम में तत्पर है। उसकी मरम्मत करने के लिए मजदूरों के पास पैसे नहीं हैं। इस घर के काठ के संदूक में गरीबी के सिवाय और कुछ भी नहीं है। यदि हैं तो सिर्फ सपनें और चिथड़ें। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस गरीबी का शिकार होता आया है।

कवि मंगलेश समाज में व्याप्त शोषण के नये-नये रूपों को अभिव्यक्त करते हिचकिचाते नहीं। वह कहता है-

“मेरा चेहरा मिलता है आदमी से

हम नहीं थे इस अपराध इस पागलपन में शामिल

सचेत हुए हम देखते हैं

समाज जा रहा है तेज़ी से रसातल।”[26]

इस तरह समाज में एक भयावह और अमानवीय व्यवस्था की रचना हुई है। मध्यमवर्ग अपने स्वभाव और अपने संस्कार, अपनी नियति और अपनी चेतना से हमारे वर्ग-विभाजित समाज के साथ जुडा है। इसे हम निम्नमध्य वर्ग कह सकते हैं। लेकिन इसकी स्थिति सर्वहारा वर्ग से ज्यादा अच्छी नहीं है फिर भी देखा जाए तो यह निम्न मध्यवर्ग धीरे-धीरे सर्वहारा वर्ग की नियति की ओर खिसकता जा रहा है। मंगलेश डबराल अपनी कविताओं में इस वर्ग संक्रमण पर गहरा दृष्टिपात करते हैं।

एक दूसरे को धक्का देकर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति और सफल लोगों में शामिल होने की मध्यवर्गीय मानसिकता पर मंगलेश का शुरू से ही ध्यान है। ‘‘पहाड पर लालटेन’ की कविताओं से लेकर ‘आवाज भी एक जगह तक’ की सभी काव्य-संग्रह में इस मानसिकता पर भरपूर प्रहार उन्होंने किया है। इस मध्यमवर्गीय मानसिकता और जीवन-चर्या के प्रति मंगलेश में शुरुआत से ही एक प्रकार की हीन भावना पायी गई है।

मध्यवर्ग ही अन्याय, अत्याचार और असमानता की इस व्यवस्था के बने रहने में सबसे अहम् भूमिका निभाता है। मंगलेश अपनी **‘सपना’** कविता में लिखते हैं-

“मैं गिरा एकएक

जैसे सपने से

जैसे चलते-चलते कोई गिराता है

सडक पर अधबीच।"[27]

इस कविता में आगे और बहुत सारी चीज़ों के 'गिरने का जिक्र है। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि वह चीजें जो गिर रही हैं या वह व्यक्ति 'मैं' जो लगातार धरती और रसतल से दूर गिरता चला जा रहा है। वह स्वयम् नहीं गिर रहा है, बल्कि कोई है, जो लगातार उसे गिराए चला जा रहा है।

उन्होंने अपनी कविता में एक ऐसे रचनाकार की पीडा को व्यक्त किया है जो अपनी रोजी-रोटी छोडकर गाँव से शहर चला आया है। जीवन की अभावग्रस्त स्थितियों में उन्हें शहर के संवेदनशून्य व्यर्थ की मुखौटों से भरे जीवन के साथ समझौता करने के लिए बाध्य करती है। कवि इस दर्द को बखूबी महसूस किया है। इसलिए वे कहते है-

"शहरों दफ्तरों घरों के दरवाजे

खटखटाता जाता है यह हाथ

इसी से करने होते हैं मुझे सारे काम

दुनिया के सबसे बड़े झूठों में शुमार यह हाथ

जो थकता नहीं निराश नहीं होता कभी

जब हद हो जाती है

तब दूसरा हाथ कभी-कभी जतलाता है अपना विरोध

काँपता दर्द करता हुआ।"[28]

मंगलेश कई बार अपनी मध्यवर्गीय सीमाओं को सच्चाई के साथ एहसास करते हुए उनकी तीखी पहचान से जुड जाते हैं लेकिन पूर्ण रूप में उससे मुक्त नहीं होते । यहाँ व्यापक मध्यवर्गीय जीवन

में समाहित अंतर्विरोधों को कवि ने तीव्रता के साथ महसूस किया है। कहीं इस वर्ग को अपनी सीमाओं से ऊपर जाकर, क्रांतिकारी शक्तियों से ऊपर ले जाकर क्रांतिकारी शक्तियों से जोड़ने का प्रयत्न करता है।

मंगलेश की कविता में अब भी निम्न मध्यवर्गीय जीवन के प्रति ललक भरी दृष्टि है। लेकिन उन्होंने अपनी दृष्टि को यहाँ तक सीमित नहीं रखा। उदाहरण के लिए 'पागल और खुशी', 'कैसा दुर्भाग्य' कविता में देखी जा सकती है। अभिशप्त किस्म के चरित्रों, वंचितों, उपेक्षितों, अलक्षित रहनेवाले अभागों के प्रति संवेदना जगाते हैं। जैसे-

"तरह- तरह के इशारे करते पागलों के से

अक्सर गुजरते हैं स्वस्थ मस्तिष्क के लोग

उनकी आँखों में थोड़ा-सा झांककर

एकाएक सहमते हुए आगे बढ़ जाते हैं

जैसे झटक देते हों अपने जीवन का कोई अंश

अपना कोई क्रोध कोई प्रेम कोई विरोध

अपनी ही कोई आग

जो उनसे अलग होकर अब भटकती है

व्यस्त चौराहों और नुक्कड़ों पर

कपड़े फाड़े बाल बिखराये सूखी रोटियाँ संभाले हुए।"[29]

कवि कहना चाहते हैं कि हमारी व्यवस्था ही हमें पागल बना देती है। यदि हम उसे बदलना चाहे तो बदल सकते हैं। मंगलेश की इस कविता में बताया गया है कि नियम तोड़कर ही लोग पागल

होते हैं। विरुद्ध में देखेंगे तो पागल लोग ही नियम तोडते हैं। नियम तोड़कर ही क्रांतियाँ संभव होती हैं। इस कविता में अंतर्निहित तनाव की व्याख्या की गयी है।

3.2.4 संघर्ष

मानवीय संघर्ष का चित्रण करना मंगलेश की एक विशेषता है। यह संघर्ष खुद कवि भी झेलता है। कभी-कभी पारिवारिक बन्धनों को लेकर संघर्ष करना पडता है।तो कभी-कभी आजीविका के लिए संघर्ष करना होता है। समकालीन कवि इन अनुभवों को आत्मसात करके स्वयं समाज के लिए संघर्ष में डूब जाते हैं। मंगलेश भी इसका अपवाद नहीं है।

मंगलेश की कविताएँ रास्तों की खोज में संघर्षरत हैं। उनकी कविताओं में जीवन की जटिलता को ढोने की ताकत है। उनका अनुभव, जानकारी ही कविता की ताकत को बढ़ाती है। **'मुक्ति'** कविता में मंगलेश पहाड के संघर्षशील व्यक्तियों से स्वयं को जोड़ते हैं। उनकी दिनचर्या में मुक्ति-प्रयासों का साक्षी बनकर उनके बीच होने का एहसास कराते हैं-

"अपने मरे हुए बच्चों की खोज में

मैंने उन्हें एक जंगल से निकलकर

दूसरे जंगल में जाते हुए देखा है

मैंने नारों और वादों के लिजलिजे जाल में

उनकी भूख को एक मुस्तैज और नुकीले

पंजे में बदलते देखा है

मैंने उन्हें मौत के अंधेरे समुद्रों में

एक रहस्यमय लपट की तरह चलते हुए देखा है

मैंने उन्हें बेशुमार पौधों की तरह नाचते देखा है

इस रक्तरंजित रेगिस्तान में।"[30]

कवि ने पहाड़ों पर रहने वाले पहाड़ी लोगों के संघर्ष को व्यक्त किया है। वह कहते हैं कि, जो पहाड़ पर रहते हैं उन पहाड़ी लोगों को अनेक संघर्षों का सहारा करना पड़ता है। उनकी जिंदगी जोखिम भरी होती है। वह कहते हैं कि,मरे हुए बच्चों की खोज में उन्हें जंगल में जाते हुए देखा है और वेएक जंगल से दूसरे जंगल में जाते हैं। वे सभी जगह उन्हें ढूंढते हैं।उन्होंने भूख के कारण एक दूसरे को नोचते हुए देखा है। इस तरह उन्होंने रात के अंधेरे में उन्हें संघर्ष करते हुए देखा है।

"अपनी भूख देखो

जो एक मुस्तैद पंजे में बदल रही है

जंगल से लगातार एक दहाड़ आ रही है

और इच्छाएँ दांत पैने कर रही हैं

पत्थरों पर।"[31]

मंगलेश ने शोषक के खिलाफ लडने की चेतावनी दी है। कवि ने लालटेन के माध्यम से लोगों के मन में मुक्ति के संघर्ष का बीज बोया है। एक पहर की रोटी के लिए स्त्रियाँ अपने गहने गिरवी रखती है, घर के बुजुर्ग खेत या जमीन गिरवी रखते हैं। भूख के कारण महामारी फैली हुई है। इस प्रकार यहाँ हर एक को हर तरफ से संघर्ष ही संघर्ष करना पडता है।

3.2.5 शहरी जीवन

मंगलेश की कविताओं की और एक विशेषता शहरी जीवन रही है। 'पहाड पर लालटेन' में शहरी जीवन से जुडी कविताओं में कहीं अपरिचित और अविश्वास की गंध भी शामिल है।

लेकिन मंगलेश की कविताओं का एक और स्वर है जहाँ वे संवेदन हीनता के बढ़ते खतरे से आगाह करते हैं। मंगलेश की कविताओं में महानगरों के शोर और चकाचौंक के पीछे एक डरावना सन्नाटा और अंधकार है। 'शहर-2' कविता में वे लिखते हैं-

"कहाँ है मेरे हिस्से के प्रेम-संबंध

राशन के खाली कनस्तर रेल की पटरियाँ

किताबें और नौकरियां

और भविष्य रचनेवाले रोमांच

कहाँ है मेरे हिस्से के कारतूस

मैं पूछता हूँ और शहर मुझ पर पहले

काल-पीला होता है फिर हरा हो जाता है

जिसमें मिटते हुए मैदान हैं और बचते हुए लोग।"[32]

इन पंक्तियों में कवि शहर से सवाल कर रहा है। अपनी जिन आकर्षणों में वह गाँव छोड़कर शहर में आता है वहाँ उसे वैसा कुछ नहीं मिला। न तो प्रेम मिलता है और न वह रोमांच मिलता है जो भविष्य के प्रति आदमी को उम्मीद और उत्सुकता से भरा रखता है। शहर का उस पर लाल-पीला होना उसके शुरुआती विद्रोह को दिखाते हैं। शहरी जीवन उसके लिए बहुत तकलीफ भरा है पर उसे स्वीकार करने के अलावा उसके पास दूसरा कोई विकल्प नहीं है। इसलिए वह निराशा से भरा हुआ है।

मंगलेश पहाड़ से आनेवाले अन्य कवियों के समान ही शहर को मनुष्य के लिए प्रतिरोध मूल्य मानते हैं। उनके काव्यानुभव में शहर अपनी क्रूरता और भय के कारण ही जगह पा सका है। घर का रास्ता कविता में मंगलेश लिखते हैं-

"शहर की सबसे लंबी सबसे सफेद दीवार

खाली है इस वक्त

इस पर लिखी जा सकती है, कोई कविता

कल सुबह के लिए कोई संदेश

इस पर दर्ज किया जा सकता है

अगली लड़ाई का ऐलान।"[33]

शहरी जीवन और भीड़ का चित्रण को मंगलेश उजागर करते हैं। घबराहट, इच्छाएँ साथ ही उन तमाम वारदातों की सूचनाएँ देते हैं जो शहरी जिन्दगी की अनिवार्य पहचान बन गयी है। इससे पता चलता है मंगलेश केवल गाँवों की हालत से परिचित नहीं बल्कि शहरों की भागदौड़ और अमानवीयता से भी उतने ही निकट से परिचित हैं।

"शाम को सारी दुनिया को झाड़कर

बिस्तर पर

औंधा होकर अंत में

क्या बचता है कंधेपर बैठे दुख के अलावा

आत्मा पर फफूंद के अलावा क्या बचता है।"[34]

भीड में गुम हो जाना या अकेले रह जाना आज के महानगरीय जीवन का नियम बन गया है। 'दिल्ली में एक दिन' कविता में दिल्ली शहर को, 'शोर कालिख पसीने और लालच का शहर' कहा गया है। **'दिल्ली-एक'** कविता में मंगलेश लिखते हैं-

"इस शहर में दिखाई देते हैं विचित्र लोग।

मेरे शत्रुओं से मिलते हैं उनके चेहरे

आरामदेइ कारों में बैठकर वे जाते हैं इंदिरा गांधी

अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर।"[35]

मंगलेश शहर के परिप्रेक्ष्य में पहाड़ को और पहाड़ के परिप्रेक्ष्य में शहर को देखते हुए उसका (शहर का) चरित्र, उसका पाखंड, उसकी कुटिलता उघाड देते हैं।

3.3आर्थिक बोध

मंगलेश डबराल ने अपने कविताओं में आर्थिक बोध का भी जिक्र किया है। मंगलेश डबराल ने अपनी ज्यादातर कविता संग्रह में सामाजिकता को महत्व दिया गया है। जहां पर समाज है वहां पर आर्थिक बोध का उल्लेख होना निश्चित है। मंगलेश डबराल ने अपनी कविताओं में शोषक एवं शोषित वर्ग के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने उच्च और निम्न लोगों की बात की है। आज की तारीख में पैसे वाले और धनवान होते जा रहे हैं तो वहीं गरीब और गरीब होते जा रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण आर्थिक स्थिति है।

पहाड़ पर लालटेन इस कविता संग्रह में से **'सबसे अच्छी तारीख'** कविता में आर्थिक स्थिति को देख सकते हैं।

"वर्ष अपनी गठरी में लाते हैं

असंख्या तारीखें

और उन्हें फैला देते हैं पृथ्वी पर

तारीखें तनती हैं

तमतमाये चेहरों की तरह

इतवार को तमाम तारीख़ें घूरती हैं

लाल आंखों से

तारीख़ें चिल्लाती है भूख तारीख़ें

मांगती हैं न्याय"[36]

कवि कहते हैं कि, वर्ष में से कुछ गिने-चुनेतारीखों पर कुछ लोगों को अच्छी तरह से पेट भरने का मौका मिलता है।जो पहाड़ी जगह पर रहते हैं या फिर जहां पर उनको अच्छी तरह से कामकाज के सुविधानहीं है ऐसे लोगों को हमेशा भूख के कारण तकलीफ रहती है। वह आर्थिक स्थिति के कारण अच्छी तरह से अपना पेट तक नहीं भर सकते। वह भूखके कारण चिल्लाते हैं, अपने लिए न्याय मांगते हैं और इसी विषय को इस कविता में प्रस्तुत किया गया है।

मंगलेश डबराल आधुनिकता की बात करते हुए **'नये युग में शत्रु'** कविता में बताते हैं -

"अंततः हमारा शत्रु भी एक नए युग में प्रवेश करता है

अपने जूतों कपड़ों और मोबाइलों के साथ

वह एक सदी का दरवाज़ा खटखटाता है

और उसके तहख़ाने में चला जाता है.."[37]

कवि कहते हैकि,आज के जमाने में इंसान का सबसे बड़ा शत्रु आधुनिकता ही बन चुकी है। आज के आधुनिक समय में नई-नई तकनीकी चीज़ें आने लगी है। जिन्हें हर कोई इस्तेमाल नहीं कर सकता या उसका उपभोग नहीं ले सकता। लेकिन वह वस्तुएं दिनचर्या की जिंदगी महत्वपूर्ण कार्य करती है।

"एक रात भूल से मैंने कुछ रुपये तकिये के नीचे रख दिये

और सो गया

सपने में उठकर चारों और उड़ने लगे

नींद के आसमान में उनका अनोखा नृत्य चलाता रहा।"[38]

'सपने में रुपये' कविता में मंगलेश डबराल एक आदमी के जिंदगी में पैसों कि क्या अहमियत होती है इसका जिक्र किया है। पैसा हो तो सब कुछ पा सकते हैं। बचपन में पैसों का मोल उतना नहीं समझ में आता लेकिन बड़े होने के बाद सब उसी के पीछे दौड़ते रहते हैं।

'पैसा' कविता में कवि कहते है-

"इन दिनों लोग पैसे का शिकार करते दिखते हैं

यह हमारे युग का प्रमुख व्यवसाय है

बड़ी-बड़ी कारों के काफ़िले दूर-दूर तक जाते हैं

नयी शिकारगाहों कि टोह में विमान उड़ानें भरते हैं

झिलमिल करती है सोने के सभ्यताएं तैरतीं नौकाएं रात के समुद्र में

पैसे पर सवार धर्माधीशों की शोभायात्रा निकलती है

ज़्यादा पैसे की खोज में

दिन-भर लूटकर झपटकर जो लौटता है।"[39]

इस कविता में कवि कहना चाहते हैं कि, इन दिनों लोग पैसों का शिकार करते हर जगह दिखाई देते हैं। यह इस युग का प्रमुख व्यवसाय बन गया है।हर कोई पैसों के पीछे भागता दिखाई देता है। बड़ी-बड़ी कारों में दूर-दूर तक घूमने जाने के लिए पैसे खर्च किए जाते हैं।कवि कहते हैं कि आज जिनके पास पैसे हैं वह पैसों पर सवारहोकर शोभा यात्रा निकालते हैं। और पैसों की खोज में निकलते हैं और दिन भर सामान्य जनता को लूटते है।

'घर की काया' इस कविता में उस घर की स्थिति को बताया है जिस घर में आर्थिक तंगी के कारण घर की हालत बिगड़ती जा रही है।

"इस घर की काया में रहते आये हैं हम

बरसों से आत्मा की तरह

हम चुकाते आये किराया समय पर

सारे पैसे हमारे ख़र्च हुए इसी घर में

हमसे कहा गया दीवारें साफ़ रखें

इसमें अपना कुछ न जोड़ें न कुछ घटाये

तभ भी यहां हर वक्त कोई ठक-ठक होती रही

कुछ था शायद कोई चौखट कोई कील जैसा ठीक किया जाता रहा

कोई खिड़की जिसे खोलने की कोशिश होती रही

बिस्तर और तकियों के नीचे निवास करते हैं

इस घर के रोग शोक जरा मारा"[40]

इस कविता में घर की आर्थिक स्थिति को बताने की कोशिश की है। इस घर में रहने वाले हर समय पर किराया चुकता करते हैं फिर भी उसे घर में उन्हें अपना हक नहीं मिला है। वे जो कुछ पैसे कमातेहैं वह इस घरपरखर्च कर देते हैं ताकि उसे घर को संजोए रख सके।पैसों की तंगीके वज़ह से घर की बुरी हालत बन चुकी है और जितने पैसे खर्च किया जाए उतनी कम पड़ जाते हैं।

3.4 पर्यावरणीय बोध

मंगलेश की पर्यावरण के बारे में मौलिक सोच है। पेड़ के बारे में मंगलेश कहते हैं कि पेड अनादि काल से हमारे साथ है, पृथ्वी और आकाश में अपने मौजूद पाते हुए शांत और संयत होकर गर्मी, बरसात, ठण्ड सहते हुए पृथ्वी और आकाश के बारे में निरंतर सोचते हुए लिखते हैं-

"हमने उन्हें कभी नाराज़ या बौखलाते नहीं देखा

नहीं देखा सर धुनते हुए

वे सोचते रहते हैं कुछ

पृथ्वी और आकाश में बराबर बँटे हुए।"[41]

पर्यावरण का खयाल रखते हुए कवि को मनुष्य प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। पेड़ पौधे, पशु-पक्षी, पानी, हवा एक दूसरे के साथ पूरक होकर धरती पर रंग चढ़ाकर पुष्पित देखना चाहते हैं। लेकिन इन्सान हमेशा अपने आप को हिंसा कृति में बैठा है। मानव की विनाश प्रवृत्ति का मन देखकर मंगलेशजी कभी-कभी निराश हो जाते हैं।

3.4.1प्रकृति के प्रति प्रेम एवं मानव संबंध

जहाँ तक प्रकृति चित्रण का संबंध है मंगलेश समकालीन कविता के 'सुमित्रानंदन पंत" है। लेकिन काल का अंतर जरूर है। सुमित्रानंदन पंत की प्रकृति मुख्यतः पहाड़ी है और मंगलेश डबराल की भी पहाड़ी है। पंत की प्रकृति कोमल और ऐन्द्रजालिक है तो मंगलेश की प्रकृति कोमल तथा सहज आत्मीय। मंगलेश की अनेक कविताओं में प्रकृति का मनोरम अंकन हुआ है। मंगलेश प्रकृति के उपासक है। उनकी प्रकृति की कविताएँ एकदम सशक्त हैं। प्रकृति के गोद में जो देखा, पाया, उसी को उन्होंने प्रस्तुत किया है।

मंगलेश डबराल मनमोहक पहाड़ प्रदेश को चाहनेवालों में से एक हैं। उन्होंने वहाँ पेड़ पौधे, पानी, नदी, पत्थर, पहाड़ के साथ जीवन के अनुभव को देखा। उसी पहाड़ी प्रदेश, प्रकृति की गोद में उन्होंने अपनी कविता के लिए विषय चुना। उन्होंने उसमें जीवन की खुशियाँ, साथ ही साथ गम का भी अनुभव किया। मंगलेश की कविताओं में प्रकृति के अनेक रूपों का चित्रण मिलता है। कवि प्रकृति के माध्यम से बंजर होते दिलों, ढूँठ मन की व्यथा-कथा को बड़ी इमानदारी से प्रकट करते हैं। उनकी कविता 'पत्ता' में कवि कहते हैं –

"मुझे होना चाहिए एक ठूंठ

जो ख़ुशी से फूल नहीं जाता

मुरझाता नहीं

पाला पड़ने पर रंग नहीं बदलता

रह लेता है कहीं भी

गहरी साँस लेता हुआ।"[42]

मंगलेश की अत्यंत महत्वपूर्ण कविता 'गिरना' प्रकृति वर्णन का अच्छा, सुन्दर उदाहरण है। इस कविता में 'गिरना' बर्फ के गिरने में देखा गया है। खामोशी से गिरती हुई बर्फ और उसके नीचे चीज़ों का दबते जाना जीवन, आवाजें, चिड़ियाँ, घोंसले, घास खंड़हर, चूल्हें, यहाँ तक कि भूख को भी इस कविता के अलावा और किन्हीं भी शब्दों में व्यक्त कर पाना असंभव है। बर्फ के ठंडेपन और उसमें एक पूर्ण संसार के ठप जाने और उसके खामोशी से गिरते रहने की प्रक्रिया को जिस संवेदनात्मक स्तर पर अनुभत्त किया गया है वह अद्भुत है। गिरती हुई इस बर्फ में

जो भी पैर आगे बढ़ने की कोशिश करता है उस पर भी गिरती है बर्फ-

"बर्फ में जो भी पैर आगे बढ़ता है

उस पर गिरती है बर्फ"[43]

यहाँ मंगलेश की कविता की बुनावट और उसकी प्रक्रिया को समझने का सबसे अच्छा उदाहरण मिलता है। मंगलेश की कविता मूलतः प्रकृति के साथ खामोशी से बातें करती है। जिस खामोशी से बर्फ गिरती है, उनकी भाषा की खिड़कियाँ और दरवाजें बिना आवाज़ किये खुलते हैं और उनके अन्दर पहुँचने पर हम केवल वह चीजें और वह दुनिया अपनी पूरी जीवंतता के साथ दिखाई देती है; जिसमें मंगलेश रहते हैं। वहाँ कोई पर्दा नहीं है, कोई प्रतीक नहीं, कोई अदृश्य संकेत नहीं, अपने पूरे यथार्थ में एक संवेदनशील मनुष्य की दुनिया मात्र है।

'पहाड़ पर लालटेन' उनकी कविताओं का एक ऐसा प्रवेश द्वार है, जिससे न केवल हम उनकी कविताओं की पृष्ठभूमि का स्पर्श कर सकते हैं बल्कि वहीं से उनकी कविता को खोलने की कुंजी

भी हमें मिल सकती है। पहाड़, जंगल, पेड, नदी, पत्थर, घर जो दृश्य की तरह बार-बार उनकी कविताओं में आते हैं, पहाड़ के सुख-दुख को उठाते हुए या शोकगीत की तरह मंगलेश की संवेदना का असली घर यही है। उनके दूसरे संग्रह 'घर का रास्ता' की कविताओं में भी यहीं स्वर है। साथ ही साथ इस संग्रह की कविताओं में प्रकृति एवं प्रेम की प्रति उनका गहरा अनुराग है। 'पेड़' कविता में वे लिखते हैं-

"उनसे ज्यदा उनकी स्मृतियाँ हैं हमारे पास

वे बने हैं करोड़ों चिड़ियों की नींद से।"[44]

इस तरह इस कविता में प्रकृति के जरिए संवेदनात्मक पारदर्शिता दिखाते हैं ।पहाड़ों के बीच में पैदा हुआ कवि को विशेष लगाव पहाड़ों से होना स्वाभाविक है।

मंगलेश डबराल प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग रखते हैं। मंगलेश जानते हैं कि प्रकृति का रहस्य अपने नाना रूप संबंधों में स्वयं प्रकाशित हैं उनकी कविता इसलिए प्रेम की प्रकृति की कविता है। मंगलेश हर एक उदाहरण प्रकृति से ही लेते हैं।

मंगलेश जहाँ से आये थे वहाँ की प्रकृति और मानवीय विशिष्टता की स्मृति उनकी कविता में एक खास तरह की चमक भरती रही।

प्रकृति और मानव संबंध अटूट है। प्राकृतिक वातावरण में रहनेवालों को जीवन का यथार्थ, सुख मिलता है। उनकी पहली कविता **'वसंत'** में उन्होंने प्रकृति और सामान्य जीवन की सामान्य स्थितियों का अंकन इस प्रकार किया है-

"इस ढलानों पर वसंत

आयेगा हमारी स्मृति में

ठंढ़ से मरी हुई इच्छाओं को फिर से जीवित करता।"[45]

मंगलेश एक संवेदनशील कवि होने के नाते प्रकृति के उपासक भी हैं। उन्होंने प्रेम, श्रृंगार और प्रकृति को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाकर काव्य रचना प्रारंभ की। उन्होंने ने प्रकृति और मानव जीवन में संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उनकी विशेषता यह रही कि उन्होंने प्रकृति को सहानुभूति के साथ-साथ यथार्थ दृष्टि से देखा, सिर्फ देखा ही नहीं, छूकर अनुभव भी किया है, जो नहीं देखा उसकी कल्पना उन्होंने नहीं की। जो कुछ भी उन्होंने खुद देखा, उस दृश्य को गति-चित्र बनाकर अपनी काव्य में अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया। काफलपानी के पहाड़ी आँचल के पर्यटन ने उन्हें फूल- पत्तियों का दुर्लभ सहचर्य प्राप्त कराया। कारण यह है कि उनका बचपन प्रकृति से संबद्ध रहा है। जीवन के उत्साह और निराशा को रंगारंग में बदलने का सहज विषय उन्हें प्रकृति के रूप में मिला। प्रकृति के स्वभाव, उसकी रम्यता और परिवर्तनशीलता का परिपूर्ण ज्ञान मंगलेश डबराल की कविता में है। मंगलेश धरती और जीवन के कवि है। जब कवि मन अपनी पहाड़ी माहौल से बेचैन होता है तो बेकाबू हो जाता है, तब वह प्रकृति के विविध रूपों को अपनी कल्पना से रंजित करके प्रभावशाली ढंग से चित्रण करने में लग जाता है। वह प्रकृति के गोद में, प्राकृतिक परिवेश में, अपने आप को भूल जाता है और प्रकृति से पूरित कविता उसके मानसिक श्रम का परिहास कर उसे सहृदय बनाए रखने में सक्षम हो जाता है ।

इस पर प्रकृति की गोद में से जो कुछ भी मंगलेश डबराल ने अनुभव किया उसको उन्होंने चिंतन में रखकर कविता की रचना कि है। उनकी कविता में मानवीयता है। जीवन के सुख-दुख की आवाज़ है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय बोध प्रक्रिया की चपेट में आकर कुचल दिए गए लोगों को सम्मान और गौरव का एहसास कराने वाली इन कविताओं में मंगलेश डबराल का सर्वाधिक सार्थक कवि-कर्म प्रकट हुआ है। जमीन से जुड़े हुए कवि, गाँव की, समाज की और देश की रोजमर्रा समस्याओं से भली-भाँति परिचित है। मंगलेश की कविता यथार्थ है, मौलिक है, सहज है और जनजीवन से जुड़ी हुई है। कविता लेखन में पांडित्य प्रदर्शन नहीं है। शब्द भंडार नहीं है बल्कि हृदय का उद्‌गार है। वे अपनी कविताओं में

राजनीति में फैली हुई बुराइयों की बातें करते हैं।समाज में घटित अनेकसामाजिक प्रसंगों कोसामने लातेहैं।देशऔर समाज कीआर्थिक स्थितिदर्शाया है।और कविप्रकृतिसेजुड़े होनेके कारण पर्यावरणबोधकोप्रस्तुत किया है।इसप्रकार कवि के सोच का संसार बहुत व्यापक है।

संदर्भ सूची

1. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', 'अत्याचारी के प्रमाण' पृ. 82
2. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', 'अत्याचारी के प्रमाण' पृ. 82
3. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', 'प्रक्रिया', पृ. 70-72
4. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', '6 दिसंबर' पृ. 34
5. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', 'गिरना' पृ. 14
6. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', 'आते-जाते' पृ. 11-12
7. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', 'साम्राज्ञी' पृ. 34
8. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', अमेरिका में कविता पृ. 75-76
9. मंगलेश डबराल, 'पहाड पर लालटेन', 'साम्राज्ञी' पृ. 34
10. मंगलेश डबराल, 'पहाड पर लालटेन','तानाशाह कहता है' पृ 67
11. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', 'अपनी तस्वीर' पृ. 28
12. मंगलेश डबराल, 'घर का रास्ता', 'सफल कवि' पृ. 50
13. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', 'नृत्य में खांसी' पृ. 43
14. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', 'गाता हुआ लड़का' पृ. 61
15. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', 'अपनी छायाएँ'पृ. 80
16. मंगलेश डबराल, 'आवाज भी एक जगह है', 'वह स्वप्न',पृ. 77
17. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', 'पहाड़ पर लालटेन', पृ. 65
18. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन','पहाड़ पर लालटेन' पृ. 64
19. मंगलेश डबराल,
20. मंगलेश डबराल, 'हम जो देखते हैं', 'कुछ देर के लिए' पृ.11
21. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन' मुक्ति' पृ. 69
22. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन' मुक्ति' पृ. 69
23. मंगलेश डबराल, 'पहाड़ पर लालटेन', 'पहाड़ पर लालटेन', पृ. 64

24. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘घर’ पृ. 20
25. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘घर’ पृ. 19
26. मंगलेश डबराल, ‘घर का रास्ता’, ‘दिनचर्या पु. 61
27. मंगलेश डबराल, ‘घर का रास्ता’, ‘सपना’ पृ.10
28. मंगलेश डबराल, ‘घर का रास्ता’ ‘दूसरा हाथ’ पृ. 21
29. मंगलेश डबराल, ‘आवाज भी एक जगह है’ पागलों का एक वर्णन पृ. 22
30. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘मुक्ति’ पृ. 69-70
31. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘पहाड़ पर लालटेन’ पृ. 65
32. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘शहर-2’ पृ. 52
33. मंगलेश डबराल, ‘घर का रास्ता’, ‘सफेद दीवार’ पृ. 53
34. मंगलेश डबराल, ‘घर का रास्ता’, ‘सफेद दीवार’ पृ. 53
35. मंगलेश डबराल, ‘पहाड पर लालटेन’, ‘अकान’ पृ. 35
36. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘सबसे अच्छी तारीख़’ पृ. 23
37. मंगलेश डबराल, ‘नये युग में शत्रु’, ‘नये युग में शत्रु’, पृ. 14
38. मंगलेश डबराल, ‘नये युग में शत्रु’, ‘सपने में रुपये’ पृ. 60
39. मंगलेश डबराल, ‘नये युग में शत्रु’, ‘पैसा’, पृ. 107
40. मंगलेश डबराल, ‘आवाज भी एक जगह है’, ‘घर की काया’, पृ. 62
41. मंगलेश डबराल ‘घर का रास्ता’, ‘पेड़’ पृ. 17
42. मंगलेश डबराल, ‘घर का रास्ता’, ‘पत्ता’ पृ. 16
43. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘गिरना’ पृ. 14
44. मंगलेश डबराल, ‘घर का रास्ता’, ‘पेड़’ पृ. 17
45. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘वसंत’ पृ. 9

चतुर्थ अध्याय

भाषाशैली

4. भाषा शैली

मंगलेश की भाषा शैली सहज सुन्दर है। वे बिम्ब योजना, प्रतीक योजना, शब्दों का चमत्कार, गद्यात्मक शैली, छन्दमुक्त प्रयोग करते हैं। उन्होंने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया है। उन्होंने छोटी-छोटी कविताओं के साथ-साथ लम्बी कविताएँ भी लिखी हैं। मंगलेश ने संगीत में काव्य भाषा का भी प्रयोग किया है। कवि मंगलेश अपनी शैली के द्वारा एक अलग चित्र ही हमारे सामने लाते हैं।

मंगलेश की काव्य भाषा व्यापक और कल्पनात्मक प्रौढ़ता के साथ उजागर करने की सामर्थ्य रखती है। उनकी कविता भीतर से तो गूँजती ही है साथ ही साथ पाठक को मन में भी घर करती है। उदा 'छुपम-छुपाई' कविता में देख सकते हैं -

"क्योंकि मैं छिपाये रहता हूँ खुद को

अपनी ख़ाल के कवच में धूल होते काग़जों में ख़ामोशी में

बचता चला आया हूँ यहाँ तक अपमान और अन्याय से

छिपा दूर-दूर तक कि यह भांपन कठिन हो कहाँ छिपा हूँ

बहुत दिन हुए खोज नहीं पाया कुछ.."[1]

इस कविता में दृश्यों की महीन पकड़ प्रौढ़ता के साथ प्रस्तुत की गयी है। इसमें परिवेश दृश्य, घटनाक्रम और वक्त का मिसाल देख सकते हैं।

मंगलेश की कविताएँ अर्थ में सहजता लेकर आयी हैं। रचनाओं में सुबह, शाम, रात, मंगलग्रह की परछाई के विविध रूप रंगों की छबियाँ मिलती हैं। कवि की मनस्थिति के अनुरूप मनोदशा मिलती है। उदा 'मंगलग्रह' कविता में देख सकते हैं।

"वहाँ अगर जीवन की संभावना थी

तो वह ज़रूर मंगल ग्रह रहा होगा..”[2]

मंगलेश ऐसी भाषा के प्रयोक्ता है, जो पाठक को गहरी संवेदना और विचार से जोडती है। कवि कविता को प ाठ्य के साथ एक दृश्य माध्यम के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं,जो चित्र के समान दृश्य पैदा कर सके। इसलिए वे चित्रात्मक बिम्बात्मक भाषा के समर्थक है।

कविता को दृश्यात्मक संदर्भों से जोड़कर उसे अधिक प्रभावशाली बनाना मंगलेश का उद्देश्य है। मंगलेश की कविता में दृश्य मात्र नहीं वस्तुपरकता भी है। इसमें दृश्य जगत को देखने का कार्य बहुत ही प्रभावी ढंग से किया गया है। यहाँ मंगलेश की दृष्टि मामूली नहीं है। कवि यहाँ देखता भी है और देखकर रचता भी है। कविता के अनुभव के साथ-साथ निजी अनुभव भी है। उनके अनायास लगनेवाले शब्दविन्यास काव्य दृष्टि से एक विशिष्ट काव्य मूल्य है। वह सहज मानवीय करुणा कलारुचि को बेधती है। भीतर से बेचैन करती है, और धीरे-धीरे बदलने पर मजबूर कराती है।

कम से कम शब्दों में मंगलेश ज्यादा से ज्यादा अर्थात बहुत कुछ कहना चाहते हैं। उदाहरण के लिए-

“यह मकान सारा कुछ छिपाये हुए है

अपने अंधकार में औरत

औरत का स्वप्न

औरत का बच्चा

औरत की मौत।”[3]

इस कविता में औरत की पूरी जिन्दगी का चित्र उन्होंने कम से कम शब्दों का प्रयोग करके किया है। मंगलेश की कविताएँ सरल पद विन्यास से आकृष्ट करती हैं। पुरानी प्रचलित शब्दों में ही नया अर्थ ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। उनके शब्द, संकेत मात्र बनकर आते हैं।

4.1 शब्द

तत्सम शब्द: सुर, दिन, सत्य, कवि, शत्रु, अग्नि, कार्य, चंद्र, मुहूर्त, धर्म, जन्म, पत्र, अज्ञान, आक्रमण, पिता, बुद्धि, भक्ति, मन, विज्ञान, जल, आदि।

तद्भव शब्द : काम, अंधेरा, खेत, ग्राहक, दही, सावन, घी, ओठ, दांत, रात, माँ, चाँद, कविता, जीभ आदि।

अंग्रेजी शब्द : टार्च, नंबर, होटल, टेलीविजन, मैनेजर, ट्रैफ़िक, हार्न, ब्रेड, प्लेटफार्म, प्लम्बर, टेलीफोन, काऊंटर, कॉलोनी, बैंक, रजिस्टर, स्कूल, अफसर आदि।

4.2 बिम्ब योजना

मंगलेश डबराल की बिम्ब योजना एकदम लाजवाब है। 'आवाज भी एक जगह है' में संग्रहित 'ब्रेष्ट और निराला' कविता में साहित्य संघर्ष को लेकर एक 'स्वप्न-बिम्ब-योजना' की गयी है। उदा.

"सपने में देखा कोई घर था

घर क्या टूटाफूटा-सा कमरा एक

कुर्सियाँ रखी हुई थीं बहु पुरानी

बैठे थे उन पर बेर्टोल्ट ब्रेष्ट और निराला

वैसे ही जैसे अपनी-अपनी तस्वीरों में दिखते थे.."[4]

स्मृति बिम्ब का और एक उदाहरण 'छुपम-छुपाई' में देख सकते हैं। बच्चों के इस खेल में बच्चों की उत्सुकता का दिलचस्प वर्णन है। इस खेल में चिंता है–

"छुपम-छुपाई खेलते बच्चों से कहता हूँ दोड़ो नहीं

तुम्हें चोट लग सकती है जगह-जगह नुकीले कोने हैं

कहीं कीलें भी निकली हुई हैं

ध्यान रखो आराम से खेलो खोजने का खेल है।"[5]

इसमें संवेदनात्मक धरातल पर मंगलेश की यह कविता, हमें कई जगहों पर ले जाने के लिए स्मृतिबिम्बों का सहारा देती है।

4.3 छंदमुक्त

मंगलेश छंदमुक्त कविता लिखते थे। उनकी कविता के केन्द्र में मनुष्य है, वह बदलते युग के संदर्भ में बदलती मानवीय प्रवृत्ति के बारे में बताते है। उनकी कविताओं में छंद का निर्वाह हो या न हो, अतः वे छंद शिल्प में नवीनता के आग्रही है।छंदमुक्त कविता का उदाहरण-

"उधर नहीं इधर से चलो

उधर भीड़ है गाड़ियाँ हैं उनके मालिक हैं

उनकी शक्ल से मिलते-जुलते कुत्ते हैं

कुछ है जिस पर वे टूटे पड़ रहे हैं.."[6]

"धूप दीवार को धीरे-धीरे गर्म कर रही है।

आसपास एक धीमी आंच है

बिस्तर पर एक केन पड़ी है

किताबें चुपचाप है

हालांकि उनमें कई तरह की भी बढ़ाया बंद है।"[7]

4.4 लोकगीतों का प्रभाव

लोकगीतों का अपना एक अलग ही स्थान है। सरल सादा जीवन जीनेवाले मनुष्य की भावनाओं की रागमय अभिव्यक्ति लोकगीत में होती है। ऐसे लोकगीतों को मंगलेश डबराल ने अपनाया है। लोकगीत के आधार पर लिखी गयी उनकी कविताओं में लोकजीवन समय और समाज की सरल अभिव्यक्ति मिलती है, जिसमें कोई कृत्रिमता नहीं है। उनकी 'पुनर्रचनाएँ' कविता पहाड़ के दूर-दराज क्षेत्रों के लोकगीतों से प्रेरित हैं। उदा.-

"तुम्हारे लिए आता हूँ मैं इस रास्ते

मेरे रास्ते में है तुम्हारे खेत

मेरे खेत में उगी है तुम्हारी हरियाली

मेरी हरियाली पर उगे हैं तुम्हारे फूल

मेरे फूलों पर मँडराती है तुम्हारी आँखें

मेरी आँखों में ठहरी हुई तुम।"[8]

4.5 मुहावरों का प्रयोग

मंगलेश की काव्य संवेदना में जागरूकता तथा संवेदनशीलता का विकास हम देख सकते हैं। मंगलेश ने अपनी कविताओं में अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। उन मुहावरों को अच्छी साँचे में ढ़ली रचनाएँ देने में मंगलेश ने कुशलता दिखाई है। जैसे-

i. **“यह बात लिख लो यह गीत सुनलो क्यों गरीब के घर कंटीली घास की भी किल्लत है।”[9]**
ii. **“वह ज्यादा दुख के भी विरुद्ध था इसलिए गमगीन दिखना चेहरे लटकाना व्यर्थ है।”[10]**
iii. **“हम जीवित है और इतिहास में लौट चुके हैं और राहत की एक गहरी साँस ले रहे हैं।”[11]**

4.6 सूक्तिया

मंगलेश की कविता में सूक्तियाँ भाषा को अनावश्यक विस्तार होने से बचाती है। उनकी एक खास विशेषता है सूक्तियाँ। सूक्तियों का प्रयोग मंगलेश बार-बार करते हैं। जैसे-

i. **“कालातीत कवि अपने जीतेजी कालातीत हो जाते हैं।”[12]**
ii. **“शब्द हमारे काबू में नहीं होते और प्रेम मनुष्य मात्र के वश के बाहर लगता है।”[13]**
iii. **“अंधेरा एक प्राचीन मुखौटे की तरह दिखता है।”[14]**
iv. **“अत्याचारी इन दिनों खूब लोकप्रिय है, कई मरे हुए लोग भी उसके घर आते जाते हैं।”[15]**

मुहावरे, सूक्तियों के साथ-साथ मंगलेश की कविता की काव्यभाषा लोकभाषा की व्यापक शब्दावली से अपनी रचना की गरिमा बढ़ायी है।

4.7 प्रतीकात्मक शैली

मंगलेश की खासियत यह है कि उन्होंने शब्दों और मुहावरों तक ही अपनी कविता को सीमित नहीं रखा बल्कि प्रतीकों में नये-नये अर्थ देने का प्रयत्न कवि का रहा है। नये प्रतीकों की सार्थक

तलाश भी उनकी कविताओं में दिखाई देती है। मंगलेश प्रतीक को वस्तु में परिवर्तित कर देने की दृष्टि रखते हैं। वे प्रतीक नहीं गठते, 'संकेत' करते हैं। उदा.-

"माँ के चेहरे पर मुझे दिखाई देती है

एक जंगल की तस्वीर लकड़ी घास और

पानी की तस्वीर खोयी हुई एक चीज़ की तस्वीर।"[16]

'माँ की तस्वीर' कविता मे पहाड़ी औरत है, जो लकडी, घास और पानी जुटाती है, वह कवि की माँ है। 'माँ' तो प्रतीक है, जिसमें पहाड़ और जंगल की वस्तुएँ साकार हो उठती है।

4.8 गद्यात्मक शैली

मंगलेश डबराल की कविताएँ प्रारंभ से ही अपने सरल पद विन्यास से आकृष्ट करती आ रही हैं। इस सरल पद विन्यास के माध्यम से ही वे समय रूपी चेहरे को हमारे सामने रखते हैं। उनकी कविताओं की संरचना 'गद्यात्मक' है। कविगद्यरूप के प्रति आकृष्ट है। 'बच्चों के लिए चिट्ठी', 'कागज की कविता', 'नींद की कविता', 'सपने की कविता', 'नृत्य में खांसी आई', 'गद्य कविता नहीं', 'परिभाषा की कविता' आदि कविताएँ अपेक्षाकृत सरल एवं अधिक संप्रेषणीय है।

मंगलेश डबराल कठिन अनुभवों को सरल भाषा में व्यक्त करते हैं। यही सरलता उनकी कविताओं को प्रभावपूर्ण बनाने में सहायक प्रतीत होती है। उनकी अनेक कविताएँ हैं जिनमें हम भाषा की सहजता पाते हैं। 'बच्चों के लिए चिट्ठी' कविता में हम सहज, सरल गद्यात्मक शैली देख सकते हैं।

कवि मंगलेश की भाषा में जो अद्भुत कसावट है और शिल्प पर जो आश्चर्यजनक अधिकार है, वह कठिन साधना से ही पैदा हो सकता है। गद्यांश की तरह लिखी गई कविता 'चुम्बन' में मंगलेश की भाषा पर जबरदस्त नियंत्रण दिखाई देती है।

मंगलेश की कविताओं में निम्नलिखित दो कविताएँ गद्य का श्रेष्ठ नमूना है।

i. “एक आदमी कुहनियों से अगल-बग़ल धक्के मारकर काफ़ी आगे निकल गया। कंप्यूटर के सामने बैठा दिल का मरीज़ सोचता था देश का इलाज कैसे करूँ? आलीशान बाज़ार के पिछवाड़े एक वीर पुरुष रो रहा था जिसे वीरता की बीमारी थी। एक सफल आदमी सफलता के गुप्तरोग का शिकार था। एक प्रसिद्ध अत्याचारी विश्व पुस्तक मेले में हँसता हुआ घूम रहा था।”[17]

ii. “परिभाषाएँ एक विकल्प की तरह हमारे पास रहती हैं और जीवन को आसान बनाती चलती हैं। मसलन मनुष्य या बादल की परिभाषाएँ याद हों तो मनुष्य को देखने की बहुत ज़रूरत नहीं रहती और आसमान की ओर आँख उठाये बिना काम चल जाता है। संकट और पतन की परिभाषाएँ भी इसीलिए बनायी गयी।”[18]

निश्चित रूप में हम कह सकते हैं कि इसे पद्य ही कहा जा सकता है। क्योंकि इसका पूर्णरूप से पद्य जैसा ही प्रभाव होता है। इसके अन्दर आंतरिक लय, संवेदनात्मक अनुभव, शब्द चयन, भाव आदि इसे कविता बनाती है। इसके भीतर हमारे दैनंदिन जीवन में घटनेवाली घटनाएँ, टूटते बनते मानवीय रिश्ते एवं संबंध आदि का समावेश हुआ है। साथ ही साथ अव्यवस्था, अमानवीयता, हिंसा, शोषण, अत्याचार, घृणा आदि का विरोध करने की क्षमता है।

इस तरह मंगलेश की भाषा साफ-सुथरी है। यह पाठकों को सर्वाधिक आकर्षित करती है। उनकी ऐसी अनेक कविताएँ श्रेष्ठ गद्य रचनाओं के रूप में हम देख सकते हैं। जैसे ‘नींद की कविता’, ‘सपने की कविता’, ‘चांद की कविता’, ‘आँसूओं की कविता’, ‘तस्वीर’ आदि। उनकी शैली एक असाधारण शैली है।

4.9 नयापन

मंगलेश अपनी कविताओं द्वारा कुछ नयापन दिखाना चाहते हैं। कवि धूप में भी मुस्कुराहट देखना चाहता है। खिडकी से बाहर कवि का इंतज़ार, उसकी प्रखर सामाजिक चेतना का परिचायक है। मंगलेश की भाषा में अनूठे प्रयोगों की सूक्ष्मता, हम देख सकते हैं। ‘पहाड़ पर लालटेन’ यह शीर्षक ही एक महत्वपूर्ण स्थानग्रहण कर लेता है। लालटेन के प्रकाश में संगठित सामूहिकता की योजना बनाती है। उदाहरण के लिए- **“दूर एक लालटेन जलती है पहाड़ पर**

एक तेज़ आँख की तरह

टिमटिमाती धीरे-धीरे आग बनती हुई..”[19]

मंगलेश ने अपनी कविताओं में नयापन ढूँढ़ने की कोशिश की है। ‘अपनी छायाएँ’ कविता में वे कहते हैं –

“उसकी कविताओं में उनकी आवाज़ें हैं

जिनकी कोई आवाज़ नहीं थी

उसकी कविताएँ मचाती रहीं एक महासंघर्ष का कोहराम

सर पर आसमान उठाये हुए वे चलती ही रहीं

अब वह सुन नहीं पाता बाहरी दुनिया की आवाज़

उसकी कविता के लोग थके-हारे आधे रास्ते में गिरे हुए

उसके भीतर पानी की तरह हलचल करते रहते हैं।”[20]

मंगलेश बड़ी बारीकि से संकेतों में और सरल भाषा में लिखते हैं। उनकी कविताओं का स्थायीभाव, उदासी, दुःख है। उनकी कविता अवसाद के परिधि में समानधर्मी सहृदयों को सहज ही ले आती है और सोचने को मजबूर है।

कवि मंगलेश कविता में कथ्य और शिल्प का निरंतर बेहतर संयोजन करते हैं। उन्होंने समकालीन कविता की भाषा को निजी तरीके से समृद्ध किया है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि मंगलेश की भाषा-शैली संगठित और सरल है। सहज कथन के कारण अपनी बातें कहने में पूर्णरूप से माहिर है। मंगलेश की भाषा शैली में पांडित्य प्रदर्शन नहीं है बल्कि हृदय के उद्गार है।

<u>**संदर्भ सूची**</u>

1. मंगलेशडबराल, ‘आवाजभीएकजगहहै’, ‘छुपमछुपाई’ पृ. 11-12
2. मंगलेशडबराल, ‘आवाजभीएकजगहहै’, ‘मंगलग्रह’ पृ. 16-17
3. मंगलेशडबराल, ‘पहाडपरलालटेन’, ‘मकान’ पृ. 41
4. मंगलेशडबराल, ‘आवाजभीएकजगहहै’, ‘श्रेष्टऔरनिराला’ पृ. 32
5. मंगलेश डबराल, ‘आवाज भी एक जगह है’, ‘छुपम छुपाई’ पृ. 11-12
6. मंगलेश डबराल, ‘आवाज़ भी एक जगह है’, ‘लड़की और अंधा आदमी’ पृ. 81
7. मंगलेश डबराल, ‘आवाज़ भी एक जगह है’, ‘लड़की और अंधा आदमी’ पृ. 81
8. मंगलेश डबराल, हम जो देखते हैं’, ‘पुनर्रचनाएँ’ पृ. 88
9. मंगलेशडबराल, ‘आवाज भी एक जगह है’, ‘गुणानंद पथिक’ पृ. 30
10. मंगलेश डबराल, आवाज भी एक जगह है’, ‘मरणोपरांत कवि’ पृ. 35
11. मंगलेश डबराल, ‘आवाज भी एक जगह है’, ‘चुंबन’ पृ. 66
12. मंगलेश डबराल, ‘हम जो देखते हैं’, ‘कालातीत कविता’ पृ. 42
13. मंगलेश डबराल, ‘हम जो देखते हैं’, ‘निराशा की कविता’ पृ. 38
14. मंगलेश डबराल, ‘हम जो देखते हैं’, ‘नींद की कविता पृ. 33
15. मंगलेश डबराल, ‘हम जो देखते हैं’, ‘अत्याचारी के प्रमाण पृ. 82
16. मंगलेश डबराल ‘हम जो देखते हैं’, ‘माँ की तस्वीर’ पृ. 27
17. मंगलेश डबराल, ‘हम जो देखते हैं’, ‘दिल्ली-एक’ पृ. 45
18. मंगलेश डबराल, ‘हम जो देखते हैं’, ‘परिभाषा की कविता’ पृ. 48
19. मंगलेश डबराल, ‘पहाड़ पर लालटेन’, ‘पहाड़ पर लालटेन’ पृ. 65
20. मंगलेश डबराल, ‘आवाज भी एक जगह है’, ‘अपनी छायाएँ’ पृ. 80

उपसंहार

मंगलेश डबराल समकालीन कवियों में से एक प्रमुख साहित्यकार है। मंगलेश संपन्न कवि हैं। उनका कवि व्यक्तित्व ही सर्वाधिक सराहनीय है। मंगलेश कवि, अनुवादक, पत्रकार, गद्य लेखक आदि अनेक रूपों में साहित्य की सेवा की हैं। मंगलेश मार्क्सवाद से प्रभावित कवि हैं। इसलिए उनकी कविता, जनता को शोषण व्यवस्था से लड़ने के लिए उकसाती है।

मंगलेश डबराल के पांच काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'पहाड़ पर लालटेन', 'घर का रास्ता', 'हम जो देखते हैं', 'आवाज़ भी एक जगह हैं' और 'नये युग में शत्रु'। इनका पहला काव्य संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन' में प्रकृति के साथ मानव संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। सामाजिक विषमताओं को गंभीरता से जाना पहचाना है। इसमें मध्यम वर्ग की बेबसी, विवशता, शोषण और राजनीति संबंधी कविताएँ संकलित हैं। दूसरा काव्य संग्रह 'घर का रास्ता' में राजनीति, प्रेम, नारी, तानाशाही, साम्राज्यवादी शक्तियाँ, प्रकृति के प्रति प्रेम एवं मानव संबंध और व्यवस्था के प्रति आक्रोश है। तीसरा काव्य-संग्रह 'हम जो देखते हैं' में नारीवाद, संत्रास, पीड़ा, राजनीति आदि का यथार्थ चित्रण किया गया है। चौथा काव्य संग्रह 'आवाज़ भी एक जगह है' में इनकी कविताएँ संगीत के अनेक नये आयामों को उजागर करती हैं। जैसे संगतकार, गुणानंद पथिक, केशव अनुरागी आदि। इसमें सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त अन्याय, अत्याचार और अन्य विसंगतियों की कटु आलोचना की गयी है। और पांचवां कविता संग्रह 'नये युग में शत्रु' जिसमें ज्यादा आधुनिक काल का जिक्र किया गया है।

मंगलेश डबराल की कविताएँ सामाजिक एवं राजनीतिक स्थित के बारे में विश्लेषण करती हैं। इनकी कविताएँ संगीतकारों की दयनीय परिस्थितियों के बारे में दर्शाती हैं। उनकी कविताएँ वास्तविक जीवन की कविताएँ हैं और वह कविता समाज में एकता लाना, अन्याय, शोषण का खुलकर विरोध करने के लिए प्रेरणा देती है। मंगलेश की कविताओं में जितना सामाजिक चित्रण मिलता है। मंगलेश पूँजीपती समाज का अत्याचार, शोषितों के आर्तनाद का चित्रण ऐसा करते

हैं कि, लगता है वह आवाज हमारे आस-पास ही गूंज रही है। नारी समस्या पर उन्होंने अपनी कलम चलायी है। हमारा समाज पहले से ही नारी का शोषण करते आया है। नारी की पीड़ा, उन पर दबाव, नारी प्रेम के जाल में फँसकर कैसे धोखा खाती है, नारी पर अत्याचार, अन्याय कैसे करते हैं आदि मंगलेश की कविताओं का प्रमुख विषय बन गया है। मंगलेश का राजनीतिक चित्रण भी प्रभावशाली है। वे भ्रष्ट राजनीतिज्ञों का पर्दाफाश करते हैं। मंगलेश राजनीति क्षेत्र में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, दबाव आदि का विरोध करते हैं। वे किसी पार्टी या नेताओं के बारे में न कहकर उनको सलाम मारनेवाले कवियों पर व्यंग्य करते हैं। सिर्फ कुर्सी के लिए लड़ाई करनेवालों पर प्रहार करते हैं।

मंगलेश ने अपनी कविताओं में यथार्थता, प्रेमानुभूति, प्रकृति वर्णन, नारीवाद, आशावाद, मध्यमवर्गीय जिन्दगी का चित्रण, करुणा, दुख, निराशा का चित्रण, संघर्ष, मानवीय तथा पारिवारिक रिश्तों का आत्मीयता से जोड़ना, शहरी जीवन, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, भूमंडलीकरण, भाग्यवाद का विरोध पर्यावरण आदि विशेषताओं को अपनी कविताओं में सामाजिक चेतना के अंतर्गत किया है। राजनीतिक कविताओं में लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रहार, आपात्काल, पूँजीवाद, शासक वर्ग के प्रति आक्रोश, मार्क्सवाद, अन्याय, शोषण, अत्याचार, हिंसा के विरुद्ध आवाज उठाकर समाज प्रति अपना योगदान दिया है। मंगलेश डबराल समकालीन कविता के सशक्त कवि हैं। कुल मिलाकर उनकी सभी कविताएँ बार-बार पढ़ने को मजबूर करती हैं। मंगलेश डबराल और उनके काव्य साहित्य पर कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि, मंगलेश डबराल की कृतियों में मध्यवर्ग की बेबसी, विवशता, जटिलता, अभाव आदि का वर्णन है।

'मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध' के उपसंहार में प्रथम अध्याय से लेकर चर्तुथ अध्याय तक, समकालीन कविता का अर्थ, परिभाषाएँ, परिवेश, मंगलेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, युगबोध का अर्थ, परिभाषाएं, विविध आयाम, मंगलेश के काव्य में युगबोध, भाषा शैली इन विषयों का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

समकालीन कविता, नई कविता के विविध आन्दोलनों में से एक महत्वपूर्ण काव्य आन्दोलन है। लेकिन आज साठ के बाद जो काव्य विकसित हुआ उसके लिए यह नाम दिया गया है। समकालीन कविता क्रांति की आवाज़ को बुलंद करती है।

प्रथमतः अध्याय में समकालीन कविता और मंगलेश डबराल के बारे में बात की है।समकालीन कविता का अर्थ, परिभाषाएँ, परिवेश पर संक्षेप में प्रकाश डाला उसके बाद समकालीन परिवेश पर विवेचन किया है और अंत में मंगलेश डबराल के काव्य में समकालीनता पर जोर दिया है। द्वितीय अध्याय में युगबोध पर ध्यान खींचा है। इस अध्याय में युगबोध का अर्थ एवं परिभाषा को समझा है और उसे के साथ युगबोध के विविध आयामों को जानने का प्रयास किया है, जिसके अंतर्गत सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक युगबोध दिखाई देता है। तृतीय अध्याय अध्याय में मंगलेश डबराल के काव्य में युगबोध पर बात की गई है, जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, सामाजिक युगबोध पर विवेचन किया है। चौथा अध्याय भाषा शैली है। मंगलेश की भाषा शैली सहज सुन्दर है। वे बिम्ब योजना, प्रतीक योजना, गद्यात्मक शैली, छन्दमुक्त प्रयोग करते हैं। उन्होंने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया है। उन्होंने छोटी-छोटी कविताओं के साथ-साथ लम्बी कविताएँ भी लिखी हैं। कवि कुछ न कहते हुए भी उनकी कविताएँ बहुत कुछ कहती हैं।

अंत में कहना उचित समझती हूँ कि, मंगलेश डबराल ने अपने कविताओं के माध्यम से लोगों को जागृत करने का प्रयास किया हैं।

संदर्भ सूची

आधर ग्रंथ

1. डबराल मंगलेश, पहाड़ पर लालटेन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981
2. डबराल मंगलेश, घर का रास्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1088
3. डबराल मंगलेश, हम जो देखते हैं, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995
4. डबराल मंगलेश, आवाज़ भी एक जगह है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
5. डबराल मंगलेश, नये युग में शत्रु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013

सहायक ग्रंथ

1. डॉ. राजपूत श्रीमती विघावती, मंगलेश डबराल: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, अभय प्रकाशन, कानपुर, 2011
2. कामिल इरशाद, समकालीन हिंदी कविता समय और समाज, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2011
3. डॉ. सिंह गुरुचरण, समकालीन हिंदी कविता कोश, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2015
4. डॉ. उमाटे साईनाथ, समकालीन हिंदी कविता का समाजशास्त्र, ए. बी. एस. पब्लिकेशन, वाराणसी, 2016
5. चतुर्वेदी रामस्वरूप, हिंदी काव्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018
6. वर्मा हरिश्चंद्र, तुलसी साहित्य में शारीर विज्ञान और मनोविज्ञान, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2005
7. सिंह, डॉ. रणधीर, कवि बिहारी लाल और उनका युग, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2011
8. दिनकर, रामधारी सिंह, साहित्य मुखी, उदयांचल प्रकाशन, दिल्ली, 1968
9. प्रसाद, कालिका(सं.), बृहत हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमीटेड,बनारस, 2001

10. बाहरी, डॉ. हरदेव, लोकभारती राजभाषा शब्दकोश (हिंदी-अंग्रजी), लोकभारती प्रकाशन

11. अमिताभ, डॉ. वेदप्रकाश, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, 2000

12. सिंह, डॉ. गुरुचरण, समकालिन कविता का सच, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2016

13. श्रीवास्तव, परमानंद, समकालीन कविता नये प्रश्न, वाणी प्रकाशन, 2014

14. सिंह, मंजुलता, हिंदी कहानी में युगबोध, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1994

15. डॉ. पी. ए. रघुराम, समकालिन हिंदी कविता और अस्मिता,जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2012

16. उपाध्याय, डॉ. पशुपतिनाथ, समकालीन हिंदी कविता दशाऔर दिशा,जवाहर पुस्तकालय,मथुरा, 2013

पत्रिका

1. र्विभूतिनारायण राय, कुंवर पाल सिंह, वर्तमान साहित्य, अलीगढ़, फरवरी 2008